तीसरा भाग

(१)

सेर्गेई इवानोविच कोज़्निशेव ने दिमाग़ी काम से आराम पाना चाहा और विदेश जाने के बजाय, जैसा कि वह आम तौर पर करता था, मई के अन्त में भाई के पास गांव आ गया। उसे विश्वास था कि गांव का जीवन ही सबसे अच्छा जीवन था। वह अब इसी जीवन का आनन्द लेने के लिये भाई के पास आया। कोन्स्तान्तीन लेविन को बहुत ख़ुशी हुई, ख़ास तौर पर इसलिये कि इस गर्मी में उसे अपने भाई निकोलाई के आने की कोई उम्मीद नहीं थी। किन्तु कोज़्निशेव के प्रति अपने सारे प्यार और आदर के बावजूद लेविन को गांव में अपने भाई के साथ परेशानी महसूस होती थी। गांव के प्रति भाई के रवैये से उसे परेशानी ही नहीं होती थी, बुरा भी लगता था। लेविन के लिये गांव जीवन-स्थल था अर्थात सुख-दुख और श्रम का स्थल ; कोज़्निशेव के लिये गांव एक ओर तो विश्राम का स्थान और दूसरी ओर नगर के बुरे प्रभाव की अच्छी दवा था, जिसका वह बड़ी ख़ुशी से तथा उसके उपयोगी होने की चेतना के साथ सेवन करता था। लेविन के लिये गांव इसलिये अच्छा था कि वह निश्चय ही उपयोगी श्रम की कर्म भूमि था ; कोज़्निशेव के लिये गांव इसलिये ख़ास तौर पर अच्छा था कि वहां आदमी कुछ भी न करे और उसे करना भी नहीं चाहिये। इसके अलावा किसानों के प्रति कोज़्निशेव का रवैया लेविन को अच्छा नहीं लगता था। कोज़्निशेव कहता कि वह आम जनता को प्यार करता है और उसे

जानता-समझता है। वह अक्सर किसानों से बातचीत करता, जो वह किसी तरह की बनावट और अपने बड़प्पन के बिना अच्छे ढंग से कर पाता था, और अपनी हर ऐसी बातचीत से किसानों के पक्ष में तथा इस बात के प्रमाण के रूप में सामान्य निष्कर्ष निकालता कि वह जनता को जानता-समझता है। लेविन को किसानों के प्रति यह रवैया पसन्द नहीं था। उसके लिये किसान सामान्य श्रम का एक मुख्य सहभागी तत्त्व था, और किसानों के प्रति अपने सारे आदर-भाव तथा प्रेम के बावजूद, जो, जैसा कि वह ख़ुद कहता था, उसे सम्भवतः किसान आया के दूध के साथ मिला था, वह साझे कार्य में भाग लेनेवाले के रूप में कभी-कभी तो इन लोगों की शक्ति, विनम्रता तथा न्याय-प्रियता पर मुग्ध हो उठता और बहुत अक्सर, जब साझे काम में दूसरे गुणों की आवश्यकता होती, इन किसानों की लापरवाही, गन्दगी, पियक्कड़पन और झूठ से झल्लाहट महसूस करता। लेविन से अगर यह पूछा जाता कि वह आम जनता को प्यार करता है या नहीं, तो निश्चय ही वह यह न तय कर पाता कि इसका क्या जवाब दे। वह किसानों को उसी तरह प्यार भी करता था और नहीं भी करता था, जैसे आम तौर पर सभी लोगों को। ज़ाहिर है कि एक दयालु व्यक्ति के रूप में वह लोगों को प्यार न करने के बजाय अधिक प्यार ही करता था और इसलिये किसानों पर भी यही बात लागू होती थी। विशेष ढंग से किसानों को प्यार करना या न करना उसके लिये सम्भव नहीं था, क्योंकि वह न केवल किसानों के साथ रहा था, न केवल उसके सारे हित उनके साथ संबद्ध थे, बल्कि अपने को आम जनता का अंग भी मानता था, ख़ुद में तथा किसानों में कोई विशेष गुण-अवगुण नहीं देखता था और अपने को उनसे किसी तरह भिन्न नहीं प्रकट कर सकता था। इसके अलावा, बेशक बहुत समय तक मालिक, मध्यस्थ और विशेषतः सलाहकार के रूप में (किसान उस पर विश्वास करते थे और साठ किलोमीटर तक की दूरी से सलाह लेने के लिये उसके पास आते थे) बहुत अर्से से किसानों के साथ उसके बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहे थे, फिर भी किसानों के बारे में उसका कोई निश्चित मत नहीं था। इसलिये इस सवाल का जवाब देना कि वह किसानों को जानता-समझता है या नहीं वैसे ही मुश्किल होता है, जैसे इस सवाल का कि

वह उन्हें प्यार करता है या नहीं। उसके लिये यह कहना कि किसानों को जानता-समझता है वैसा ही होता, जैसे यह कहना कि वह आम तौर पर लोगों को जानता-समझता है। वह सभी तरह के लोगों का, जिनमें किसान भी शामिल थे, जिन्हें वह अच्छे तथा दिलचस्प लोग मानता था, निरन्तर निरीक्षण करता, लगातार उनमें नये लक्षण देखता और उनके बारे में अपनी पहली राय बदलकर नयी राय बनाता। कोज़्निशेव इसके उलट था। जैसे उस जीवन की तुलना में, जिसे प्यार नहीं करता था, वह गांव के जीवन को प्यार और उसकी प्रशंसा करता था, वैसे ही उस वर्ग की तुलना में, जो उसे अच्छा नहीं लगता था, किसानों को चाहता था और इसी भांति आम तौर पर लोगों के प्रतिकूल के रूप में किसानों को जानता-समझता था। उसके सुव्यवस्थित मस्तिष्क में किसान-जीवन के निश्चित रंग-ढंग स्पष्ट थे। उनमें से कुछ किसान-जीवन से लिये गये थे, मगर अधिकांश प्रतिकूलता के आधार पर कल्पित थे। किसानों के बारे में अपनी राय और हमदर्दी के रवैये में वह कभी तब्दीली नहीं करता था।

किसानों के विवेचन को लेकर दोनों भाइयों में जो वाद-विवाद हो जाता था, उसमें कोज़्निशेव की इसलिये हमेशा जीत होती थी कि किसानों के चरित्र, गुणों और रुचियों के बारे में उसके कुछ निश्चित विचार थे, जबकि लेविन के ऐसे निश्चित तथा अपरिवर्तनीय विचार नहीं थे और इसलिये वह हमेशा ख़ुद अपनी ही बात का खण्डन करने का दोषी ठहराया जा सकता था।

कोज़्निशेव के लिये उसका छोटा भाई एक भला आदमी था, जिसका दिल "ठीक जगह पर है," जैसा कि वह फ़्रांसीसी में कहता था, मगर तेज़ होते हुए भी जिसका मस्तिष्क क्षणिक प्रभावों के अधीन रहता था और इसलिये असंगतियों से भरपूर था। बड़े भाई के अनुरूप कृपाभाव दिखाते हुए वह कभी-कभी उसे कुछ बातों का मतलब स्पष्ट करता, मगर उसे उसके साथ बहस करने में ज़रा भी मज़ा न आता, क्योंकि बड़ी आसानी से उसे चित कर देता था।

लेविन अपने भाई को बहुत ही बुद्धिमान और ज्ञानवान, उच्चतम अर्थ में उदात्त व्यक्ति मानता था, जो लोगों की आम भलाई करने की क्षमता से सम्पन्न था। किन्तु ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया और अपने

भाई को अधिक निकटता से जानता-समझता गया, त्यों-त्यों अपनी आत्मा की गहराई में उसे अधिकाधिक अक्सर यह महसूस होने लगा कि लोगों की आम भलाई करने की यह क्षमता, जिससे वह अपने को पूरी तरह वंचित अनुभव करता, शायद गुण नहीं, बल्कि इसके विपरीत किसी चीज़ की कमी है – नेकी, ईमानदरी और सद्भावनापूर्ण इच्छाओं तथा रुचियों की कमी नहीं, बल्कि जीवन-शक्ति की कमी, उस चीज़ की कमी है, जिसे दिल कहते हैं, उस उत्प्रेरणा की कमी है, जो आदमी को उसके सामने प्रस्तुत अनेक जीवन-पथों में से एक को चुनने और उसी को चाहने के लिये विवश करती है। अपने भाई को वह जितना अधिक जानता गया उतना अधिक ही उसने इस बात को लक्षित किया कि कोज़्निशेव तथा आम भलाई का काम करनेवाले दूसरे बहुत-से कार्यकर्त्ता भी इस सर्वकल्याण के प्यार की ओर दिल से नहीं खिंचे थे, बल्कि दिमाग़ी तर्क-वितर्क से ऐसा करना अच्छा समझते थे और केवल इसीलिये ऐसा करते थे। इस बात के अवलोकन से लेविन के इस अनुमान की और अधिक पुष्टि हो गयी कि उसका भाई सर्वकल्याण तथा आत्मा की अमरता के प्रश्न को शतरंज की एक बाज़ी या किसी नई मशीन की बहुत समझदारी की बनावट से अधिक महत्त्व नहीं देता है।

इसके अलावा, लेविन को भाई के साथ गांव में इस कारण भी परेशानी होती कि वह तो ख़ास तौर पर गर्मियों में लगातार खेतीबारी के कामों में व्यस्त रहता और गर्मी के लम्बे दिन में भी उन सब कामों को न निपटा पाता, जो उसे करने होते थे, जबकि कोज़्निशेव आराम करता। बेशक यों तो वह अब आराम कर रहा था यानी अपने रचना-कार्य में व्यस्त नहीं था, फिर भी वह दिमाग़ी काम का ऐसा आदी हो चुका था कि दिमाग़ में आनेवाले विचारों को सुन्दर तथा नपे-तुले रूप में प्रस्तुत करना पसन्द करता था और चाहता था कि कोई उसकी बातें सुने। भाई ही उसका बहुत सामान्य और स्वाभाविक श्रोता था। इसलिये इनके सम्बन्धों की मैत्रीपूर्ण सरलता के बावजूद लेविन को उसे अकेले छोड़ना अटपटा-सा लगता। कोज़्निशेव को धूप में घास पर लेटना और धूप सेंकते हुए मज़े-मज़े बातें करना पसन्द था।

"तुम यक़ीन नहीं करोगे," वह भाई से कहता, "यह देहाती

काहिली मेरे लिये कितना बड़ा आनन्द है। एक भी तो विचार नहीं है दिमाग़ में, बिल्कुल ख़ाली है वह।"

किन्तु लेविन को बैठे-बैठे उसकी बातें सुनने से ऊब महसूस होती थी। ख़ास तौर पर इसलिये कि वह जानता था कि उसके बिना अनजुते खेतों में गोबर ले जाया जा रहा है और अगर वह निगरानी नहीं करेगा, तो लोग उसके बेहूदा ढंग से ढेर लगा देंगे, हलों के फालों के पेच नहीं कसेंगे, बल्कि फालों को निकाल देंगे और फिर कहेंगे कि ये लोहे के हल बेकार की चीज़ हैं और लकड़ी के पुराने हल ही बेहतर हैं, आदि।

"बस, काफ़ी दौड़ लिये धूप में," कोज़्निशेव उससे कहता।

"नहीं, मुझे एक मिनट के लिये अपने दफ़्तर तक जाना है," लेविन जवाब देता और खेतों में भाग जाता।

(२)

जून के पहले दिनों में ऐसा हुआ कि आया और गृह-प्रबन्धिका अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना एक मर्तबान, जिसमें उसने खुमियों का अचार डाला था, नीचे तहख़ाने में ले जाते हुए फिसलकर गिर गयी और उसकी कलाई में मोच आ गयी। कुछ ही समय पहले पढ़ाई समाप्त करनेवाला एक जवान और बातूनी डाक्टर ज़िला-केन्द्र से गांव आया। उसने हाथ की जांच की, यह कहा कि उसमें मोच नहीं आई है, उसे गर्मी पहुंचाने के लिये कम्प्रेस बांध दिया और दोपहर का खाना खाने के लिये रुक गया। स्पष्टतः जाने-माने कोज़्निशेव से बातचीत करके उसे बड़ी ख़ुशी हासिल हो रही थी। चीज़ों के बारे में अपना प्रबुद्ध दृष्टिकोण ज़ाहिर करने के लिये उसने ज़ेम्स्त्वो-परिषद के कामों के बारे में शिकवा-शिकायत करते हुए ज़िले भर की अफ़वाहें उसे सुना दीं। कोज़्निशेव ने सब कुछ बहुत ध्यान से सुना, पूछ-ताछ की, नया श्रोता पाकर जोश में आ गया, ख़ूब बोलता गया और उसने कुछ ऐसी वज़नी तथा निशाने पर पड़नेवाली बातें कहीं, जिनका युवा डाक्टर ने आदरपूर्वक ऊंचा मूल्यांकन किया और इससे कोज़्निशेव में ऐसी ज़िन्दादिली आ गयी, जो बढ़िया और सजीव बातचीत के बाद उसमें आती थी और जिससे लेविन अच्छी तरह परिचित था। डाक्टर के जाने के बाद कोज़्निशेव ने

मछलियां पकड़ने के लिये नदी पर जाने की इच्छा प्रकट की। मछली मारना उसे पसन्द था और वह मानो इस बात पर गर्व करता था कि उसे ऐसे मूर्खतापूर्ण काम की भी इच्छा हो सकती है।

लेविन ने, जिसे खेतों और चरागाह में जाना था, उससे कहा कि वह घोड़ा-गाड़ी में उसे वहां छोड़ देगा।

यह गर्मी का वह समय था, जब उस साल की फ़सल निर्धारित हो चुकती है, जब अगले साल की बुवाई की चिन्तायें शुरू हो जाती हैं और घास की कटाई का वक़्त नज़दीक होता है, जब रई की भूरी-हरी तथा हल्की-फुल्की बालें, जो अभी दानों से नहीं भरी होतीं, हवा में लहराती हैं, जब जई की हरी फ़सलें, जिनके बीच में कहीं-कहीं पीली घास के झुण्ड भी होते हैं, देर से बोये गये खेतों में टेढ़ी-मेढ़ी खड़ी होती हैं, जब कोटू की प्रारम्भिक फ़सलें फैलकर ज़मीन को ढक देती हैं, जब पशुओं के पैरों से रौंदी गयी ख़ाली छोड़ी गयी और पत्थर जैसी सख़्त हो जानेवाली ज़मीन आधी जोती जा चुकी होती है और बड़े-बड़े टुकड़े हल के स्पर्श से अछूते ही रह जाते हैं, जब शामों को खेतों से गोबर के सूखे ढेरों की गन्ध के साथ घासों की मधुर गन्ध आती है, जब हंसिये की राह देखते हुए चरागाह, जिनके बीच जहां-तहां उखाड़े गये डंठलों के काले ढेर दिखाई देते हैं, एक चौड़े सागर की तरह फैले रहते हैं।

यह वह समय था, जब हर साल दोहराये जाने और सभी लोगों की पूरी शक्ति की अपेक्षा करनेवाली फ़सल कटाई से पहले संक्षिप्त विराम होता है। फ़सल बहुत बढ़िया थी और उजले, गर्म दिनों तथा ओसभीगी छोटी रातों का वक़्त था।

जंगल पार करके ही दोनों भाई चरागाहों तक पहुंच सकते थे। कोज़्निशेव अत्यधिक हरियालीवाले वन के सौन्दर्य को लगातार मुग्ध होकर देख रहा था। कभी वह अपने भाई को लाइम का वह पुराना वृक्ष दिखाता, जो छायावाले पक्ष से काला-सा लगता था, पीली पत्तियों के कारण चटकीला-सा था और पुष्पित होनेवाला था, तो कभी इस वर्ष के नौउम्र वृक्षों की मरकती हरी पत्तियों की ओर इशारा करता। लेविन को प्रकृति के सौन्दर्य के बारे में कुछ कहना और सुनना पसन्द नहीं था। उसके लिये शब्द तो मानो उस चीज़ का सौन्दर्य हर लेते थे,

जिसे वह देखता होता था। वह भाई की हां में हां मिलाता जा रहा था, किन्तु अनचाहे ही किसी दूसरी बात के बारे में सोचने लगा था। जब वे जंगल से बाहर आ गये, तो टीले की एक ढालू और बिना बोयी भूमि पर उसका पूरा ध्यान केन्द्रित हो गया, जो कहीं तो पीली घास से ढकी थी, जिस पर कहीं हल-रेखाओं के चौख़ाने बने थे, कहीं खाद के ढेर लगे थे और जो कहीं-कहीं पर जुती हुई भी थी। घोड़ा-गाड़ियों की एक पांत मैदान में से जा रही थी। लेविन ने उन्हें गिना और उसे इस बात की ख़ुशी हुई कि जो कुछ ज़रूरी है, सब लाया जा रहा है और चरागाहों को देखकर वह घास काटने के बारे में सोचने लगा। घास की कटाई की बात सोचकर वह हमेशा ही विशेष रूप से उत्तेजित हो उठता था। चरागाह के पास पहुंचकर लेविन ने घोड़ा रोक दिया।

घास की घनी जड़ों के पास सुबह की शबनम अभी सूखी नहीं थी। कोज़्निशेव ने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि उसके पांव भीग न जायें, भाई से यह अनुरोध किया कि घोड़ा-गाड़ी में ही उसे चरागाह के पार बेंत के उस झुरमुट तक पहुंचा दे, जहां पेर्च मछलियां पकड़ी जा सकती थीं। अपनी घास को रौंदते हुए लेविन को चाहे कितना ही दुख क्यों नहीं हो रहा था, फिर भी वह घोड़ा-गाड़ी को चरागाह में से ले चला। ऊंची-ऊंची घास धीरे-से गाड़ी के पहियों तथा घोड़े की टांगों के गिर्द लिपट जाती थी और पहियों की गीली घिरनियों तथा स्पोको पर अपने बीज छोड़ देती थी।

भाई झाड़ी के नीचे बैठकर अपनी बंसी ठीक करने लगा, लेविन ने घोड़े को ले जाकर बांधा तथा शान्त चरागाह के भूरे-हरे विराट सागर में, जिसे हवा हिला-डुला नहीं रही थी, प्रवेश किया। पानी से ख़ूब तर चरागाह में पके बीजों वाली रेशम जैसी घास लगभग उसकी कमर को छू रही थी।

चरागाह को लांघकर लेविन रास्ते पर पहुंच गया, जहां शहद की मक्खियों की पेटिका लिये हुए सूजी आंख वाले एक बूढ़े से उसकी मुलाक़ात हुई।

"क्यों फ़ोमिच? मधु-मक्खियों का नया झुण्ड हाथ लग गया क्या?" लेविन ने पूछा।

"कैसा नया झुण्ड, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच! पुराने सम्भाले रहूं, यही बहुत है। दूसरी बार झुण्ड निकल भागा... भला हो आपके

उन खेत जोतनेवाले नौजवानों का। उन्होंने एक घोड़ा जोत से निकाला और इनका पीछा किया ..."

"तो क्या ख़्याल है फ़ोमिच, घास की कटाई शुरू की जाये या इन्तज़ार करें?"

"क्या कहा जाये, हुजूर! हम लोग तो सन्त पीटर के दिन तक बाट देखा करें। परन आप तो हमेसा कुछ पहले ही कटाई शुरू कर देते हैं। कोई बुराई नहीं, घास बहुत अच्छी है। ढोर-डंगरों के लिये कुछ कमी नहीं पड़ेगी।"

"मौसम के बारे में क्या ख़्याल है?"

"यह तो भगवान जाने। सायत अच्छा ही रहे।"

लेविन अपने भाई के पास वापस आया। मछली तो उसने एक भी नहीं पकड़ी थी, फिर भी कोज़्निशेव ऊब अनुभव नहीं कर रहा था, बड़े रंग में था। लेविन ने देखा कि डाक्टर के साथ हुई बातचीत के फलस्वरूप जोश में आया हुआ उसका भाई बात करने को उत्सुक है। इसके विपरीत, लेविन जल्दी से घर जाना चाहता था, ताकि अगले दिन घास काटनेवालों को बुलवाकर घास की कटाई के बारे में, जो उसके मन पर बोझ बनी हुई थी, अपने इरादे को पक्का कर ले।

"तो चलें," लेविन ने कहा।

"ऐसी क्या जल्दी है? कुछ देर बैठेंगे। लेकिन तुम कितने ज़्यादा भीग गये हो! बेशक मछली तो नहीं फंसी, फिर भी यहां बड़ा मज़ा है। हर तरह का शिकार इसीलिये अच्छा है कि आदमी प्रकृति के बीच रहता है। यह इस्पाती रंग का पानी कितना सुन्दर है!" उसने कहा। "ये चरागाहोंवाले तट मुझे हमेशा वह पहेली याद दिलाते हैं – जानते हो कौन-सी? घास पानी से कहती है – हम डोलती हैं, हम डोलती हैं।"

"मैं यह पहेली नहीं जानता," लेविन ने उदासी से जवाब दिया।

(३)

"सुनो, मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था," कोज़्निशेव ने कहा। "तुम्हारे ज़िले के बारे में मुझे इस डाक्टर ने जो कुछ बताया, और वह कुछ बेवक़ूफ नौजवान नहीं है, वह सब बहुत ही बेहूदा है। मैं तुमसे

कह चुका हूं और फिर कहता हूं – यह अच्छी बात नहीं कि तुम ज़ेम्सत्वो-परिषद की सभाओं में नहीं जाते और उसके काम से तुमने बिल्कुल कन्नी ही काट ली। अगर भले लोग उससे नाता तोड़ लेंगे, तो ज़ाहिर है, भगवान ही जानता है कि वहां क्या हालत होगी। पैसे हम लोग देते हैं और वे सब वेतनों में जाते हैं, लेकिन न तो स्कूल हैं, न डाक्टर, न दाइयां और न दवाख़ाने, कुछ भी तो नहीं।"

"लेकिन मैं कोशिश करके देख चुका हूं," लेविन ने मन मारकर धीमे से उत्तर दिया। "नहीं कर सकता! क्या किया जाये!"

"क्या नहीं कर सकते? सच, यह मेरी समझ में नहीं आता। उदासीनता और असमर्थता नहीं हो सकती, तो क्या यह सिर्फ़ काहिली है?"

"इन तीनों में से कोई भी चीज़ नहीं। मैंने कोशिश की और इस नतीजे पर पहुंचा कि कुछ भी नहीं कर सकता," लेविन ने कहा।

बड़ा भाई जो कुछ कह रहा था, उसकी तरफ़ वह बहुत कम ध्यान दे रहा था। नदी पार जोती जा रही ज़मीन को देखते हुए उसे कोई काली चीज़ नज़र आई, लेकिन वह यह तय नहीं कर पाया कि वह घोड़ा है या घोड़े पर सवार कारिन्दा है।

"किसलिये तुम कुछ नहीं कर सकते? तुमने कोशिश की, तुम्हारे मुताबिक़ वह नाकाम रही और तुमने घुटने टेक दिये। कुछ आत्मसम्मान तो होना चाहिये या नहीं?"

"आत्मसम्मान," भाई के शब्दों से घायल होते हुए लेविन ने कहा। "मैं यह बात समझने में असमर्थ हूं। अगर विश्वविद्यालय में मुझसे यह कहा जाता कि दूसरे समाकलन गणित समझते हैं, मगर मैं नहीं समझता – तब आत्मसम्मान की बात हो सकती थी। लेकिन इस सिलसिले में तो आदमी को पहले यह यक़ीन होना चाहिये कि उसमें ऐसे काम करने की योग्यता है तथा मुख्यतः तो यह कि यह काम बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"तो तुम क्या सोचते हो कि यह महत्त्वपूर्ण नहीं है?" कोज़्निशेव ने पूछा। वह इस बात से बुरी तरह तड़प उठा था कि जिस चीज़ में उसे इतनी गहरी दिलचस्पी थी, भाई उसे महत्त्वपूर्ण ही नहीं समझता था। उसे ख़ास तौर पर तो यह बुरा लगा था कि वह स्पष्टतः उसकी बात लगभग सुन ही नहीं रहा था।

"मुझे यह महत्त्वपूर्ण नहीं लगता, मुझमें दिलचस्पी पैदा नहीं

करता, तो तुम बताओ मैं क्या करूं?" लेविन ने यह पहचान लेने पर जवाब दिया कि उसने जिसे देखा था, वह कारिन्दा ही है और उसने सम्भवतः किसानों को जुताई से छुट्टी दे दी है। वे हलों को उलट रहे थे। "क्या सचमुच उन्होंने जुताई ख़त्म कर दी?" वह सोच रहा था।

"लेकिन सुनो," बड़े भाई ने अपने सुन्दर चेहरे पर बल डालकर कहा, "हर चीज़ की कोई हद होती है। सनकी और निश्छल व्यक्ति होना और झूठ-बनावट को नापसन्द करना बहुत अच्छी बात है – मैं यह सब जानता हूं। किन्तु तुम जो कुछ कह रहे हो, उसका या तो कोई अर्थ नहीं है या बहुत बुरा अर्थ है। कैसे तुम्हें यह महत्त्वपूर्ण नहीं प्रतीत होता कि वह जनता, जिसे, जैसा कि तुम विश्वास दिलाते हो, प्यार करते हो..."

"मैंने कभी ऐसा विश्वास नहीं दिलाया," लेविन सोच रहा था।

"...सहायता के बिना मरती है? जाहिल देहाती दाइयां बच्चों को मौत के मुंह में धकेलती हैं और जनता उजड्ड है तथा मुंशियों के बस में है। तुम्हें इनकी मदद करने के साधन दिये गये हैं और तुम ऐसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे ख़्याल में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है।"

कोज़्निशेव ने छोटे भाई को इस दुविधा में डाल दिया – "या तो दिमाग़ी तौर पर अभी तुम्हारा इतना विकास नहीं हुआ कि जो कुछ तुम्हारे लिये करना सम्भव है, तुम उसे समझ नहीं सकते या फिर अपने चैन अथवा घमण्ड या किसी अन्य चीज़ को ऐसा करने के लिये क़ुर्बान नहीं करना चाहते।"

लेविन ने महसूस किया कि उसे या तो भाई के सामने झुकना होगा या सर्वहित के कार्य के प्रति अपने प्यार की कमी को स्वीकार करना होगा। इससे उसका अपमान होता था और उसे ठेस लगती थी।

"दोनों चीज़ें ही," उसने दृढ़ता से कहा। "मैं ऐसा नहीं समझता हूं कि यह करना सम्भव है..."

"क्या मतलब? ढंग से धन का विभाजन करके डाक्टरी मदद देना असम्भव है?"

"मुझे ऐसा लगता है कि यह सम्भव नहीं... हमारे ज़िले के छः हज़ार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, बर्फ़ पिघलने पर हमारे जैसे गन्दे रास्तों, बर्फ़ के तूफ़ानों और कभी-कभी काम के तनाव को ध्यान में रखते हुए मुझे ऐसा नहीं लगता कि हर जगह पर डाक्टरी मदद की व्यवस्था

करना सम्भव है। इसके अलावा डाक्टरी में मेरा विश्वास भी नहीं है।"

"लेकिन यह तो न्यायसंगत बात नहीं है... मैं तुम्हारे सामने हज़ारों मिसालें पेश कर सकता हूं... और स्कूल?"

"उनकी क्या ज़रूरत है?"

"यह तुम क्या कह रहे हो? शिक्षा के लाभ के बारे में भी क्या कोई सन्देह हो सकता है? पढ़ाई अगर तुम्हारे लिये अच्छी है, तो सभी के लिये अच्छी है।"

लेविन ने नैतिक रूप से अपने को पूरी तरह पराजित अनुभव किया, इसलिये गुस्से में आ गया और न चाहते हुए भी उसने सर्वहित के काम में अपनी उदासीनता का मुख्य कारण कह दिया।

"मुमकिन है कि यह सब अच्छा हो, लेकिन मुझे डाक्टरी मदद के उन केन्द्रों की स्थापना की चिन्ता करने की क्या ज़रूरत है, जिनका मैं कभी उपयोग नहीं करूंगा? ऐसे स्कूलों की स्थापना भी, जहां मैं अपने बच्चे कभी नहीं भेजूंगा, जहां किसान भी अपने बच्चे नहीं भेजना चाहते और जिनके बारे में अभी मुझे यह पूरा यक़ीन भी नहीं है कि उन्हें वहां भेजना चाहिये?" लेविन ने कहा।

सर्वहित के प्रति ऐसे रवैये से कोज़्निशेव को क्षणिक आश्चर्य हुआ, मगर उसने उसी समय हमले की नयी योजना बनायी।

वह ख़ामोश रहा, उसने एक बंसी निकाली, उसे फिर से पानी में डाला और मुस्कराते हुए भाई को सम्बोधित किया।

"लेकिन सुनो... सबसे पहली बात तो यह है कि चिकित्सा-केन्द्र ज़रूरी साबित हुआ। आख़िर तो हमें अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के लिये ज़िला-केन्द्र से डाक्टर बुलवाना पड़ा है।"

"पर मैं सोचता हूं कि हाथ टेढ़ा ही रहेगा।"

"यह तो बाद में देखा जायेगा... फिर पढ़ा-लिखा किसान अधिक अच्छा काम करता है, अधिक महत्त्व रखता है।"

"नहीं, तुम किसी से भी पूछ सकते हो," लेविन ने दृढ़ता से कहा, "पढ़ा-लिखा किसान काम के लिहाज़ से कहीं बुरा होता है। रास्तों-सड़कों की मरम्मत मुमकिन नहीं और पुल भी ज्यों ही बनाये जाते हैं, चुरा लिये जाते हैं।"

"फिर भी," कोज़्निशेव ने नाक-भौंह सिकोड़ कर कहना शुरू

किया। उसे अपनी बात काटनेवाले और ख़ास तौर पर ऐसे लोग पसन्द नहीं थे, जो लगातार एक बात से दूसरी बात पर छलांग मारते हुए किसी तरह के सम्बन्ध के बिना नये-नये तर्क पेश करते हों और इस तरह यह तय करना असम्भव बना देते हैं कि किस चीज़ का जवाब दिया जाये। "वैसे तो मामला यह नहीं है। सुनो, इतना बताओ कि तुम शिक्षा को जनता के लिये वरदान मानते हो या नहीं?"

"मानता हूं," लेविन के मुंह से अनजाने ही निकल गया और उसी क्षण उसने महसूस किया कि वह कह दिया है, जो सोचता नहीं है। उसने अनुभव किया कि उसके ऐसा मान लेने पर अब यह सिद्ध किया जायेगा कि वह ऐसी बेकार की बातें कह रहा है, जिनका कोई मतलब नहीं है। कैसे यह सिद्ध किया जायेगा, यह वह नहीं जानता था, मगर इतना जानता था कि निश्चय ही तर्कसंगत रूप से ऐसा हो प्रमाणित किया जायेगा और वह ऐसे प्रमाण की प्रतीक्षा कर रहा था।

लेविन ने जैसी आशा की थी, तर्क उससे कहीं साधारण रहा।

"अगर तुम इसे वरदान मानते हो," कोज़्निशेव ने कहा, "तो यह नहीं हो सकता कि एक ईमानदार आदमी के नाते तुम ऐसे काम के प्रति प्यार और सहानुभूति अनुभव न करो, उसके लिये काम न करो।"

"लेकिन मैं इस काम को अभी अच्छा नहीं मानता हूं," लेविन ने लाल होते हुए कहा।

"क्या मतलब? तुमने अभी तो कहा था..."

"मेरा मतलब यह था कि मैं इसे न तो अच्छा और न सम्भव ही मानता हूं।"

"कोशिश किये बिना तुम यह नहीं जान सकते।"

"चलो, मान लेते हैं," लेविन ने कहा, यद्यपि वह ऐसा कुछ भी मान नहीं रहा था, "चलो मान लेते हैं कि यह ऐसा ही है। फिर भी मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं इसकी चिन्ता क्यों करूं।"

"क्या मतलब?"

"देखो, अगर हम इस मसले पर बात कर रहे हैं, तो तुम मुझे दार्शनिक दृष्टि से यह स्पष्ट करो," लेविन ने कहा।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि दर्शनशास्त्र का इससे क्या सम्बन्ध है," कोज़्निशेव ने, जैसा कि लेविन को लगा, ऐसे अन्दाज़ में कहा

मानो वह दर्शनशास्त्र की विवेचना के भाई के अधिकार को मान्यता देने को तैयार नहीं है। लेविन को इससे झल्लाहट हुई।

"मैं बताता हूं क्या सम्बन्ध है!" लेविन ने भड़कते हुए कहा। "मेरे ख़्याल में तो व्यक्तिगत सुख-सौभाग्य ही हमारी सब कार्रवाइयों की प्रेरक-शक्ति है। एक कुलीन के रूप में मुझे इन ज़ेम्सत्वो-संस्थाओं में कुछ भी ऐसा नज़र नहीं आता, जिससे मेरी ख़ुशहाली बढ़ सके। सड़कें बेहतर नहीं हुईं और हो भी नहीं सकतीं, मेरे घोड़े मुझे बुरी पर भी खींच ले जाते हैं। डाक्टर और चिकित्सा-केन्द्र की मुझे ज़रूरत नहीं, न्यायाधीश भी मुझे नहीं चाहिये – मैं कभी उसके पास नहीं गया और नहीं जाऊंगा। स्कूलों की मुझे न सिर्फ़ कोई आवश्यकता ही नहीं, बल्कि जैसा कि मैं तुमसे कह चुका हूं, वे हानिकारक भी होंगे। मेरे लिये ज़ेम्सत्वो-संस्थाओं का मतलब है एक हेक्टर ज़मीन के पीछे अठारह कोपेक देना, शहर जाना, खटमलों वाले बिस्तर पर सोना और सभी तरह की बकवास तथा बेसिर-पैर की बातें सुनना। किन्तु मेरा निजी हित मुझे इसके लिये प्रेरित नहीं करता।"

"सुनो तो," कोज़्निशेव ने मुस्कराते हुए उसे टोका, "निजी हित ने हमें किसानों की आज़ादी के लिये काम करने को प्रेरित नहीं किया था, मगर हमने ऐसा किया।

"नहीं, ऐसा नहीं है!" लेविन ने और भी गर्म होते हुए उसे टोका। "किसानों की आज़ादी का सवाल और मामला था। उसमें निजी हित था। हम उस जुए को उतार फेंकना चाहते थे, जो हम सभी भले लोगों को पीस रहा था। किन्तु ज़ेम्सत्वो-परिषद का सदस्य बनकर मैं इस बात पर विचार करूं कि शहर में, जहां सैं रहता नहीं हूं, कितने सफ़ाई करनेवाले चाहिये तथा कैसे पाइपें बिछाई जायें; बेकन चुरा लेनेवाले किसी किसान के मुक़दमे में जूरी में बैठकर छः घण्टे तक वह बकवास सुनूं, जो आपराधी का वकील और सरकारी वकील करते हैं, तथा यह भी कि कैसे अध्यक्ष मेरे बूढ़े तथा बुद्धू अल्योश्का से यह पूछता है – 'श्रीमान अभियुक्त, आप बेकन चुराने का तथ्य स्वीकार करते हैं या नहीं?' – 'उंह?'"

लेविन अब अपनी तरंग में बह गया था और वह जूरी के अध्यक्ष और बुद्धू अल्योश्का की नक़ल करने लगा था। उसे यह सब कुछ मामले से सम्बन्धित प्रतीत हो रहा था।

किन्तु कोज़्निशेव ने सिर्फ़ कंधे झटक दिये।

"तो तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूं कि उन अधिकारों की, जो मुझसे... मेरे हित से सम्बन्ध रखते हैं, मैं हमेशा अपनी पूरी ताक़त से रक्षा करूंगा। हमारे विद्यार्थी-जीवन में जब हमारी तलाशी ली गयी और जेनदार्मों ने हमारे ख़त पढ़े, तो मैं जी-जान से इन अधिकारों को बचाने, तालीम पाने और आज़ादी के अपने हक़ों की रक्षा के लिये सब कुछ करने को तैयार था। अनिवार्य सैनिक सेवा की बात मेरी समझ में आती है, जिसका मेरे बच्चों, मेरे भाइयों और ख़ुद मुझसे सम्बन्ध है। मैं उस चीज़ पर सोच-विचार करने को तैयार हूं, जिसका मुझसे ताल्लुक़ है। लेकिन इस बात पर दिमाग़ खपाना कि ज़ेम्सत्वो-परिषद के चालीस हज़ार रूबल कैसे ख़र्च किये जायें या बुद्धू अल्योशा का मुक़दमा सुना जाये – यह मेरी समझ में नहीं आता और मैं नहीं कर सकता।"

लेविन ऐसे बोल रहा था मानो उसके शब्दों का बांध टूट गया हो। कोज़्निशेव मुस्कराया।

"कल तुम पर भी मुक़दमा चल सकता है। तो क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा कि पुरानी फ़ौजदारी अदालत में तुम पर मुक़दमा चलाया जाये?"

"मुझ पर मुक़दमा नहीं चलेगा। मैं कभी किसी का गला नहीं काटूंगा और मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। समझे न!" वह फिर मामले से कोई सम्बन्ध न रखनेवाली बात पर छलांग लगाता हुआ कहता गया, "हमारी ज़ेम्सत्वो-संस्थायें और यह सब कुछ भोज वृक्षों की उन टहनियों जैसा है, जिन्हें हमने ट्रिनिटी पर्व के दिन सभी ओर गाड़ दिया था, ताकि वे जंगल-सा दिखाई दें, जो यूरोप में अपने आप ही पनप गया है। मैं दिल से ऐसे भोज वृक्ष को सींचने और इन पर भरोसा करने में असमर्थ हूं।"

कोज़्निशेव ने केवल कंधे झटक दिये और इस तरह इस बात की हैरानी ज़ाहिर की कि इन दोनों की बहस में अब ये भोज वृक्ष कहां से आ धमके, यद्यपि वह फ़ौरन यह समझ गया कि उसके भाई का इससे क्या अभिप्राय है।

"सुनो, इस तरह से भी कभी कोई तर्क-वितर्क होता है?"

किन्तु लेविन जन-हित के कामों के प्रति अपनी उदासीनता की, जिसकी उसे चेतना थी, सफ़ाई पेश करना चाहता था और इसलिये कहता गया :

"मेरे ख़्याल में तो निजी हित के बिना किसी भी काम का कोई दृढ़ आधार नहीं हो सकता। यह आम सचाई है, दार्शनिक सचाई," उसने "दार्शनिक" शब्द को ज़ोर से दोहराते हुए कहा, मानो यह ज़ाहिर करना चाहता हो कि सभी दूसरे लोगों की तरह उसे भी दर्शन का ज़िक्र करने का हक़ है।

कोज़्निशेव फिर से मुस्करा दिया। "अपने रुझानों की वकालत करने के लिये उसका भी अपना एक दर्शन है," उसने सोचा।

"ख़ैर, दर्शन की बात तो तुम रहने दो," उसने कहा। "सभी युगों के दर्शन का मुख्य कार्यभार वह अनिवार्य सम्बन्ध ढूंढ़ना रहा है, जो निजी और सर्वहित के बीच विद्यमान है। पर मामले से सम्बन्ध रखनेवाली बात तो यह है कि मुझे तुम्हारी तुलना को सुधारना है। भोज गाड़े नहीं गये हैं, बल्कि कुछ रोपे गये हैं और कुछ के बीज बोये गये हैं तथा उनके प्रति सावधानी से काम लेना चाहिये। केवल ऐसे ही जनगण का भविष्य है, ऐसे ही जनगण इतिहास में अपनी जगह बना सकते हैं, जो यह महसूस करते हैं कि उनकी संस्थाओं में क्या महत्त्वपूर्ण और गौरवपूर्ण है और वे उसे सहेजते हैं।"

कोज़्निशेव मामले को दार्शनिक-ऐतिहासिक क्षेत्र में ले गया, जो लेविन की पहुंच के बाहर था और उसे यह स्पष्ट कर दिया कि उसका दृष्टिकोण कितना ग़लत है।

"जहां तक इस चीज़ का ताल्लुक़ है कि तुम्हें यह पसन्द नहीं, तो तुम मुझे माफ़ करना – यह हमारी रूसी काहिली और रईसी है तथा मुझे यक़ीन है कि तुम वक़्ती तौर पर गुमराह हो गये हो और आख़िर सही रास्ते पर आ जाओगे।"

लेविन ख़ामोश रहा। वह महसूस कर रहा था कि उसे चारों शाने चित कर दिया गया है, मगर साथ ही उसे यह भी अनुभव हो रहा था कि वह कुछ ऐसा कहना चाहता था, जो भाई की समझ में नहीं आया। वह सिर्फ़ यह नहीं जानता था कि क्यों उसका भाव भाई की समझ में नहीं आया। इसलिये कि वह जो कुछ कहना चाहता था, उसे

साफ़ तौर पर नहीं कह पाया, या इसलिये कि भाई उसकी बात समझना नहीं चाहता था या समझ नहीं सका था। किन्तु वह इन विचारों की गहराई में नहीं जाना चाहता था और भाई की बात काटे बिना किसी दूसरे, अपने निजी मामले के बारे में सोचने लगा।

कोज़्निशेव ने अपनी आख़िरी बंसी लपेटी, घोड़े को खोला और वे घर की ओर चल दिये।

(४)

भाई के साथ बातचीत के समय लेविन जिस निजी मामले के बारे में सोच रहा था, वह यह था – पिछले साल एक दिन घास की कटाई के समय कारिन्दे से किसी बात पर नाराज़ होने के बाद उसने अपने को शान्त करने के लिये अपने ही एक उपाय का उपयोग किया था – हंसिया लेकर ख़ुद घास काटने लगा था।

उसे यह काम इतना अधिक पसन्द आया था कि उसने कई बार इसे किया – घर के सामनेवाले पूरे चरागाह की घास ख़ुद ही काट डाली और इस साल वसन्त के आरम्भ से ही किसानों के साथ दिन भर घास काटने की योजना बना ली। भाई के आने के बाद से वह इस असमंजस में था – कटाई करे या न करे? भाई को सारा-सारा दिन अकेले छोड़ते हुए उसे झेंप महसूस होती और इस बात का भी डर था कि कहीं वह ऐसा करने के लिये उसका मज़ाक न उड़ाये। कितु चरागाह का चक्कर लगाने और कटाई से उसे जो मज़ा आया था उसकी याद करके उसने लगभग यह तय कर लिया था कि कटाई करेगा। भाई के साथ होनेवाली झल्लाहट भरी बातचीत के बाद उसे फिर से इसकी याद आ गयी।

"शारीरिक श्रम करना चाहिये, नहीं तो मेरा स्वभाव बिल्कुल ख़राब हो जायेगा," उसने सोचा और भाई तथा किसानों के सामने उसे बेशक यह कितना ही अटपटा क्यों न लगे उसने ऐसा करने का पक्का इरादा बना लिया।

लेविन शाम को दफ़्तर में गया, उसने काम के बारे में आदेश दिये और अगले दिन अपने सबसे अच्छे तथा सबसे बड़े कालीनोवी चरागाह की घास काटने के लिये लोगों को बुलवाने के हेतु गांवों में कुछ लोग भेज दिये।

"हां, कृपया मेरा हंसिया भी तीत के पास भिजवा दीजिये, ताकि वह उसे तेज़ करके कल ले आये। हो सकता है कि मैं ख़ुद भी कटाई करूं," उसने घबराहट छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।

कारिन्दा मुस्कराया और बोला:

"जो हुक्म।"

शाम को चाय के वक़्त लेविन ने भाई से भी यह कह दिया।

"लगता है कि मौसम सुधर गया है," वह बोला। "कल में घास की कटाई शुरू कर रहा हूं।"

"मुझे यह काम बहुत पसन्द है," कोज़्निशेव ने कहा।

"और मुझे बेहद अच्छा लगता है। कभी-कभी तो मैंने भी किसानों के साथ यह काम किया है और कल दिन भर यही करना चाहता हूं।"

कोज़्निशेव ने सिर ऊपर उठाया और जिज्ञासा से भाई की तरफ़ देखा।

"क्या मतलब? किसानों के बराबर, दिन भर?"

"हां, यह बहुत ही सुखद है," लेविन ने कहा।

"कसरत के रूप में ऐसा करना बहुत बढ़िया है, मगर तुम शायद ही इसे बर्दाश्त कर पाओगे," कोज़्निशेव ने किसी भी तरह के व्यंग्य के बिना कहा।

"मैं आज़मा कर देख चुका हूं। शुरू में कठिनाई होती है, मगर बाद में गाड़ी चल निकलती है। सोचता हूं कि पिछड़ूंगा नहीं।"

"अच्छा! लेकिन यह बताओ कि किसानों को यह कैसा लगता है? वे तो यह सोचकर हंसते होंगे कि ये रईसज़ादे अपनी सनक दिखा रहे हैं।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता। यह इतना ख़ुशी-भरा और साथ ही इतना मुश्किल काम होता है कि कुछ सोचने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती।"

"लेकिन तुम उनके साथ दोपहर का खाना कैसे खाओगे? तुम्हारे लिये वहां तला हुआ टर्की मुर्ग़ा और लाफ़ीट शराब की बोतल भेजना तो अटपटा लगेगा।"

"नहीं, मैं उनके दोपहर के आराम के वक़्त घर आ जाऊंगा।"

अगली सुबह को लेविन हर दिन की तुलना में जल्दी उठा, लेकिन

खेतीबारी के प्रबन्ध की समस्यायें निपटाते हुए उसे देर हो गयी। जब वह चरागाह में पहुंचा, तो घास काटनेवाले दूसरी क़तार की कटाई कर रहे थे।

पहाड़ी के ऊपर से ही उसे उसके दामन में चरागाह का वह छाया-दार भाग, जहां से घास काटी जा चुकी थी, भूरी टालों और कोटों के काले ढेरों के साथ, जो पहली क़तार शुरू करने की जगह पर उतारे गये थे, नज़र आ रहा था।

अधिक निकट जाने पर एक-दूसरे के पीछे लम्बी क़तार में फैले और अपने-अपने ढंग से हंसिया चलाते किसान दिखाई देने लगे। उनमें से कोई कोट पहने था और कोई कुरता ही। लेविन ने गिनती की, कुल बयालीस लोग थे।

चरागाह की ऊबड़-खाबड़ ढाल पर, जहां पुराना बांध था, ये लोग धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। अपने कुछ लोगों को लेविन ने पहचान लिया। इनमें बहुत लम्बा सफ़ेद कुरता पहने येर्मील था, जो झुककर हंसिया चला रहा था। नौजवान वास्का भी था, जो पहले लेविन के यहां साईस रह चुका था और जो हर क़तार को ज़ोरदार तथा बड़े झटके से काटता जा रहा था। लेविन को घास काटने के काम की शिक्षा देनेवाला नाटा दुबला-पतला किसान तीत भी दिख रहा था। वह झुके बिना आगे-आगे जाता हुआ अपनी चौड़ी क़तार को ऐसे काटता जा रहा था मानो हंसिये से खिलवाड़ कर रहा हो।

लेविन घोड़े से नीचे उतरा और उसे रास्ते के क़रीब बांधकर तीत के पास गया। तीत ने झाड़ियों के नीचे से दूसरा हंसिया निकाल कर उसे दिया।

"बिल्कुल तैयार है, मालिक, उस्तरे की नाईं, अपने आप काटत चला जात," तीत ने टोपी उतार कर लेविन को हंसिया देते हुए मुस्कराकर कहा।

लेविन ने हंसिया ले लिया और उसकी आज़माइश करने लगा। घास की अपनी क़तारों को ख़त्म करके पसीने से तर और प्रफुल्ल घास काटनेवाले एक-दूसरे के बाद बाहर रास्ते पर आये और उन्होंने हंसते हुए मालिक से सलाम-दुआ की। वे सभी लेविन को देख रहे थे, मगर किसी ने कहा कुछ भी नहीं। कुछ क्षण बाद लम्बे क़द के एक

बूढ़े घास काटनेवाले ने, जिसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी थीं और जो बिना दाढ़ी के था तथा भेड़ की खाल का कोट पहने था, लेविन को सम्बोधित किया।

"मालिक, अब आगे आयो, घास काटे में पीछे न रहियो," बूढ़े ने कहा और लेविन को घास काटनेवालों के बीच दबी-घुटी हंसी सुनाई दी।

"कोशिश करूंगा पीछे न रहने की," लेविन ने जवाब दिया, तीत के पीछे खड़ा हो गया और कटाई शुरू करने के इशारे का इन्तज़ार करने लगा।

"डटे रहियो," बूढ़े ने फिर से चेतावनी दी।

तीत ने लेविन के लिये जगह छोड़ दी और वह उसके पीछे-पीछे कटाई करने लगा। रास्ते के किनारे वाली घास छोटी-छोटी थी और लेविन, जिसने बहुत अर्से से कटाई नहीं की थी तथा जो अपने ऊपर जमी हुई लोगों की नज़रों के कारण झेंप महसूस कर रहा था, शुरू में बुरे ढंग से कटाई करता रहा, यद्यपि वह हंसिये को हिलाता ज़ोर से था। उसे अपने पीछे से ये बातें सुनाई दीं:

"हंसिया की ऊंचाई उसके माफिक न पड़त, कित्ता झुके जात," एक ने कहा।

"हंसिया के फल पर जोर दे के चलावे तो काम बने," दूसरे ने कहा।

"कोई बात नहीं, ठीक है, धीरे-धीरे राह पर आवत," बूढ़ा कह रहा था। "देखत, होई गयो... चौड़ी पात काटत हो, थकी जाओगे, मालिक... ऐसे काम नहीं करत, मालिक, तुम्हारी अपनी घास है। देखो कित्ती छोड़ दी! हमीं ऐसो करत तो पिटाई होत।"

नर्म घास शुरू हो गयी थी और लेविन ये सभी टिप्पणियां सुनता, किन्तु कोई जवाब दिये बिना तथा यथाशक्ति अच्छी तरह कटाई करने की कोशिश करता हुआ तीत के पीछे चलता जा रहा था। कोई सौ क़दम तक इन्होंने कटाई कर ली। तीत तो रुके बिना, ज़रा-सी भी थकावट ज़ाहिर किये बिना बढ़ता चला जा रहा था। किन्तु लेविन बुरी तरह घबराहट महसूस करने लगा था कि वह बर्दाश्त नहीं कर पायेगा – इतना अधिक थक गया था वह।

लेविन को अनुभव हो रहा था कि अपना आख़िरी ज़ोर लगाकर वह हंसिया चला रहा है और उसने तीत से रुक जाने के लिये कहने का निर्णय कर लिया। किन्तु इसी समय तीत ख़ुद रुक गया, उसने झुककर घास उठाई, हंसिये को साफ़ किया और उसे तेज़ करने लगा। लेविन सीधा हुआ और गहरी सांस छोड़कर उसने अपने पीछे देखा। उसके पीछे एक किसान था और वह भी स्पष्टतः इतना ही थक गया था। लेविन के निकट आये बिना वह उसी जगह रुक गया और हंसिये की धार तेज़ करने लगा। तीत ने अपना और लेविन का हंसिया तेज़ कर लिया तथा वे आगे चल दिये।

दूसरी बार भी ऐसे ही हुआ। तीत अपने हंसिये को लगातार चलाता जा रहा था, न रुकता था, न थकता था। लेविन पिछड़ न जाने की कोशिश करता हुआ उसके पीछे-पीछे चल रहा था और उसके लिये यह मुश्किल होता जा रहा था। आख़िर वह घड़ी आई, जब उसने महसूस किया कि उसमें अब और ताक़त नहीं रही। किन्तु तीत इसी वक़्त रुक गया और हंसिये को तेज़ करने लगा।

इस तरह इन्होंने पहली क़तार ख़त्म की। लेविन को यह लम्बी क़तार ख़ास तौर पर मुश्किल लगी। लेकिन जब इस क़तार की कटाई पूरी हो गयी और तीत, हंसिये को कंधे पर रखकर, कटी घास पर अपने बूटों की एड़ियों द्वारा छोड़े गये चिह्नों पर धीमी-धीमी चाल से लौटने लगा, तो लेविन भी अपने द्वारा काटी गयी घास पर ऐसे ही चलने लगा। उसके चेहरे से पसीना चू रहा था, नाक से टपक रहा था और उसकी पीठ ऐसे भीगी हुई थी मानो किसी ने उसे पानी में डुबकी लगवा दी हो, फिर भी वह बहुत ख़ुश था। उसे ख़ास ख़ुशी तो इस बात के एहसास से हो रही थी कि अब वह इस आज़माइश में कामयाब हो जायेगा।

केवल इसी चीज़ ने उसकी ख़ुशी को विषाक्त किया कि उसकी क़तार अच्छी नहीं थी। "हाथ को कम और धड़ को अधिक घुमाऊंगा," वह तीत की धागे की तरह सीधी क़तार की अपनी अटपटी तथा टेढ़ी-मेढ़ी क़तार से तुलना करते हुए सोच रहा था।

लेविन ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिया था कि तीत ने पहली क़तार ख़ास तौर पर जल्दी-जल्दी ख़त्म की थी। वह सम्भवतः अपने

रईस मालिक की परीक्षा लेना चाहता था, और फिर क़तार भी लम्बी थी। अगली क़तारें आसान थीं, किन्तु लेविन को इस बात के लिये फिर भी एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना पड़ता था कि वह किसानों से पीछे न रह जाये।

लेविन इसके सिवा न तो कुछ सोच रहा था, न कुछ चाहता ही था कि किसानों के मुक़ाबले में पिछड़ न जाये और यथाशक्ति अच्छा काम करे। वह तो सिर्फ़ हंसियों की सनसनाहट सुन रहा था और अपने सामने तीत की दूर जाती आकृति, कटी घास की अर्द्ध चन्द्राकार क़तार, अपने हंसिये के नीचे धीरे तथा लहर के रूप में गिरती घास तथा फूल और सामने की तरफ़ क़तार का अन्त देख रहा था, जहां आराम करने का वक़्त मिलेगा।

यह न समझ पाते हुए कि क्या क़िस्सा है और कहां से ऐसा हुआ है, लेविन ने काम के दौरान अचानक अपने गर्म और पसीने से तर हुए कंधों पर ठण्डक अनुभव की। उसने हंसियों को तेज़ करने के समय आकाश पर नज़र डाली। झुका-झुका, भारी बादल आ गया था और मोटी-मोटी बूंदें गिरने लगी थीं। कुछ किसान अपने कोटों की ओर गये और उन्हें पहन लिया, दूसरे लेविन की तरह इस सुखद ठण्डक से ख़ुश होते हुए केवल अपने कंधे उचकाते रहे।

वे एक के बाद एक क़तार काटते गये। लम्बी और छोटी, अच्छी तथा बुरी घास की क़तारें सामने आईं। लेविन को समय के बारे में कोई चेतना न रही और वह निश्चित रूप से यह नहीं जानता था कि बहुत या कम देर हुई है। उसके काम में अब उसे अत्यधिक सुख प्रदान करनेवाला परिवर्तन होने लगा। काम के दौरान ऐसे क्षण भी आते, जब वह यह भूल जाता कि क्या कर रहा है, उसे मन में हल्कापन-सा महसूस होता और इन्हीं क्षणों में उसकी क़तार तीत की भांति लगभग सीधी और अच्छी बनती। किन्तु जैसे ही उसे इस बात का ध्यान आ जाता कि वह क्या काम कर रहा है और उसे अधिक अच्छे ढंग से करने की कोशिश करता, वैसे ही उसे श्रम का सारा बोझ अनुभव होने लगता और क़तार बिगड़ जाती।

एक और क़तार पूरी करने के बाद उसने अगली क़तार आरम्भ करनी चाही, लेकिन तीत ने उसे रोक दिया और बूढ़े के पास जाकर

धीमे-से कुछ कहा। दोनों ने सूरज की तरफ़ देखा। "किस चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं ये और क्यों नई क़तार शुरू नहीं करते?" लेविन सोच रहा था और यह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि किसान लगातार चार घण्टों से कटाई कर रहे हैं और अब उनके नाश्ता करने का वक़्त हो गया है।

"नास्ते-पानी का बख़्त होई गयो, मालिक," बूढ़े ने कहा।

"सच, वक़्त हो गया? तो, करो नाश्ता।"

लेविन ने हंसिया तीत को दे दिया और डबल रोटी लेने के लिये कोटों की ओर जाते किसानों के साथ बारिश से कुछ कुछ भीगी घास की लम्बी क़तारों के विस्तार को लांघता हुआ घोड़े की तरफ़ चल दिया। इसी समय यह बात उसकी समझ में आई कि वह मौसम का अनुमान नहीं लगा सका और बारिश ने घास को भिगो दिया।

"घास ख़राब हो जायेगी," उसने कहा।

"कोई बात नहीं, मालिक, बारिस-बरखा में कटाई करत, मौसम सुधरे तो टाल जमावत," बूढ़े ने जवाब दिया।

लेविन ने घोड़ा खोला और कॉफ़ी पीने घर चल दिया।

कोज़्निशेव अभी-अभी बिस्तर से उठा था। लेविन ने कॉफ़ी पी और भाई के कपड़े पहनकर भोजन कक्ष में आने के पहले ही चरागाह में वापस चला गया।

(५)

नाश्ते के बाद लेविन पहलेवाली क़तार के बजाय हंसी-मज़ाक करने-वाले बूढ़े, जिसने उसे अपने क़रीब बुला लिया था, और उस जवान किसान के बीच आ गया, जिसने पतझर में ही शादी की थी और उस गर्मी में पहली बार घास काटने आया था।

तना हुआ बूढ़ा अपने बाहर को निकले पैरों से लम्बे डग भरता हुआ आगे-आगे जा रहा था तथा लयबद्ध हरकत से, जिसमें उसे स्पष्टतः चलते वक़्त हाथ हिलाने में कुछ ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी, मानो खिलवाड़-सा करता हुआ ऊंची और सीधी क़तार बनाता जाता था। ऐसे लगता था मानो वह हंसिये को नहीं चलाता था, बल्कि तेज़ हंसिया अपने आप ही रसीली घास के बीच सनसनाता हुआ चला जा रहा था।

लेविन के पीछे जवान मीश्का था। वह बालों के गिर्द ताज़ा घास का गुच्छा बांधे था और उसके प्यारे, नौजवानी के चेहरे को देखने से पता चलता था कि वह बड़ा ज़ोर लगाकर काम कर रहा है। लेकिन फिर भी जैसे ही कोई उसकी तरफ़ देखता, वह मुस्करा देता। यह मानने के बजाय कि उसे मुश्किल हो रही है, वह तो स्पष्टतः जान दे देना बेहतर समझता था।

लेविन इन दोनों के बीच था। दिन की ज़ोरदार गर्मी में घास काटने का काम उसे इतना मुश्किल नहीं लगा। जिस्म को तर करनेवाला पसीना उसे ठण्डक देता और पीठ, सिर तथा कोहनियों तक उघाड़ी बांहों को झुलसनेवाले सूरज से काम में मज़बूती और दृढ़ता मिलती। चेतनाहीन स्थिति के वे क्षण अधिकाधिक आते, जब यह न सोचना सम्भव था, कि वह क्या कर रहा है। हंसिया अपने आप ही काटता चला जाता था। ये बड़े सुखद क्षण होते थे। इनसे भी अधिक सुखद वे क्षण होते, जब वे क़तार के अन्त में नदी तट पर पहुंचते, बूढ़ा घनी और गीली घास से हंसिये को पोंछता, हंसिये के इस्पाती फल को नदी के ताज़ा पानी में धोता और सिल्ली के डिब्बे में भरकर लेविन को ऐसा पानी पीने के लिये देता।

"कहो, कैसो लगत मेरो क्वास! चोखो है न?" वह आंख मारकर कहता।

और वास्तव में ही लेविन ने इस गुनगुने पानी जैसा पेय, जिसमें घास के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते थे और जिससे मोरचा खाये टीन का स्वाद आता था, कभी नहीं पिया था। इसके फ़ौरन बाद हंसिये पर हाथ रखकर उल्लासपूर्ण मटरगश्ती होती, जिसके दौरान बहते पसीने को पोंछा जा सकता था, खुलकर सांस ली जा सकती थी, घास काटनेवालों की लम्बी पांत तथा जंगल और खेत में जो कुछ हो रहा था, उसे देखा जा सकता था।

लेविन जितनी अधिक देर तक घास काटता जा रहा था, उतना ही अधिक वह विस्मृति के ऐसे क्षणों को अनुभव करता था, जब हाथ हंसिये को नहीं हिलाते थे, बल्कि हंसिया ख़ुद पूरी तरह से चेतन और जीवन से ओत-प्रोत शरीर को अपने पीछे चलाता था और काम उसके बारे में सोचे-विचारे बिना मानो किसी जादू के प्रभाव से अपने

आप सही तथा बढ़िया ढंग से होता जाता था। ये सबसे अधिक सुखद क्षण होते थे।

केवल तभी कठिनाई का सामना करना पड़ता, जब अपने आप होनेवाली इस हरकत को रोकना और सोचना पड़ता, जब किसी ढूह या घास-पात के झुण्ड के गिर्द घास काटनी पड़ती। बूढ़ा आसानी से यह करता। ढूह सामने आने पर वह अपने काम का ढंग बदल लेता और हंसिये के फल और कहीं उसके सिरे से दोनों तरफ़ हल्की-हल्की चोटें करते हुए उसे साफ़ कर डालता। वह सामने आनेवाली हर चीज़ को देखता। किसी पौधे को उखाड़ लेता, उसे ख़ुद खाता या लेविन को देता, कभी हंसिये के सिरे से किसी टहनी को रास्ते से हटाता, कभी बटेर के उस घोंसले को देखता, जिसमें से उसके हंसिये के पास से ही मादा ऊपर उड़ती, कभी मार्ग में आ जानेवाले किसी सांप को कांटे की तरह हंसिये पर उठा लेता, लेविन को दिखाता और फिर फेंक देता।

लेविन और उसके पीछे आनेवाले नौजवान के लिये ऐसी गतिविधियां मुश्किल थीं। ये दोनों एक ही तरह तनावपूर्ण ढंग से हंसिया चलाते हुए पूरी तरह काम के जोश में थे। इनके लिये अपनी गतिविधि को बदलना और साथ ही अपने सामने आ जानेवाली चीज़ की तरफ़ ध्यान देना सम्भव नहीं था।

वक़्त कैसे बीतता जा रहा था, लेविन को इसका पता नहीं चला। अगर उससे पूछा जाता कि वह कितनी देर से घास काट रहा है, तो उसका जवाब होता – आध घण्टे से। लेकिन वास्तव में तो दोपहर के खाने का वक़्त होनेवाला था। नयी क़तार शुरू करते हुए बूढ़े ने उन लड़के-लड़कियों की तरफ़ लेविन का ध्यान दिलाया, जो सड़क पर भिन्न दिशाओं से घास काटनेवालों की तरफ़ आ रहे थे, ऊंची घास के कारण मुश्किल से दिखाई दे रहे थे, अपने नीचे की ओर तने छोटे-छोटे हाथों में डबल रोटी की पोटलियां और क्वास से भरी तथा चिथड़ों से बन्द की हुई सुराहियां ला रहे थे।

"देखत, हमारे बाल-गोपाल आवत!" बूढ़े ने उनकी तरफ़ इशारा करके कहा और हाथ की ओट करके सूरज की तरफ़ देखा।

दो और क़तारों की घास काटने के बाद बूढ़ा रुक गया।

"तो पेट भरने को बख़्त होइ गयो, मालिक!" उसने दृढ़ता-

पूर्वक कहा। और घास काटनेवाले नदी तट तक जाकर कटी क़तारों को लांघते हुए अपने कोटों की ओर चल दिये, जिनके क़रीब भोजन लानेवाले उनके बच्चे इन्तज़ार कर रहे थे। दूर से आनेवाले किसान अपनी घोड़ा-गाड़ियों के साये और निकटवाले सरपत की झाड़ी के नीचे, जिस पर उन्होंने घास डाल दी थी, जमा हो गये।

लेविन भी उनके पास ही बैठ गया, उसका घर जाने को मन नहीं हुआ।

मालिक की उपस्थिति में अनुभव होनेवाला संकोच कभी का ख़त्म हो चुका था। किसान खाना खाने के लिये तैयार होने लगे। कुछ ने हाथ-मुंह धोया, नौजवानों ने नदी में स्नान किया, कुछ ने आराम करने की जगह ठीक की और रोटी की पोटलियां तथा क्वास से भरी सुराहियां खोलीं। बूढ़े ने रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करके प्याले में डाले, चमचे के दस्ते से उनका मलीदा-सा बनाया, सिल्ली के डिब्बे से पानी डाला, कुछ और रोटी के टुकड़े काटे और उन पर नमक डालने के बाद पूरब की तरफ़ मुंह करके प्रार्थना करने लगा।

"तो मालिक, हमारे मलीदा खावत," प्याले के सामने घुटनों के बल बैठते हुए उसने कहा।

मलीदा इतना ज़ायकेदार था कि लेविन ने भोजन करने के लिये घर जाने का इरादा बदल दिया। उसने बूढ़े के साथ खाना खाया, गहरी दिलचस्पी लेते हुए उसके घरेलू मामलों के बारे में बातचीत की और बूढ़े को अपने से सम्बन्धित उन सभी बातों और परिस्थितियों के बारे में बताने लगा, जिनमें बूढ़े ने रुचि प्रकट की। उसने भाई की तुलना में अपने को इस बूढ़े के अधिक निकट अनुभव किया और इसके प्रति अनुभव होनेवाले स्नेह से मुस्कराये बिना न रह सका। बूढ़े ने जब फिर से उठकर प्रार्थना की और अपने सिर के नीचे घास रखकर एक झाड़ी के नीचे लेट गया, तो लेविन ने भी ऐसा ही किया। धूप में बड़ी हठीली हो जानेवाली मक्खियां और कीड़े-मकोड़े उसके पसीने से तर चेहरे और शरीर को गुदगुदाते थे, फिर भी वह लेटते ही सो गया और तभी जागा, जब सूरज झाड़ी के दूसरी ओर चला गया था और धूप उस तक पहुंचने लगी थी। बूढ़ा तो कभी का जाग चुका था और नौजवान घास काटनेवालों के हंसिये तेज़ कर रहा था।

लेविन ने अपने इर्द-गिर्द नज़र घुमाई, तो जगह को पहचान नहीं पाया – सभी कुछ इतना बदल गया था। चरागाह के विराट विस्तार में घास काटी जा चुकी थी तथा सूरज की सन्ध्याकालीन टेढ़ी किरणों में महकती क़तारों के साथ अपनी विशेष, नयी चमक दिखा रहा था। नदी-तट के पास झाड़ियां, जिनके गिर्द घास काट दी गयी थी, और ख़ुद नदी भी, जो पहले दिखाई नहीं देती थी, मगर अब अपने मोड़ों सहित इस्पात की भांति चमकती थी, हिलते-डुलते और नींद से जगते लोग, चरागाह की वह जगह, जहां अभी तक बिना कटी घास खड़ी दीवार सी लग रही थी, घास के बिना नंगे से लग रहे चरागाह के ऊपर मंडराता हुआ बाज़ – यह सभी कुछ सर्वथा नया था। पूरी तरह जाग जाने के बाद लेविन यह अनुमान लगाने लगा कि कितनी घास काटी जा चुकी है और आज कितनी और काटी जा सकती है।

काम करनेवाले बयालीस लोगों को ध्यान में रखते हुए बहुत ही अधिक कटाई की जा चुकी थी। भूदास-प्रथा के समय तीस आदमी जिस बड़े चरागाह को दो दिन में काटते थे, वह पूरा काटा जा चुका था। छोटी-छोटी क़तारों वाले कोनों में ही घास काटना बाक़ी रह गया था। किन्तु लेविन आज ही यथासम्भव अधिक कटाई करवा लेना चाहता था और जल्दी-जल्दी नीचे जाते सूरज को देखकर उसे अफ़सोस हो रहा था। उसे ज़रा भी थकान महसूस नहीं हो रही थी, वह तो जल्दी-जल्दी और जितना सम्भव हो, ज़्यादा से ज़्यादा काम कर डालना चाहता था।

"क्या ख़्याल है, हम आज माश्किन ऊंचाई पर भी कटाई कर लेंगे या नहीं?" लेविन ने बूढ़े से पूछा।

"जैसी भगवान की इच्छा होते, सूरज तो ऊंचा नहीं है। छोकरा लोगों को कुछ वोदका देने की सोचत?"

तीसरे पहर, जब फिर से सभी लोग बैठ गये और तम्बाकू पीनेवाले तम्बाकू का मज़ा लेने लगे, तो बूढ़े ने उनको बताया – "माश्किन ऊंचाई पर कटाई कर दिखावत, तो वोदका पावत।"

"अरे, आहे नहीं कर पावत! चलवो, तीत! तेजी से हाथ चलावत! रात को खाइवो पेट भर कर! चलवो!" आवाज़ें सुनाई दीं और कटाई करनेवालों ने झटपट रोटी ख़त्म करके अगली क़तार शुरू कर दी।

"तो छोकरो लोगो, पीठ नहीं दिखावो!" तीत ने कहा और लगभग दुलकी चाल से आगे-आगे भाग चला।

"चलवो, चलवो!" बूढ़े ने झटपट उसके पीछे भागते और आसानी से उसके क़रीब पहुंचते हुए कहा। "तुम्हें काट देही! सावधान रहिवो!"

बूढ़े और जवान मानो एक-दूसरे को मात देने की कोशिश करते हुए कटाई कर रहे थे। लेकिन वे चाहे कितनी ही जल्दी क्यों नहीं कर रहे थे, घास को बिगाड़ते नहीं थे और घास की क़तारें पहले की तरह ही सीधी और ढंग से बन रही थीं। कोने में बचा हुआ छोटा-सा टुकड़ा पांच मिनट में साफ़ कर दिया गया। पिछले घास काटनेवाले जब अपनी क़तारें ख़त्म कर रहे थे, तो अगले अपने कोट कंधों पर डाल सड़क लांघते हुए माश्किन ऊंचाई की तरफ़ चल दिये।

सिल्ली के डिब्बों की खड़खड़ाहट के साथ जब ये लोग वन से ढके माश्किन खड्ड में पहुंचे तो सूरज वृक्षों के पीछे जाने लगा था। खड्ड के बीचों-बीच घास कमर तक ऊंची, नर्म, कोमल और चौड़ी-चौड़ी पत्तियों वाली थी और उसमें कहीं-कहीं रंग-बिरंगे फूलों की झलक मिलती थी।

कुछ देर तक यह विचार करने के बाद कि वे लम्बाई के रुख़ या चौड़ाई के रुख़ कटाई करें, प्रोख़ोर येर्मीलिन (वह भी प्रसिद्ध घास काटनेवाला था), लम्बा-तड़ंगा और काले बालों वाला किसान, आगे-आगे चल दिया। उसने एक क़तार की कटाई की, वापस आया और फिर से कटाई करने लगा। बाक़ी सब भी खड्ड से नीचे घाटी में और टीले पर जंगल के छोर तक जाते हुए ऐसा ही करने लगे। सूरज जंगल के पीछे डूब गया। ओस गिरने लगी थी और घास काटनेवाले केवल टीले पर ही धूप में होते, लेकिन नीचे, जहां भाप उठ रही थी, तथा दूसरी ओर वे ठण्डी और ओस-भीगी छाया में चलते। ख़ूब ज़ोर-शोर से काम हो रहा था।

मधुर ध्वनि के साथ काटी जाने और बहुत ही प्यारी सुगन्ध देनेवाली घास की ऊंची-ऊंची क़तारें बनती जा रही थीं। छोटी क़तारों वाले चरागाह में लोग एक दूसरे के निकट ही काम करते थे, उनके सिल्ली के डिब्बे खड़खड़ाते, कभी आपस में टकराने पर उनके हंसिये

टनटनाते, हंसिये की धार को तेज़ करते समय सीटी-सी बजती और वे ख़ुशी भरी आवाज़ों में चीख़ते-चिल्लाते हुए सभी ओर से एक-दूसरे को बाज़ी मारने का बढ़ावा देते।

लेविन पहले की भांति ही नौजवान और बूढ़े के बीच चल रहा था। बूढ़े ने भेड़ की खाल की जाकेट पहन ली थी और वह पहले की तरह ही रंग में था, हंसी-मज़ाक़ करता था और उसकी गतिविधि में पहले जैसी ही चुस्ती-फुर्ती थी। जंगल में रसीली घास में खूब फूली हुई खुमियां लगातार सामने आ रही थीं, जो हंसियों से कट जाती थीं। लेकिन खुमी के सामने आने पर बूढ़ा हर बार झुकता, उसे चुनता और क़मीज़ के अन्दर डालकर कहता – "बुढ़िया के लिये एक और उपहार मिल गया।"

गीली और नर्म घास को काटना चाहे बहुत आसान था, फिर भी खड्ड की खड़ी ढालों पर चढ़ना और उतरना काफ़ी मुश्किल था। मगर बूढ़े को इससे कोई परेशानी नहीं होती थी। अपने हंसिये को पहले की तरह ही घुमाते और छाल के बड़े-बड़े जूतों में अपने छोटे-छोटे तथा दृढ़ क़दम रखता हुआ वह धीरे-धीरे खड़ी ढाल पर चढ़ता और यद्यपि उसका सारा शरीर तथा कमीज़ के नीचे ढीला-ढाला पतलून ज़ोर से हिलता-डुलता, तथापि वह घास का एक भी तिनका या एक भी खुमी न छोड़ता और पहले की तरह ही किसानों और लेविन से हंसी-मज़ाक़ करता जाता। लेविन बूढ़े के पीछे-पीछे चल रहा था और अक्सर उसे यह ख़्याल आता कि ऐसे खड़े टीले की ढाल पर चढ़ते हुए, जहां हंसिये के बिना ही चढ़ना मुश्किल होता है, ज़रूर गिर पड़ेगा। लेकिन वह चढ़ता और कटाई करता। वह महसूस करता कि कोई बाहरी ताक़त ही उसे चलाती जा रही थी।

(६)

माश्किन ऊंचाई पर कटाई कर ली गयी, घास की अन्तिम क़तारें बना दी गयीं, किसानों ने अपने कोट पहने और ख़ुशी-ख़ुशी घरों को चल दिये। लेविन घोड़े पर सवार हुआ और दुखी मन से किसानों से विदा लेकर घर की ओर रवना हो गया। पहाड़ी पर से उसने मुड़कर

देखा – नीचे से उठ रहे कुहासे के कारण किसान नज़र नहीं आ रहे थे, सिर्फ़ उनकी ख़ुशी भरी और भोंडी आवाज़ें, ठहाके और आपस में टकराते हंसियों की टनाहट सुनाई दे रही थी।

कोज़्निशेव तो कभी का भोजन कर चुका था, नींबू और बर्फ़ के साथ पानी पी रहा था तथा कुछ ही देर पहले डाक से आये अख़बारों और पत्र-पत्रिकाओं को देख रहा था। इसी समय लेविन तेज़ी से उसके कमरे में घुसा। पसीने के कारण उसके उलझे-उलझाये बाल माथे पर चिपक गये थे, पीठ और छाती गीली और काली थी। उसकी आवाज़ में ख़ुशी छलक रही थी।

"हमने पूरे चरागाह में घास काट डाली है! अहा, कितना मज़ा आया, कमाल ही हो गया! और तुम्हारा कैसा हाल रहा?" लेविन ने पूछा। उसे पिछले दिन की अप्रिय बातचीत बिल्कुल भूल गयी थी।

"हे भगवान! यह तुम बने क्या हुए हो!" शुरू में भाई को अप्रसन्नता से देखते हुए कोज़्निशेव ने कहा। "अरे, दरवाज़ा, दरवाज़ा तो बन्द करो!" वह चिल्लाया। "ज़रूर दसेक मक्खियां भीतर घुस आने दी होंगी।"

कोज़्निशेव मक्खियों को तो बर्दाश्त ही नहीं कर पाता था, सिर्फ़ रात को ही अपने कमरे की खिड़कियां खोलता था और बड़े ध्यान से दरवाज़ा बन्द रखता था।

"क़सम भगवान की, एक भी नहीं। अगर कोई घुस भी आयी होगी, तो मैं पकड़ लूंगा। तुम तो यक़ीन ही नहीं करोगे कि कितना मज़ा आता है कटाई करने में! तुमने अपना दिन कैसे बिताया?"

"मैंने, अच्छी तरह से। लेकिन तुम क्या सचमुच दिन भर कटाई करते रहे? मेरे ख़्याल में भूख के मारे तुम्हारे पेट में चूहे कूद रहे होंगे। कुज़्मा ने तुम्हारे लिये सब कुछ तैयार कर रखा है।"

"नहीं, मेरा खाने को मन नहीं है। मैंने वहीं खाना खा लिया था। जाकर हाथ-मुंह धोता हूं।"

"हां, हां, जाओ। मैं भी अभी तुम्हारे पास आ जाता हूं," कोज़्निशेव ने भाई की ओर देखकर सिर हिलाते हुए कहा। "जाओ, जल्दी से," उसने मुस्कराते हुए कहा और अपनी किताबें समेटकर जाने को तैयार हो गया। ख़ुद वह भी अचानक ख़ुशी की तरंग में आ

गया था और भाई के क़रीब ही रहना चाहता था। "हां, बारिश के वक़्त तुम कहां थे?"

"कैसी बारिश? ऐसे ही कुछ बूंदें गिरी थीं। तो मैं अभी आता हूं। तो तुमने अच्छी तरह दिन बिताया? बहुत अच्छी बात है।" और लेविन हाथ-मुंह धोने तथा कपड़े बदलने के लिये चला गया।

पांच मिनट बाद दोनों भाई भोजन-कक्ष में मिले। लेविन को बेशक ऐसा लग रहा था कि उसे भूख नहीं है और केवल इसीलिये मेज़ पर बैठ गया है कि कुज़्मा बुरा न माने, लेकिन जब खाने लगा, तो भोजन उसे बहुत ही स्वादिष्ट प्रतीत हुआ। कोज़्निशेव मुस्कराता हुआ लेविन को देख रहा था।

"अरे हां, तुम्हारा एक ख़त आया है," वह बोला। "कुज़्मा, कृपया नीचे से ख़त ले आओ। हां, दरवाज़ा बन्द करना नहीं भूलना।"

ख़त ओब्लोन्स्की का था। लेविन ने उसे ऊंचे-ऊंचे पढ़ा। ओब्लोन्स्की ने पीटर्सबर्ग से लिखा था: "मुझे डौली का पत्र मिला है, वह येर्गूशोवो में है और वहां सब कुछ ठीक-ठाक नहीं कर पा रही है। कृपया उसके पास जाओ, सलाह-मशविरा देकर उसकी मदद करो, तुम तो सब कुछ जानते-समझते हो। तुम्हारे आने से उसे बेहद ख़ुशी होगी। वह बेचारी एकदम अकेली है। मेरी सास और बाक़ी सब लोग तो अभी तक विदेश में हैं।"

"बहुत अच्छी बात है! ज़रूर जाऊंगा उनके पास," लेविन ने कहा। "हम दोनों इकट्ठे भी चल सकते हैं। कितनी अच्छी है वह। ठीक है न?"

"बहुत दूर तो नहीं हैं वे लोग?"

"कोई पैंतालीस किलोमीटर। शायद साठ किलोमीटर। लेकिन रास्ता बहुत बढ़िया है। ख़ूब अच्छा सफ़र रहेगा घोड़ा-गाड़ी में।"

"बहुत ख़ुश हूं यह जानकर," कोज़्निशेव ने लगातार मुस्कराते हुए ही जवाब दिया।

छोटे भाई की प्रफुल्ल मुद्रा ने उसका भी ख़ुशी भरा मूड बना दिया था।

"क्या कहने हैं तूम्हारी भूख के!" बड़े भाई ने तश्तरी पर झुके लेविन के भूरे-लाल और सांवले चेहरे तथा गर्दन को ग़ौर से देखते हुए कहा।

"ग़ज़ब की है! तुम तो यक़ीन नहीं करोगे कि सभी तरह की मानसिक गड़बड़ के लिये ऐसा काम कितना लाभदायक है। मैं चिकित्सा-शास्त्र को एक नये Arbeitscur* शब्द से समृद्ध करना चाहता हूं।"

"लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें तो इसकी ज़रूरत नहीं है।"

"हां, किन्तु स्नायुओं के तरह-तरह के रोगियों को तो है।"

"हां, इसे आज़माना चाहिये। मैं तुम्हें घास काटते हुए देखने को आना चाहता था, लेकिन गर्मी ऐसी बर्दाश्त के बाहर थी कि मैं जंगल से आगे न जा सका। मैं कुछ देर वहां बैठा रहा और फिर जंगल से होते हुए गांव को चल दिया। रास्ते में मुझे तुम्हारी धाय मिल गयी और मैंने उससे तुम्हारे बारे में किसानों की राय जाननी चाही। मेरी समझ में यह आया कि वे तुम्हारे इस काम का अनुमोदन नहीं करते। उसने कहा: 'यह बड़े लोगों का काम नहीं है'। कुल मिलाकर मुझे ऐसा लगता है कि 'बड़े लोगों' के कार्य-कलापों के बारे में जनसाधारण की बहुत दृढ़ धारणायें बनी हुई हैं। वे ऐसा नहीं चाहते कि बड़े लोग उनकी धारणाओं के नपे-तुले चौखटे से बाहर निकलें।"

"हो सकता है, मगर यह तो ऐसा आनन्द है, जो मैंने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया। फिर इस काम में बुरा तो कुछ भी नहीं। ठीक है न?" लेविन ने जवाब दिया। "क्या हो सकता है, अगर उन्हें अच्छा नहीं लगता। वैसे मेरे ख़्याल में यह बुरी बात नहीं है, क्यों?"

"कुल मिलाकर," कोज़्निशेव ने कहा, "जैसा कि मैं देख रहा हूं, तुम अपने आज के दिन से ख़ुश हो।"

"बहुत ख़ुश हूं। हमने सारा चरागाह काट डाला है। और कितने अच्छे एक बूढ़े से वहां मेरी दोस्ती हो गयी है! तुम तो इसकी कल्पना ही नहीं कर सकते कि कितना बढ़िया आदमी है वह!"

"तो तुम ख़ुश हो अपने आज के दिन से। मैं भी ख़ुश हूं। पहली बात तो यह है कि मैंने शतरंज की दो चालें ढूंढ़ ली हैं और एक तो बहुत ही प्यारी चाल है – प्यादे से शुरू होती है। मैं तुम्हें बताऊंगा। इसके बाद मैंने कल की हमारी बातचीत पर विचार किया।"

"क्या? हमारी कल की बातचीत पर?" लेविन ने कहा, जो

---

* श्रम द्वारा चिकित्सा। (जर्मन)

प्रफुल्लता से आंखें सिकोड़ रहा था, खाना ख़त्म होने पर हांफ रहा था तथा बिल्कुल यह याद नहीं कर पा रहा था कि कल किस मामले पर बातचीत हुई थी।

"मेरे ख़्याल में तुम कुछ हद तक सही हो। हमारा मतभेद इस बात में है कि तुम निजी हित को प्रेरक-शक्ति मानते हो, जब कि मैं ऐसा मानता हूं कि शिक्षित व्यक्ति में सर्वहित की भावना होनी चाहिये। शायद तुम्हारी बात सही हो कि भौतिक दिलचस्पी से प्रेरित गतिविधि बेहतर होगी। कुल मिलाकर तुम्हारा स्वभाव बहुत ही prime - sautière* है, जैसा कि फ़्रांसीसी कहते हैं। तुम बड़े जोश और उत्साह से काम करना चाहते हो या फिर बिल्कुल कुछ करना ही नहीं चाहते।"

लेविन अपने भाई की बात सुन रहा था, कुछ नहीं समझ पा रहा था और समझना भी नहीं चाहता था। उसे सिर्फ़ यही डर था कि भाई कोई ऐसा सवाल न कर दे, जिससे यह ज़ाहिर हो जाये कि वह कुछ नहीं सुन रहा था।

"तो यह मामला है मेरे दोस्त," कोज़्निशेव ने उसका कंधा छूते हुए कहा।

"सो तो ज़ाहिर ही है। सब ठीक है। मैं अपनी बात पर अड़ता नहीं हूं," लेविन ने अपराधी बालक जैसी मुस्कान के साथ कहा। "मैंने किस बात पर बहस की थी?" वह सोच रहा था। "स्पष्ट है कि मैं भी अपनी जगह ठीक हूं और वह अपनी जगह और सब कुछ बढ़िया है। हां, मुझे दफ़्तर में जाकर देखना चाहिये कि वहां क्या हाल-चाल है।" वह उठा, उसने अंगड़ाई ली और मुस्कराया।

कोज़्निशेव भी मुस्करा दिया।

"कुछ टहलना चाहते हो, तो आओ इकट्ठे चलें," उसने कहा, क्योंकि वह भाई से दूर नहीं होना चाहता था, जिससे ताज़गी और स्फूर्ति की लहक आ रही थी। "आओ चलें, अगर तुम्हें दफ़्तर में कुछ काम है, तो रास्ते में हो लेंगे।"

"हे भगवान!" लेविन इतने ज़ोर से चिल्लाया कि कोज़्निशेव डर गया।

---

* आवेगपूर्ण। (फ़्रांसीसी)

"क्या बात है?"

"अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना का हाथ?" लेविन ने माथे पर हाथ मारकर कहा। "मैं तो उसके बारे में भूल ही गया।"

"पहले से बेहतर है।"

"फिर भी मैं जल्दी से उसके पास हो आता हूं। तुम टोप भी नहीं पहन पाओगे कि मैं आ जाऊंगा।"

और सीढ़ी से नीचे भागते हुए लेविन की एड़ियां ज़ोर से बज उठीं।

(७)

स्तेपान अर्काद्येविच ओब्लोन्स्की बहुत स्वाभाविक और बहुत ही ज़रूरी वह कर्त्तव्य पूरा करने के लिये पीटर्सबर्ग गया था, जिससे सभी सरकारी अधिकारी-कर्मचारी अच्छी तरह परिचित होते हैं और जिसे दूसरे लोग समझने में असमर्थ रहते हैं तथा जिसकी अवहेलना करके सरकारी दफ़्तर में नौकरी करते रहना सम्भव नहीं होता। यह कर्त्तव्य है – मन्त्रालय को अपनी याद दिलाना। इस कर्त्तव्य की पूर्त्ति के लिये ओब्लोन्स्की घर में जितने भी पैसे थे, लगभग सभी अपने साथ ले गया और घुड़दौड़ों तथा देहाती बंगलों में ख़ूब मज़े की दिलचस्प ज़िन्दगी बिताता था। इसी वक़्त डौली बच्चों को साथ लेकर गांव चली गयी, ताकि जहां तक सम्भव हो, ख़र्च को कम कर सके। वह दहेज में मिलनेवाले अपने उसी येर्गूशोवो गांव में गई थी, जहां वसन्त में जंगल बेच दिया गया था और जो लेविन के पोक्रोव्स्की गांव से कोई पचहत्तर किलोमीटर दूर था।

येर्गूशोवो में पुरानी बड़ी हवेली कभी की गिरा दी गयी थी और डौली के पिता ने अपने वक़्त में ही उप-भवन को बड़ा और ठीक-ठाक करवा दिया था। बीस साल पहले, डौली जब बच्ची ही थी, यह उप-भवन ख़ासा बड़ा और आरामदेह था, यद्यपि सभी उप-भवनों की भांति दक्षिण में और घोड़ा-गाड़ी के मार्ग के सामने न होकर बग़ल की ओर खड़ा था। लेकिन अब यह उप-भवन पुराना और ख़स्ता हालत में था। वसन्त में ओब्लोन्स्की जब जंगल बेचने गया था, डौली ने तभी

उससे मकान को ग़ौर से देखने और उसकी ज़रूरी मरम्मत आदि करवाने का अनुरोध किया था। सभी बेवफ़ा पतियों की भांति ओब्लोन्स्की ने बीवी के आराम की बहुत चिन्ता की, ख़ुद मकान को अच्छी तरह देखा और उसकी दृष्टि से जो कुछ ज़रूरी था, सभी कुछ किया। उसके ख़्याल के मुताबिक़ यह ज़रूरी था कि सारे फ़र्नीचर पर छींटदार कपड़ा चढ़ाया जाये, पर्दे लटकाये जायें, बाग़ को साफ़ किया जाये, तालाब के क़रीब पुल बनाया जाये और फूल उगाये जायें। लेकिन वह दूसरी बहुत-सी चीज़ें भूल गया, जिनकी कमी बाद में डौली को बुरी तरह परेशान करती रही।

ओब्लोन्स्की चिन्ताशील पिता और पति होने की चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न करता था, फिर भी किसी भांति यह याद नहीं रख पाता था कि उसकी बीवी और बच्चे हैं। उसकी रुचियां छड़ों जैसी थीं और वह उन्हीं से निर्देशित होता था। मास्को लौटकर उसने बड़े गर्व से बीवी को बताया कि सारी व्यवस्था कर दी गयी है, कि घर बहुत प्यारा हो गया है और उसके ख़्याल में उसके लिये वहां जाकर रहना बहुत अच्छा होगा। ओब्लोन्स्की के मतानुसार गांव में जाना सभी दृष्टियों से बहुत सुखद था – बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर हो जायेगा, ख़र्च कम होगा और ख़ुद उसे अधिक आज़ादी मिल जायेगी। डौली तो बच्चों के लिये, ख़ास तौर पर उस बच्ची के लिये, जो लाल बुख़ार के बाद पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पायी थी, गर्मी भर को गांव में जाना सर्वथा ज़रूरी मानती थी। वह इस कारण भी ऐसा चाहती थी कि तुच्छ अपमानों, लकड़ी और मछली बेचनेवालों तथा मोची के छोटे-छोटे क़र्ज़ों के तगादों से बच सके, जिन्होंने उसके नाक में दम कर रखा था। इसके अलावा उसे गांव जाना इसलिये भी अच्छा लग रहा था कि बहन कीटी को भी, जो गर्मी के मध्य में विदेश से लौटनेवाली थी और जिसके लिये डाक्टरों ने नदी-स्नान की सिफ़ारिश की थी, अपने पास वहां बुला लेगी। कीटी ने विदेश से लिखा था कि उसके लिये इससे ज़्यादा और कोई सुखद बात नहीं हो सकती थी कि वह येर्गूशोवो में, जो दोनों बहनों के लिये बचपन की स्मृतियों से भरपूर था, डौली के साथ गर्मियां बिताये।

शुरू में तो गांव का जीवन डौली के लिये बहुत कठिन रहा। वह तो बचपन में गांव में रही थी और उसके मन पर कुछ ऐसी छाप रह

गयी थी कि गांव नगर की सभी कटुताओं से बचने की जगह है, कि वहां जीवन बेशक सुन्दर नहीं है (डौली ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया), मगर सस्ता और आरामदेह है। वहां सब कुछ उपलब्ध है, सब कुछ सस्ता है, सब कुछ हासिल किया जा सकता है और बच्चे ख़ूब मज़े में रहते हैं। किन्तु अब गृह-स्वामिनी के रूप में गांव आने पर उसने देखा कि यह सब कुछ वैसा नहीं है, जैसा उसने सोचा था।

गांव में उनके आने के दूसरे ही दिन मूसलधार बारिश हुई और रात को दालान तथा बच्चों के कमरे में पानी चूने लगा। इसलिये चारपाइयां मेहमानख़ाने में ले जानी पड़ीं। घर में बावर्चिन नहीं थी। पशु-पालिका के शब्दों में नौ गउओं में से कुछ ब्यानेवाली थीं, कुछ पहली बार ब्यायी थीं, कुछ बूढ़ी थीं और कुछ कठोर थनोंवाली थीं। बच्चों तक को न दूध और न मक्खन मिलता था। अंडे भी नहीं थे। मुर्ग़ी ख़रीदना मुमकिन नहीं था। इसलिये बूढ़े, सख़्त नसों और काकरेज़ी मांसवाले मुर्ग़े उबालने तथा तलने पड़ते थे। फ़र्शों को धोने के लिये औरतें ढूंढ़ पाना सम्भव नहीं था -- सभी आलुओं के खेतों में काम कर रही थीं। सवारी भी नहीं की जा सकती थी, क्योंकि एक घोड़ा बहुत उद्दंड था और गाड़ी में जुतने को तैयार नहीं था। नदी पर नहाने की कहीं जगह नहीं थी -- सारे तट पर पशुओं का जमघट था और वह सड़क की ओर से खुला था। सैर के लिये जाना भी मुमकिन नहीं था क्योंकि पशु टूटी हुई बाड़ लांघ कर बाग़ में आ जाते थे। पशुओं में एक भयानक सांड भी था, जो गरजता था और शायद सींग भी मारता था। कपड़ों के लिये अलमारियां नहीं थीं। जो थीं भी, वे बन्द नहीं होती थीं और जब कोई उनके पास से गुज़रता था, तो अपने आप खुल जाती थीं। पतीले-कड़ाहियां नहीं थीं, कपड़े धोने का टब और नौकरानी द्वारा कपड़ों पर इस्तरी करने के लिये तख़्ता तक नहीं था।

डौली की दृष्टि से इन भयानक मुसीबतों में पड़ जाने पर आरम्भ में तो आराम और चैन की जगह उसे हताशा अनुभव हुई। वह अपनी हर कोशिश करती, अपनी लाचारी की हालत को अनुभव करती और हर घड़ी छलकने को बेचैन आंसुओं को बड़ी मुश्किल से रोकती। कारिन्दा, जो भूतपूर्व सार्जेन्ट था और जिसे ओब्लोन्स्की ने उसकी सुन्दर तथा प्रभावपूर्ण शक्ल-सूरत पर मुग्ध होकर दरबान से कारिन्दा

बना दिया था, डौली की मुसीबतों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता था और बड़े आदर से यही कहता रहता था: "कुछ भी तो नहीं हो सकता, ऐसे बेहूदा लोग हैं," और किसी चीज़ में मदद नहीं करता था।

स्थिति बहुत ही निराशाजनक लग रही थी। किन्तु, जैसे कि अन्य सभी परिवारों में होता है, ओब्लोन्स्की के घर में भी नज़र में न आनेवाला, मगर बहुत ही उपयोगी एक व्यक्ति था। इस व्यक्ति का नाम था – मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना। वह अपनी मालकिन को तसल्ली देती, विश्वास दिलाती कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा (ये उसी के शब्द थे, जिन्हें मात्वेई ने रट लिया था) और ख़ुद बड़े इतमीनान से तथा घबराहट के बिना अपनी कोशिश करती रही।

कारिन्दे की बीवी के साथ वह फ़ौरन घुल-मिल गयी और पहले ही दिन उसने अकासिया झाड़ियों की छाया में बैठकर कारिन्दे और उसकी बीवी के साथ चाय पी और सभी मामलों पर सोच-विचार किया। जल्द ही अकासिया झाड़ियों के नीचे मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना का क्लब बन गया और इस क्लब के ज़रिये, जिसमें कारिन्दे की बीवी, गांव का लम्बरदार और दफ़्तर का मुंशी शामिल था, धीरे-धीरे ज़िन्दगी की मुसीबतों को दूर किया जाने लगा तथा एक सप्ताह बाद सचमुच ही सब कुछ ठीक-ठाक हो गया। छत की मरम्मत कर दी गयी, लम्बरदार की एक रिश्तेदार बावर्चिन के रूप में मिल गयी, मुर्गियां ख़रीद ली गयीं, गउएं दूध देने लगीं, बाग़ के गिर्द बांसों की बाड़ लगा दी गयी, बढ़ई ने बेलन बना दिया, अलमारियों में हुकें लगा दी गयीं और अब वे अपने आप नहीं खुलती थीं, फ़ौजी वर्दी के कपडे से लिपटा हुआ इस्तरी करने का तख़्ता अलमारी और कुर्सी के हत्थे पर टिका दिया गया तथा नौकरानी के कमरे से इस्तरी की गन्ध आने लगी।

"देखा न! और आप हिम्मत हारे जा रही थीं," मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना ने तख़्ते की ओर संकेत करते हुए कहा।

फूस की टट्टी लगाकर नहाने की जगह भी बना ली गयी। लिली नहाने लग गयी और डौली के लिये चैन की तो नहीं, मगर आरामदेह ज़िन्दगी का सपना कुछ हद तक साकार हो गया। छः बच्चों के साथ डौली चैन तो पा ही नहीं सकती थी। कोई एक बीमार हो जाता था, दूसरा बीमार हो सकता था, तीसरे को कोई चीज़ नहीं मिलती थी,

चौथे में बुरे स्वभाव के कुछ लक्षण नज़र आने लगते थे, आदि, आदि। बहुत कम ही चैन की कुछ घड़ियां आती थीं। लेकिन ऐसी दौड़-धूप और बेचैनी ही डौली के लिये एकमात्र सम्भव सुख थीं। अगर यह सब कुछ न होता, तो वह अपने पति से सम्बन्धित विचारों में घुलती रहती, जो उसे प्यार नहीं करता था। लेकिन इसके अलावा बच्चों की बीमारी का भय और स्वयं बीमारियां तथा उनमें बुरे झुकावों के लक्षण मां के लिये चाहे कितने ही कष्टप्रद क्यों न थे, ख़ुद बच्चे भी अब छोटी-छोटी ख़ुशियां देकर उसकी चिन्ताओं का मुआवज़ा चुकाने लगे थे। यह ख़ुशियां इतनी छोटी-छोटी थीं कि बालू में स्वर्ण-कणों की भांति दिखाई नहीं देती थीं और बुरे क्षणों में उसे सिर्फ़ बालू ही नज़र आती थी। किन्तु ऐसे अच्छे क्षण भी आते थे, जब वह केवल ख़ुशियां, केवल स्वर्ण ही देखती थी।

गांव के एकान्त में उसे अब इन ख़ुशियों की अधिकाधिक अक्सर चेतना होने लगी। उन्हें देखते हुए वह बहुधा अपने को यह विश्वास दिलाने की पूरी कोशिश करती कि उससे भूल हो रही है, कि मां होने के नाते वह अपने बच्चों के प्रति पक्षपात करती है। फिर भी वह अपने से यह कहे बिना न रह पाती कि उसके सभी, छः के छः बच्चे, अपने-अपने ढंग से बहुत अच्छे हैं, लेकिन ऐसे, जैसे दुर्लभ ही होते हैं और वह उनकी बदौलत सुखी थी और उन पर गर्व करती थी।

(८)

मई के अन्त में, जब कमोबेश सभी कुछ ठीक-ठाक हो गया था, डौली को गांव की गड़बड़ हालत के बारे में लिखे गये पत्र का अपने पति से जवाब मिला। उसने इस बात के लिये क्षमा मांगी कि सभी बातों का ध्यान नहीं रख पाया और यह वादा किया कि मौक़ा मिलते ही फ़ौरन गांव पहुंचेगा। ऐसा मौक़ा नहीं आया और जून के शुरू तक डौली गांव में अकेली ही रही।

सन्त पीटर्स से पहले एक दिन, इतवार को डौली अपने सभी बच्चों को प्रार्थना के लिये घोड़ा-गाड़ी में गिरजे ले गयी। बहन, मां और मित्र-सहेलियों के साथ अपनी दिली और दार्शनिक बातचीत के

दौरान धर्म के बारे में अपने स्वतन्त्र विचारों से वह उन्हें बहुत अक्सर हैरान करती थी। उसका अपना, आवागमन का अजीब धर्म था, जिसमें उसकी दृढ़ आस्था थी, और गिरजे के जड़ सूत्रों की वह बहुत परवाह नहीं करती थी। लेकिन परिवार में वह गिरजे की सभी मांगों का कड़ाई से पालन करती थी और सो भी मिसाल पेश करने के लिये नहीं, बल्कि सच्चे दिल से। लगभग एक साल से बच्चे धार्मिक अनुष्ठान में नहीं गये थे, उसे इस बात से बहुत परेशानी हो रही थी और मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना के पूरे समर्थन तथा सहानुभूति से उसने अब गर्मी में ऐसा करने का निर्णय किया।

डौली ने कई दिन पहले से ही इस बात पर सोच-विचार किया कि सभी बच्चों को कैसे पहनाया-ओढ़ाया जाये। पोशाकें सी गयीं, ठीक-ठाक की गयीं, धोयी गयीं, मग़ज़ी उधेड़ी और चुन्नटें खोली गयीं, बटन टांके गये तथा रिबन तैयार किये गये। तान्या के फ़ाक ने, जिसे सीने का ज़िम्मा अंग्रेज़ शिक्षिका ने लिया था, डौली को बहुत परेशान किया। अंग्रेज़ शिक्षिका ने ग़लत जगह पर चुन्नटें डाल दीं, आस्तीनों के सूराख़ बहुत चौड़े कर दिये और फ़ाक को लगभग बिगाड़ डाला। तान्या के कंधों पर वह ऐसे तंग और कसा हुआ था कि देखकर दिल को कुछ होता था। लेकिन मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना को कलियां जोड़ने और ऊपर से एक छोटा-सा केप डाल देने का अच्छा विचार सूझ गया। बात बन गयी, लेकिन अंग्रेज़ शिक्षिका के साथ तो झगड़ा होते-होते बचा। इतवार की सुबह तक सब कुछ ठीक-ठाक हो गया था और नौ बजते-बजते – इसी वक़्त तक पादरी से प्रार्थना शुरू न करने का अनुरोध किया गया था – ख़ुशी से चमकते-दमकते और बढ़िया पोशाकें पहने बच्चे चबूतरे के पास, बग्घी के सामने खड़े होकर मां के आने का इन्तज़ार कर रहे थे।

मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना के कहने पर उद्दंड मुश्की घोड़े की जगह कारिन्दे का भूरा घोड़ा बग्घी में जोता गया था और अपनी पोशाक की चिन्ता के कारण देर करनेवाली डौली मलमल की सफ़ेद पोशाक पहने हुए बाहर आई।

डौली ने बड़े ध्यान और उत्तेजना से अपने बाल संवारे तथा कपड़े पहने थे। पहले वह अपने लिये कपड़े पहनती थी, ताकि सुन्दर लगे और

दूसरों के मन मोह सके। बाद में, वह ज्यों-ज्यों बुढ़ाती गयी, उसे कपड़े पहनना अखरने लगा। वह देखती थी कि उसकी शक्ल-सूरत कितनी ख़राब हो गयी है। किन्तु अब वह फिर ख़ुशी से तथा उत्तेजना अनुभव करते हुए पहनती-ओढ़ती थी। अब वह अपने लिये, अपनी सुन्दरता के लिये नहीं, बल्कि इसलिये अच्छे ढंग से कपड़े पहनती थी कि इन प्यारे-प्यारे बच्चों की मां होने के नाते वह सामान्य प्रभाव को न ख़राब करे। दर्पण में अन्तिम बार अपने को निहारने पर उसे सन्तोष की अनुभूति हुई। वह बहुत अच्छी लग रही थी। वैसी अच्छी तो नहीं, जैसी कि वह कभी बॉल के समय अच्छी दिखना चाहती थी, लेकिन उस उद्देश्य के लिये अच्छी थी, जो अब उसके सामने था।

गिरजे में किसानों, नौकरों-चाकरों और उनकी बीवियों के सिवा कोई नहीं था। लेकिन डौली ने देखा, या फिर उसे ऐसा लगा कि बच्चों और ख़ुद उसे भी सभी प्रशंसा की नज़र से देख रहे हैं। बढ़िया पोशाकें पहने हुए बच्चे न केवल ख़ुद ही प्यारे लग रहे थे, बल्कि अपने अच्छे तौर-तरीक़ों से भी दूसरों को मुग्ध कर रहे थे। यह सच है कि अल्योशा बहुत अच्छी तरह नहीं खड़ा था, रह-रह कर मुड़ता और पीठ पर अपनी जाकेट को देखना चाहता था, लेकिन फिर भी वह असाधारण रूप से प्यारा लग रहा था। तान्या बड़ों की तरह खड़ी थी और छोटों की देखभाल कर रही थी। किन्तु छोटी लिली इन सब चीज़ों को देखते हुए अपने भोले-भाले आश्चर्य के कारण बहुत प्यारी लग रही थी और धार्मिक अनुष्ठान के पूरा होने पर जब उसने अंग्रेज़ी में यह कहा: "Please some more",* तो मुस्कराये बिना नहीं रहा जा सकता था।

घर लौटते हुए बालक ऐसा अनुभव कर रहे थे कि कुछ गम्भीर तथा समारोही बात हुई है और इसलिये वे बहुत शान्त रहे।

घर पर भी सब कुछ अच्छा रहा, मगर नाश्ते के वक़्त ग्रीशा ने सीटी बजानी शुरू कर दी और इससे भी बुरा यह किया कि अंग्रेज़ शिक्षिका की बात नहीं मानी और इसलिये दण्ड के रूप में उसे केक से वंचित कर दिया गया। डौली अगर ख़ुद मौक़े पर होती, तो ऐसे दिन सज़ा देने की नौबत न आने देती। लेकिन अब तो अंग्रेज़ शिक्षिका के निर्णय का

---

* कृपया थोड़ा और। (अंग्रेज़ी)

समर्थन ज़रूरी था और इसलिये उसने भी यह कह दिया कि ग्रीशा को नहीं केक मिलेगा। इससे ख़ुशी का सामान्य वातावरण कुछ बिगड़ गया।

ग्रीशा यह कहता हुआ रो रहा था कि निकोलाई भी सीटी बजा रहा था, लेकिन उसे सज़ा नहीं दी गयी, और वह केक के लिये नहीं रोता है – उसे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता – बल्कि इसलिये रोता है कि उसके साथ बेइंसाफ़ी हुई है। यह तो और भी ज़्यादा दुख की बात थी और डौली ने अंग्रेज़ शिक्षिका के साथ बातचीत करके ग्रीशा को माफ़ कर देने का फ़ैसला कर लिया। इसी उद्देश्य से वह अंग्रेज़ शिक्षिका की ओर चल दी और हॉल को लांघते हुए उसे दिल को इतना अधिक ख़ुश करनेवाला नज़ारा दिखाई दिया कि उसकी आंखों में आंसू आ गये और उसने ख़ुद ही क़सूरवार को माफ़ कर दिया।

सज़ा पानेवाला ग्रीशा हॉल की कोनेवाली खिड़की में बैठा था और उसके क़रीब ही हाथ में तश्तरी लिये हुए तान्या खड़ी थी। गुड़ियों को भोजन कराने का बहाना करके तान्या ने अंग्रेज़ शिक्षिका से अपने हिस्से का केक बच्चों के कमरे में ले जाने की अनुमति ले ली और उसे हॉल में भाई के पास ले आई। सज़ा के रूप में उसे जिस बेइंसाफ़ी का शिकार होना पड़ा था, उसके बारे में रोना जारी रखते हुए वह केक खा रहा था और सिसकते हुए उसने कहा: "ख़ुद भी खाओ, दोनों मिलकर खायेंगे ... दोनों मिलकर।"

तान्या का दिल शुरू में ग्रीशा के लिये दया और इसके बाद अपने नेक काम की चेतना से भर आया तथा उसकी आंखें भी नम हो गयीं। किन्तु केक से इन्कार न करके वह भी अपना हिस्सा खाती जा रही थी।

मां को देखकर वे सहम गये, किन्तु उसके चेहरे को ध्यान से देखने पर समझ गये कि ठीक काम कर रहे हैं, ज़ोर से हंस पड़े और केक से मुंह भरे हुए अपने मुस्कान से फैले होंठों को हाथों से पोंछने लगे और खिले चेहरों पर आंसू तथा मुरब्बा पोत लिया।

"हे भगवान! नया सफ़ेद फ़्राक! तान्या! ग्रीशा!" मां ने फ़्राक को बचाने की कोशिश करते हुए कहा, किन्तु उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे और उसके होंठों पर बड़ी सुखद तथा आनन्दपूर्ण मुस्कान थी।

नयी पोशाकें उतरवा ली गयीं, लड़कियों को ब्लाउज़ और लड़कों को पुरानी जाकेटें पहनने को कहा गया, खुली बग्घी जोतने का आदेश

दिया गया तथा कारिन्दे की इच्छा के विरुद्ध उसमें फिर से उसका भूरा घोड़ा जोता गया। खुमियां बटोरने और नदी में नहाने के लिये जाने का निर्णय किया गया था। बच्चों के कमरे से ख़ुशी भरी किलकारियां सुनाई दीं और वे नहाने के लिये रवाना हो जाने तक शान्त नहीं हुईं।

खुमियों से पूरी टोकरी भर ली गयी। लिली तक ने खुमी ढूंढ़ ली। पहले तो ऐसा होता था कि शिक्षिका मिस गूल खुमी ढूंढ़कर लिली को दिखा देती, लेकिन इस बार तो ख़ुद उसी ने बड़ी-सी खुमी ढूंढ़ी तथा सभी ख़ुशी से चिल्ला उठे: "लिली ने बड़ी-सी खुमी ढूंढ़ी है!"

इसके बाद बग्घी को नदी के तट पर ले जाया गया, घोड़ों को भोज वृक्षों के नीचे खड़ा करके सब नहाने चल दिये। कोचवान तेरेन्ती ने मक्खियों से बचने के लिये पूंछ हिलाते घोड़ों को एक वृक्ष से बांधा, घास को कुचलते हुए भोज वृक्षों की छाया में लेट गया और देसी तम्बाकू पीने लगा। नहाने के लिये टट्टी लगाकर बनायी गयी जगह से बच्चों की ख़ुशी भरी किलकारियां उसे लगातार सुनाई देती रहीं।

बेशक सभी बच्चों की देखभाल करना तथा उनकी शरारतों को रोकना काफ़ी परेशानी का काम था, बेशक सभी की जुर्राबों, सुथनियों, विभिन्न पैरों के जूतों को याद रखना तथा गड़बड़ न करना, फ़ीते और बटन खोलना तथा उन्हें फिर से बांधना और बन्द करना मुश्किल काम था, फिर भी डौली को, जो ख़ुद नदी-स्नान को हमेशा बहुत पसन्द करती रही थी और जिसे बच्चों के लिये भी स्वास्थ्यप्रद मानती थी, किसी भी और चीज़ से इतना अधिक आनन्द नहीं मिलता था, जितना बच्चों के साथ ऐसे नहाने से। उनकी गुदगुदी टांगों को छूना, उन पर जुर्राबें चढ़ाना, उनके छोटे-छोटे नंगे शरीरों को हाथों में लेकर डुबकियां लगवाना, कभी ख़ुशी भरी और कभी डरी हुई चीखों को सुनना, फैली-फैली, डरी-डरी और ख़ुशी से चमकती आंखों वाले चेहरों तथा इन हांफते हुए अपने छोटे-छोटे फ़रिश्तों को देखना उसके लिये बहुत ही आह्लादपूर्ण था।

आधे बच्चे जब कपड़े पहन चुके थे, तो जंगली फल-फूलों को चुनती और सजी-धजी देहाती औरतें स्नान-स्थान के क़रीब आईं और सहमी-सहमी-सी रुक गयीं। मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना ने उनमें से एक को पानी में गिर गयी चादर और क़मीज़ को सुखाने के लिये पुकार लिया।

डौली इन देहाती औरतों से बातें करने लगी। शुरू में मुंह पर हाथ रखकर हंसने और प्रश्नों को न समझनेवाली इन देहाती औरतों की जल्द ही झेंप दूर हो गयी, वे बातें करने लगीं तथा तुरन्त हीं उन्होंने बच्चों के प्रति अपने सच्चे प्रशंसा भाव से, जिसे वे स्पष्ट रूप से प्रकट कर रही थीं, डौली का मन जीत लिया।

"अरे, कैसी ख़ुबसूरत है वह, चीनी-सी सफेद-सफेद," तान्या को मुग्ध होकर देखती और सिर हिलाती हुई एक किसान औरत ने कहा। "पर कित्ती दुबली-पतली ..."

"हां, यह बीमार रही है।"

"अरे, या को भी नहलायो गयो," दूसरी ने गोद के बेटे के बारे में कहा।

"नहीं, वह तो अभी तीन महीने का है," डौली ने गर्व से जवाब दिया।

"अरे वाह!"

"तुम्हारे बच्चे हैं?"

"चार थे, दू रह गये – बेटो और बिटिया। पिछले धार्मिक पर्व पर दूध छुड़वाया है।"

"कितनी उम्र है इसकी?"

"दूसरो बरस चल रहयो।"

"तो क्या इतनी देर तक दूध पिलाती रहीं?"

"हम तो ऐसो ही करत – तीन बरत तक।"

और डौली के लिये बातचीत बहुत ही दिलचस्प हो गयी – प्रसूति कैसी रही? बेटे को क्या बीमारी हुई थी? पति कहां है? अक्सर आता है या नहीं?

डौली को देहाती औरतों के साथ अपनी बातचीत इतनी दिलचस्प लग रही थी, इनकी रुचियां इतनी अधिक समान थीं कि उसका मन उन्हें छोड़कर जाने को नहीं हो रहा था। डौली के लिये सबसे अधिक सुखद बात स्पष्ट रूप से यह देखना था कि ये औरतें सबसे ज़्यादा तो इस तथ्य पर मूग्ध हो रही थीं कि उसके इतने अधिक और ऐसे प्यारे बच्चे हैं। इन औरतों ने डौली को हंसाया और अंग्रेज़ शिक्षिका मिस गूल को इस बात के लिये नाराज़ भी कर दिया कि वही, उसकी

समझ में न आनेवाली हंसी का कारण थी। एक जवान देहाती औरत सबसे बाद में कपड़े पहननेवाली अंग्रेज़ शिक्षिका को ध्यान से देख रही थी और जब उसने तीसरा स्कर्ट पहना, तो वह यह टिप्पणी किये बिना न रह सकी: "अरे वाह, पहनत जात है, पहनत जात है, बस करने का नाम ही न लेवत," उसने कहा और वे सभी की सभी ठठाकर हंस पड़ीं।

(६)

नहाये-धोये और गीले बालोंवाले बच्चों से घिरी और ख़ुद अपने सिर पर रूमाल बांधे डौली घर के क़रीब पहुंच रही थी, जब कोचवान ने कहा:

"कोई साहब आ रहे हैं, पोक्रोव्स्कोये गांव वाले लगते हैं।"

डौली ने ग़ौर से सामने की तरफ़ देखा और सलेटी रंग के टोप तथा सलेटी रंग के ओवरकोट में लेविन को पहचानकर, जो उनकी तरफ़ आ रहा था, बहुत ख़ुश हुई। उसके आने पर वह हमेशा ही ख़ुश होती थी और अब ख़ास तौर पर इसलिये ख़ुश हुई कि लेविन उसे उसकी पूरी भव्यता के साथ देख सकेगा। उसकी गरिमा को लेविन से अधिक अच्छी तरह तो कोई भी नहीं समझ सकता था।

डौली को देखने पर उसकी आंखों के सामने भावी पारिवारिक जीवन के बारे में उसकी कल्पना का एक चित्र प्रस्तुत हो गया।

"आप तो बिल्कुल अपने चूज़ों से घिरी हुई मुर्ग़ी जैसी लग रही हैं, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना।"

"ओह, कितनी ख़ुश हूं मैं आपके आने से!" लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा।

"ख़ुश हैं, मगर आपने यहां आने के बारे में ख़बर नहीं भेजी। मेरे यहां बड़ा भाई आया हुआ है। स्तीवा की चिट्ठी से यह पता चला कि आप यहां हैं।"

"स्तीवा की चिट्ठी से?" डौली ने हैरान होकर पूछा।

"हां, उसने लिखा है कि आप यहां आई हुई हैं और उसका ख़्याल है कि आप मुझे किसी चीज़ में मदद करने की अनुमति देंगी,"

समझ में न आनेवाली हंसी का कारण थी। एक जवान देहाती औरत सबसे बाद में कपड़े पहननेवाली अंग्रेज़ शिक्षिका को ध्यान से देख रही थी और जब उसने तीसरा स्कर्ट पहना, तो वह यह टिप्पणी किये बिना न रह सकी: "अरे वाह, पहनत जात है, पहनत जात है, बस करने का नाम ही न लेवत," उसने कहा और वे सभी की सभी ठठाकर हंस पड़ीं।

(९)

नहाये-धोये और गीले बालोंवाले बच्चों से घिरी और ख़ुद अपने सिर पर रूमाल बांधे डौली घर के क़रीब पहुंच रही थी, जब कोचवान ने कहा:

"कोई साहब आ रहे हैं, पोक्रोव्स्कोये गांव वाले लगते हैं।"

डौली ने ग़ौर से सामने की तरफ़ देखा और सलेटी रंग के टोप तथा सलेटी रंग के ओवरकोट में लेविन को पहचानकर, जो उनकी तरफ़ आ रहा था, बहुत ख़ुश हुई। उसके आने पर वह हमेशा ही ख़ुश होती थी और अब ख़ास तौर पर इसलिये ख़ुश हुई कि लेविन उसे उसकी पूरी भव्यता के साथ देख सकेगा। उसकी गरिमा को लेविन से अधिक अच्छी तरह तो कोई भी नहीं समझ सकता था।

डौली को देखने पर उसकी आंखों के सामने भावी पारिवारिक जीवन के बारे में उसकी कल्पना का एक चित्र प्रस्तुत हो गया।

"आप तो बिल्कुल अपने चूज़ों से घिरी हुई मुर्ग़ी जैसी लग रही हैं, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना।"

"ओह, कितनी ख़ुश हूं मैं आपके आने से!" लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा।

"ख़ुश हैं, मगर आपने यहां आने के बारे में ख़बर नहीं भेजी। मेरे यहां बड़ा भाई आया हुआ है। स्तीवा की चिट्ठी से यह पता चला कि आप यहां हैं।"

"स्तीवा की चिट्ठी से?" डौली ने हैरान होकर पूछा।

"हां, उसने लिखा है कि आप यहां आई हुई हैं और उसका ख़्याल है कि आप मुझे किसी चीज़ में मदद करने की अनुमति देंगी,"

लेविन ने कहा और यह कहकर अचानक झेंप गया तथा बात को अधूरी छोड़कर चुपचाप बग्घी के साथ चलता हुआ लाइम वृक्ष की कोंपलें तोड़कर कुतरता रहा। वह यह सोचकर झेंप गया था कि डौली को उस काम के लिये किसी पराये आदमी की मदद पाकर ख़ुशी नहीं होगी, जिसे उसके पति को करना चाहिये था। डौली को सचमुच ही अपने पारिवारिक काम-काजों को दूसरों के मत्थे मढ़ देने की स्तीवा की यह आदत पसन्द नहीं थी। वह फ़ौरन यह समझ गयी कि लेविन को इस बात का एहसास है। मामले की बारीकी को समझने की इस क्षमता, भावनाओं की इस सूक्ष्मता के लिये ही डौली को लेविन अच्छा लगता था।

"ज़ाहिर है, मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि आप मुझसे मिलना चाहती हैं और मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है। निश्चय ही मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि शहरी घर-गिरस्ती चलाने वाली आप जैसी महिला को यहां सब कुछ बड़ा अटपटा-सा लगता होगा। इसलिये अगर किसी तरह की कोई ज़रूरत महसूस हो, तो मैं पूरी तरह आपकी सेवा में हाज़िर हूं।"

"अजी नहीं!" डौली ने जवाब दिया। "शुरू में कुछ परेशानी हुई, मगर अब तो मेरी बूढ़ी आया की बदौलत सब कुछ ठीक-ठाक हो गया है," उसने मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना की तरफ़ संकेत करते हुए कहा। मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना यह समझते हुए कि उसी की चर्चा चल रही है, ख़ुशी भरी और मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ लेविन की तरफ़ देखकर मुस्करा दी। वह लेविन को जानती थी और उसे यह भी मालूम था कि वह डौली की छोटी बहन के लिये अच्छा वर है तथा यह चाहती थी कि मामला सिरे चढ़ जाये।

"कृपया बग्घी में बैठ जाइये, हम थोड़ा खिसक जायेंगी," मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना ने लेविन से कहा।

"नहीं, मैं पैदल जाऊंगा। बच्चो, कौन घोड़ों से होड़ करने के लिये मेरे साथ चलेगा?"

बच्चे लेविन को बहुत कम जानते थे, उन्हें याद नहीं था कि कब उससे मिले थे, किन्तु उन्होंने उसके मामले में संकोच और अरुचि का वह भाव नहीं दिखाया, जो ढोंग करनेवाले वयस्कों के प्रति बच्चे अनुभव करते हैं और जिसके कारण उन्हें अक्सर तथा ख़ासी कड़ी डांट पड़ती है।

बहुत ही समझदार और अत्यधिक पैनी नज़र रखनेवाले व्यक्ति की आंखों में भी ढोंग धूल झोंक सकता है, किन्तु बहुत ही कम समझ रखनेवाले बालक को भी, चाहे यह ढोंग कितनी ही चालाकी से क्यों न छिपाया गया हो, धोखा नहीं दे सकता और उसे उससे घृणा अनुभव होती है। लेविन में बेशक और कैसी भी कमियां-त्रुटियां क्यों न हों, ढोंग या बनावट तो लेश मात्र नहीं थी और इसलिये उन्होंने उसके प्रति वैसा ही मैत्री भाव दिखाया, जैसा कि उन्हें मां के चेहरे पर दिखाई दिया था। लेविन के निमन्त्रण पर दो बड़े बच्चे फ़ौरन बग्घी से कूदकर उसके पास पहुंच गये और उसके साथ वैसी ही सहजता से भागने लगे, जैसे आया, मिस गूल या अपनी मां के साथ भागते। लिली ने भी उसके पास जाना चाहा और मां ने उसे लेविन को दे दिया। लेविन ने उसे कंधे पर बिठा लिया और भागने लगा।

"घबराइये नहीं, घबराइये नहीं, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना!" ख़ुशी से डौली की ओर मुस्कराते हुए उसने कहा, "यह तो मुमकिन ही नहीं कि मैं इसे चोट लगा दूं या गिरा दूं।"

लेविन की फुर्तीली, शक्तिशाली, अत्यधिक सावधान, चिन्ता और तनावपूर्ण गतिविधियों को देखकर मां शान्त हो गयी और ख़ुशी तथा अनुमोदन प्रकट करती हुई उसकी तरफ़ देखकर मुस्करा दी।

यहां, गांव में, बच्चों और डौली की संगत में, जो उसे अच्छी लगती थी, लेविन उस पर अक्सर हावी होनेवाले बाल-सुलभ तथा ख़ुशी-भरे मूड में आ गया, जो डौली को विशेष रूप से पसन्द था। बच्चों के साथ भागता हुआ वह उन्हें कसरत सिखाता, मिस गूल को अपनी भद्दी अंग्रेज़ी बोलकर हंसाता और डौली को यह बताता कि गांव में क्या करता रहता है।

दोपहर के खाने के बाद, जब डौली लेविन के साथ छज्जे में अकेली बैठी थी, तो उसने कीटी की चर्चा शुरू कर दी।

"आप जानते हैं, कीटी यहां आ रही है और वह मेरे साथ गर्मी बितायेगी।"

"सच?" लेविन ने झेंप से लाल होते हुए कहा और उसी वक़्त बातचीत का विषय बदलने के लिये बोला: "तो आपको दो गउएं

भिजवा दूं? अगर आप हिसाब चुकाना ही चाहें और अगर आपको ऐसा करते हुए लाज न आये, तो हर महीने मुझे पांच रूबल दे सकती हैं।"

"नहीं, बड़ी मेहरबानी। हमारे यहां सब कुछ ठीक चल रहा है।"

"तो मैं आपकी गउएं देख लूंगा और अगर अनुमति देंगी तो यह समझा दूंगा कि उन्हें कैसे चराया जाये। चारा ही तो असली चीज़ है।"

और लेविन ने बातचीत को बदलने के उद्देश्य से ही डौली को दूध-उत्पादन का सिद्धान्त स्पष्ट किया, जिसका मुख्य भाव यह था कि गाय चारे को दूध में बदलनेवाली मशीन के सिवा कुछ नहीं है, इत्यादि।

लेविन यह सब कह रहा था और कीटी के बारे में तफ़सीलें जानने को बहुत उत्सुक था, मगर साथ ही इससे डर भी रहा था। उसे इस बात की शंका थी कि बड़ी मुश्किल से हासिल किया गया उसके मन का चैन फिर से खो जायेगा।

"हां, यह सब तो ठीक है, लेकिन इन सब चीज़ों की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है, वह कौन करेगा?" डौली ने मन मारकर उत्तर दिया।

मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना की मदद से डौली ने अपनी घर-गिरस्ती ऐसे जमा ली थी कि अब वह उसमें किसी भी तरह की तब्दीली नहीं करना चाहती थी। इसके अलावा खेतीबारी सम्बन्धी लेविन की जानकारी में उसे विश्वास नहीं था। इस विचार के बारे में उसे सन्देह था कि गाय दूध बनानेवाली मशीन ही है। उसे लगा कि इस क़िस्म के विचार कृषि-व्यवस्था में केवल बाधा ही डाल सकते हैं। उसे प्रतीत हुआ कि यह सब कहीं अधिक सीधा-सरल मामला है, कि सिर्फ़, जैसा कि मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना ने समझाया था, चितकबरी और सफ़ेद पुट्ठे वाली गाय को अधिक चारा-पानी देना चाहिये, कि बावर्ची रसोईघर में बची-खुची खाने-पीने की चीज़ों और जूठन को धोबिन की गाय के लिये न ले जाये। यह सब कुछ समझ में आता था। मगर अनाज और घास के चारे के बारे में तर्क-वितर्क अस्पष्ट और सन्देहपूर्ण थे। फिर मुख्य बात तो यह थी कि वह कीटी की चर्चा करना चाहती थी।

"कीटी ने मुझे लिखा है कि वह एकान्त और शान्ति से अधिक और कुछ नहीं चाहती," डौली ने मौन छा जाने पर कहा।

"उसका स्वास्थ्य अब अच्छा है क्या?" लेविन ने बेचैनी अनुभव करते हुए पूछा।

"भगवान की दया से वह बिल्कुल स्वस्थ हो गयी है। मुझे कभी यह यक़ीन नहीं हुआ था कि उसे तपेदिक़ है।"

"ओह, मुझे बड़ी ख़ुशी है!" लेविन ने कहा। डौली को लगा कि जब लेविन ने ऐसा कहा और चुपचाप उसकी तरफ़ देखता रहा, तो उसके चेहरे पर मन को कुछ छूनेवाला और लाचारी का भाव था।

"कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, मुझे यह बताइये," डौली ने अपनी दयालु और तनिक उपहासजनक मुस्कान के साथ कहा, "आप कीटी से किसलिये नाराज़ हैं?"

"मैं? मैं नाराज़ नहीं हूं," लेविन ने जवाब दिया।

"नहीं, आप नाराज़ हैं। आप जब मास्को गये थे, तो हमारे और उनके यहां क्यों नहीं आये थे?"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," लेविन ने शर्म से पानी-पानी होते हुए जवाब दिया, "मुझे इस बात की हैरानी हो रही है कि आप, अपनी दयालुता के बावजूद इस बात को अनुभव नहीं कर रही हैं। आपको मुझ पर तरस क्यों नहीं आ रहा, जबकि आप यह जानती हैं..."

"क्या जानती हूं मैं?"

"यह जानती हैं कि मैंने प्रस्ताव किया और मुझे इन्कार कर दिया गया," लेविन ने कहा और वह कोमल भावना, जो क्षण भर पहले उसने कीटी के लिये अनुभव की थी, तिरस्कार के लिये ग़ुस्से की भावना में बदल गयी।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि मैं जानती हूं?"

"क्योंकि सभी यह जानते हैं..."

"यह आपकी भूल है। मैं यह नहीं जानती थी, यद्यपि कुछ अनुमान ज़रूर लगाती थी।"

"अच्छा! अब तो आप जानती हैं।"

"मैं सिर्फ़ इतना जानती थी कि कोई बात हुई है, जो उसे बहुत यातना दे रही थी और यह कि उसने कभी भी इसकी चर्चा न करने का मुझसे अनुरोध किया था। अगर उसने मुझे यह नहीं बताया, तो किसी को भी नहीं बताया। लेकिन क्या हुआ था आप दोनों के बीच? मुझे बताइये।"

"मैंने बता दिया है कि क्या हुआ था।"

"कब हुआ था यह?"

"जब मैं आख़िरी बार आपके यहां गया था।"

"जानते हैं कि मैं आप से क्या कहना चाहती हूं," डौली बोली, "मुझे बहुत, बहुत ही अफ़सोस है उसके लिये। आप तो केवल आत्माभिमान की भावना से व्यथित हैं..."

"हो सकता है," लेविन ने कहा, "लेकिन..."

डौली ने उसकी बात काटी:

"लेकिन उस बेचारी के लिये मुझे बहुत, बहुत ही अफ़सोस है। अब मैं सब कुछ समझती हूं।"

"मगर, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं," लेविन ने उठते हुए कहा। "विदा! दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, फिर मिलेंगे।"

"नहीं, रुकिये," लेविन की आस्तीन थामते हुए उसने कहा। "रुकिये, बैठिये।"

"कृपया, कृपया हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे," लेविन ने बैठते हुए कहा और साथ ही उसे यह अनुभव हुआ कि वह उम्मीद, जो उसे दफ़न हो चुकी प्रतीत हुई थी, फिर से उसके दिल में अंगड़ाई ले रही है, हिल-डुल रही है।

"अगर मैं आपको चाहती न होती," डौली ने कहा और उसकी आंखें डबडबा आईं, "अगर मैं आपको वैसे ही न जानती होती, जैसे जानती हूं..."

वह भावना, जो दम तोड़ चुकी प्रतीत होती थी, अधिकाधिक सजीव होकर उभर रही थी और लेविन के हृदय पर हावी होती जा रही थी।

"हां, मैं अब सब कुछ समझ गयी हूं," डौली कहती गयी। "आप यह नहीं समझ सकते। आप मर्दों को, आज़ाद और चुनाव

करनेवालों को, हमेशा यह स्पष्ट होता है कि आप किसे प्यार करते हैं। किन्तु लड़की तो अपनी नारी सुलभ, अपनी लड़की की लज्जा के साथ प्रत्याशा की स्थिति में होती है, वह आपको, मर्दों को दूर से देखती है और आपके शब्दों पर यक़ीन करती है। लड़की के हृदय में ऐसी भावना हो सकती है और होती है कि वह नहीं जानती कि क्या कहे।"

"हां, अगर उसका दिल कुछ न बताये..."

"नहीं, दिल तो कुछ बताता है, लेकिन आप सोचिये, आप, मर्द लोग किसी लड़की में दिलचस्पी महसूस करते हैं, आप उसके घर जाते हैं, उसके निकट होते हैं, उसे देखते-भालते हैं, इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि आपको जो पसन्द है वह मिल रहा है या नहीं और यह यक़ीन हो जाने पर कि आपकी पसन्द पूरी हो रही है, आप सगाई-विवाह का प्रस्ताव करते हैं..."

"बात पूरी तरह तो ऐसी नहीं है।"

"फिर भी आप विवाह का प्रस्ताव तभी करते हैं, जब आपका प्यार परिपक्व हो जाता है या जब चुनाव के लिये आपके सामने प्रस्तुत दो लड़कियों में से एक का पलड़ा भारी हो जाता है। मगर लड़की से कोई नहीं पूछता। ऐसा चाहा तो जाता है कि वह ख़ुद अपना साथी चुने, मगर वह ख़ुद चुनाव नहीं कर सकती और सिर्फ़ हां या न में ही जवाब दे सकती है।"

"हां मेरे और व्रोन्स्की के बीच चुनाव," लेविन ने सोचा और उसकी आत्मा में सजीव हो उठी आशा फिर से मर गयी और केवल उसके दिल को यातना से मथने लगी।

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," उसने कहा, "ऐसे तो कोई पोशाक या कोई दूसरी चीज़ चुनी जाती है, लेकिन प्यार नहीं। चुनाव किया जा चुका है, सो अच्छी बात है... इसे दोहराया नहीं जा सकता।"

"आह, आत्माभिमान, सिर्फ़ आत्माभिमान!" डौली ने ऐसे कहा मानो उस भावना की तुलना में, जिसे केवल नारियां ही जानती हैं, इस भावना की तुच्छता के लिये उसका तिरस्कार कर रही हो। "जिस समय आपने कीटी के सामने विवाह का प्रस्ताव किया था, वह उस स्थिति में थी, जब उसके लिये जवाब देना सम्भव नहीं था। वह दुविधा

में थी। दुविधा यह थी – आप या व्रोन्स्की। उससे वह हर दिन मिलती थी, आपसे काफ़ी अर्से से नहीं मिलती थी। अगर वह कुछ अधिक उम्र की होती – मिसाल के तौर पर उसकी जगह मेरे लिये कोई दुविधा नहीं हो सकती थी। वह मुझे कभी भी फूटी आंखों नहीं सुहाया था और मेरे मन की ही बात ठीक निकली।"

लेविन को कीटी का जवाब याद हो आया। उसने कहा था: "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता..."

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," उसने रुखाई से कहा, "अपने प्रति आपके इस विश्वास का मैं बहुत ऊंचा मूल्यांकन करता हूं। मेरे ख़्याल में आप ग़लती कर रही हैं। मैं सही हूं या ग़लत हूं, लेकिन यह आत्माभिमान, जिसे आप ऐसे तिरस्कार से देखती हैं, मेरे लिये येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना के बारे में कुछ सोचना ही असम्भव बना देता है। आप समझती हैं न, एकदम असम्भव बना देता है।"

"मैं सिर्फ़ एक बात और कहूंगी – आप जानते हैं कि मैं अपनी उस बहन की चर्चा कर रही हूं, जिसे अपने बच्चों की तरह प्यार करती हूं। मैं यह नहीं कह रही हूं कि वह आपको प्यार करती थी, बल्कि सिर्फ़ इतना कहना चाहती थी कि उस वक़्त उसका इन्कार करना कुछ भी ज़ाहिर नहीं करता।"

"मैं नहीं जानता!" लेविन ने उछलकर खड़े होते हुए कहा। "काश, आप जानतीं कि कैसी ठेस लगा रही हैं मेरे दिल को! यह तो बिल्कुल ऐसी ही बात है कि आपका बच्चा मर जाये और लोग आपसे कहें – वह ऐसा, ऐसा हो सकता था, ज़िन्दा रह सकता था और आपको ऐसी-ऐसी खुशियां दे सकता था। मगर वह मर चुका है, मर चुका है, मर चुका है..."

"कितने हास्यास्पद हैं आप," डौली ने कहा और लेविन के उत्तेजित होने के बावजूद उदासी से मुस्करा दी। "हां, मैं अब अधिकाधिक सब कुछ समझती जा रही हूं," वह कहती गयी। "तो आप कीटी के आ जाने पर हमारे यहां नहीं आयेंगे?"

"नहीं, नहीं आऊंगा। ज़ाहिर है कि येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना से मैं कन्नी नहीं काटूंगा, लेकिन जहां कहीं भी सम्भव होगा, अपनी उपस्थिति से उसका दिल न दुखाने की कोशिश करूंगा।"

"बहुत, बहुत ही हास्यास्पद हैं आप," डौली ने स्नेह से उसके चेहरे को देखते हुए दोहराया। "अच्छी बात है, ऐसा ही समझिये, मानो इस बारे में हमने कोई बातचीत ही नहीं की। तुम किसलिये आयी हो, तान्या?" डौली ने यहां आनेवाली बेटी से फ़्रांसीसी में पूछा।

"अम्मा, मेरा बेलचा कहां है?"

"मैंने फ़्रांसीसी में पूछा है और तुम भी वैसे ही जवाब दो।"

लड़की ने कहना चाहा, मगर भूल गयी कि फ़्रांसीसी में बेलचे को क्या कहते हैं। मां ने उसे बताया और फिर फ़्रांसीसी में ही यह भी कहा कि वह अपना बेलचा कहां ढूंढ़े। लेविन को यह अच्छा नहीं लगा।

डौली के घर और उसके बच्चों में अब उसे कुछ भी तो पहले की तरह मधुर नहीं प्रतीत हो रहा था।

"किसलिये वह बच्चों से फ़्रांसीसी में बात करती है?" उसने सोचा। "यह कितना अस्वाभाविक और बनावटी है! बच्चे भी यह अनुभव करते हैं। फ़्रांसीसी सीख जायेंगे और निष्कपटता भूल जायेंगे," उसने मन ही मन सोचा। वह यह नहीं जानता था कि डौली ख़ुद भी बीसियों बार ऐसे ही सोच चुकी है, लेकिन निष्कपटता की कुछ हानि होने पर भी उसे इसी तरीक़े से बच्चों को फ़्रांसीसी सिखाना ज़रूरी महसूस हुआ है।

"कहां जाने की उतावली है आपको? कुछ देर तो और रुकिये।"

लेविन चाय पीने के वक़्त तक रुक गया, मगर उसकी हंसी-ख़ुशी ग़ायब हो चुकी थी और वह अटपटापन-सा महसूस कर रहा था।

चाय के बाद लेविन यह आदेश देने के लिये ड्योढ़ी में गया कि उसके लिये बग्घी जोत दी जाये और जब लौटा, तो उसने डौली को बहुत बेचैन पाया, उसके चेहरे पर परेशानी थी और आंखों में आंसू थे। लेविन जब बाहर गया, तो उसी वक़्त एक घटना घट गयी, जिसने आज के दिन की उसकी सारी ख़ुशी और बच्चों के बारे में गर्व की भावना को नष्ट कर दिया। ग्रीशा और तान्या के बीच गेंद के लिये हाथापाई हो गयी थी। बच्चों के कमरे से चीख़ की आवाज़ सुनकर डौली भागकर वहां गयी और उन दोनों को भयानक हालत में पाया। तान्या ग्रीशा के बाल पकड़े हुए थी, ग्रीशा का चेहरा गुस्से से विकृत था और

वह तान्या को जहां भी मुमकिन होता, घूंसे मार रहा था। डौली ने जब यह देखा तो उसके हृदय में मानो कहीं कुछ टूट गया। उसके जीवनाकाश पर काली घटा-सी छा गयी, वह समझ गयी कि उसके यही बच्चे, जिन पर उसे इतना नाज़ था, न केवल बिल्कुल साधारण, बल्कि बुरे, बुरी शिक्षा-दीक्षा तथा भद्दी और पाशविक प्रवृत्तिवाले क्रूर बच्चे हैं।

वह अन्य किसी बात की चर्चा करने और किसी अन्य चीज़ के बारे में सोचने में असमर्थ थी तथा लेविन को अपना दुःख बताये बिना नहीं रह सकती थी।

लेविन ने देखा कि वह बहुत दुखी है और उसने यह कहते हुए उसे शान्त करने की कोशिश की कि यह कुछ भी बुरा ज़ाहिर नहीं करता, कि सभी बच्चे हाथापाई करते हैं। किन्तु ऐसा कहते हुए लेविन मन ही मन सोच रहा था: "नहीं, मैं शान नहीं दिखाऊंगा और अपने बच्चों के साथ फ़्रांसीसी में बातचीत नहीं करूंगा, लेकिन मेरे बच्चे ऐसे नहीं होंगे। मुख्य बात तो यह है कि उन्हें बिगाड़ना और ख़राब नहीं करना चाहिये और वे बहुत अच्छे बच्चे बन जायेंगे। हां, मेरे बच्चे ऐसे नहीं होंगे।"

लेविन विदा लेकर चला गया और डौली ने उसे रोका नहीं।

(११)

जुलाई के मध्य में लेविन की बहन के गांव का मुखिया उसके पास आया। यह गांव लेविन के पोक्रोव्स्कोये गांव से तीस किलोमीटर दूर था। मुखिया काम-काज की स्थिति और घास की कटाई के बारे में विवरण लाया था। बहन की जागीर से मुख्यतः चरागाहों में पैदा होनेवाली घास से आय प्राप्त होती थी। पहले के वर्षों में किसान एक हेक्टर के लिये बीस रूबल देकर घास काट ले जाते थे। लेविन ने जब इस जागीर का प्रबन्ध अपने हाथ में लिया, तो घास की भूमि का निरीक्षण करके इस नतीजे पर पहुंचा कि उनका अधिक मूल्य होना चाहिये और उसने एक हेक्टर की घास के लिये पच्चीस रूबल क़ीमत निर्धारित कर दी। किसान यह क़ीमत देने को तैयार नहीं हुए और, जैसा कि लेविन को

सन्देह था, दूसरों को भी इतनी क़ीमत देने से मना करते थे। तब लेविन ख़ुद वहां गया और उसने कुछ हद तक नक़द मज़दूरी तथा शेष को बदले में घास देकर कटाई करवाने की व्यवस्था की। अपने किसानों ने हर तरह से इस नयी तरकीब में बाधा डालने की कोशिश की, लेकिन यह तरीक़ा कामयाब रहा और पहले ही साल चरागाहों से लगभग दुगुनी आमदनी हासिल हुई। इसके बाद वाले और पिछले साल भी किसानों का विरोध क़ायम रहा और घास की कटाई लेविन के तरीक़े से ही हुई। इस साल किसान तिहाई फ़सल लेने के आधार पर कटाई करने को राज़ी हो गये और मुखिया यह बताने आया था कि घास काटने का काम पूरा हो चुका है और उसने बारिश के डर से दफ़्तर के मुंशी को बुलवा भेजा, उसकी हाज़िरी में घास का बंटवारा कर दिया और मालिक के हिस्से के ग्यारह गट्ठे बंधवा दिये हैं। मुखिया से पूछे गये इस सवाल के ढुलमुल जवाब से कि मुख्य चरागाह से कुल कितनी घास हासिल हुई, जिस उतावली में उसने अनुमति के बिना घास का बंटवारा कर दिया था उससे तथा बातचीत के पूरे अन्दाज़ से लेविन समझ गया कि घास के बंटवारे के मामले में कुछ घुटाला है और इसलिये उसने मामले की जांच करने के लिये ख़ुद वहां जाने का फ़ैसला किया।

दोपहर के खाने के वक़्त गांव में पहुंच कर और घोड़े को अपने एक मित्र, भाई की धाय के पति के यहां छोड़कर वह घास की फ़सल के बटोरे जाने के बारे में तफ़सीलें जानने के लिये मधु-मक्षिका पालन घर में बूढ़े के पास गया। बातूनी और सुन्दर बूढ़े पार्मेनोव ने लेविन का सहर्ष स्वागत किया, उसे अपना सारा काम-काज दिखाया और अपनी मधु-मक्खियों के, इस वर्ष के छत्तों के बारे में ब्योरेवार सब कुछ बताया। किन्तु घास की फ़सल के बारे में लेविन के प्रश्नों के ढुलमुल और अनिच्छा से उत्तर दिये। इससे लेविन के सन्देहों की और भी पुष्टि हो गयी। उसने चरागाह में जाकर टालें देखीं। हर टाल में पचास छकड़े भरने के गट्ठे नहीं हो सकते थे। किसानों की चालाकी पकड़ने के लिये लेविन ने फ़ौरन घास ले जानेवाले छकड़ों को लौटाने और एक टाल को खलिहान में ले जाने का आदेश दिया। टाल में से केवल बत्तीस छकड़े भरने के गट्ठे निकले। मुखिया के यह विश्वास दिलाने के बावजूद कि जब गट्ठे बांधे गये थे, तो घास फूली-फूली

थी तथा बाद में दब गयी है और यह कि सब कुछ दीन-ईमान से किया गया है, लेविन अपनी बात पर अड़ा रहा कि उसकी अनुमति के बिना घास का बंटवारा किया गया है और इसलिये वह हर टाल में पचास छकड़े भरने के गट्ठे मानने को तैयार नहीं है। काफ़ी लम्बे बहस-मुबाहसे के बाद मामला यों तय हुआ कि किसान पचास छकड़े मानते हुए इन ग्यारह टालों को ख़ुद ले लें और मालिक का हिस्सा नये सिरे से अलग कर दें। यह बातचीत और घास के बंटवारे का काम सारी दोपहर तक चलता रहा। जब घास का आख़िरी हिस्सा बंट गया, तो लेविन ने बाक़ी देखभाल का काम मुंशी को सौंपा और विल्लो की शाखा के निशानवाली घास की टाल पर बैठकर लोगों से भरे चरागाह को मुग्ध होकर देखने लगा।

लेविन के सामने दलदल के पीछे उस जगह, जहां नदी मुड़ती थी, रंग-बिरंगी पोशाकें पहने ऊंची और ख़ुशी-भरी आवाज़ों में बोलती-बतियाती हुई देहाती औरतों की एक पांत हिल-डुल रही थी और पीले-हरे डंठलों पर फैली हुई घास जल्दी-जल्दी भूरी और टेढ़ी-मेढ़ी क़तारों में बदलती जाती थी। औरतों के पीछे-पीछे पांचे लिये हुए मर्द आ रहे थे और घास की क़तारें चौड़ी, ऊंची और फूली-फूली टालों का रूप लेती जा रही थीं। बाईं ओर के उस चरागाह में, जहां से घास उठाई जा चुकी थी, छकड़ों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी, बड़े-बड़े पांचों से इनमें लादी जानेवाली घास की टालें एक के बाद एक ग़ायब होती जा रही थीं और मधुर सुगन्ध वाली घास से लदे छकड़ों का रूप लेती जाती थीं; जो घोड़ों के पुट्ठों पर टिके हुए थे।

"बस, मौसम अच्छो बनो रहे! चोखो चारो होवत!" लेविन की बग़ल में बैठते हुए बूढ़े ने कहा। "घास नहीं, चाय होत। तो कैसे काम करत मानो चूज़े दाना खावत," घास की उठाई जाने वाली टालों की ओर संकेत करते हुए उसने कहा। "दुपहर के भोजन बाद से आधी घास लाद चुकत।"

"ख़त्म होवे क्या?" उसने पुकारकर उस नौजवान से पूछा, जो छकड़े के अग्रभाग में खड़ा था और सन की लगामों के सिरों को हिलाता हुआ निकट से गुज़र रहा था।

"हां, ख़त्म होवे, बापू!" नौजवान ने घोड़े को ज़रा रोककर

ऊंची आवाज़ में जवाब दिया और मुस्कराते हुए छकड़े में बैठी प्रफुल्ल, मुस्कराती और लाल-लाल गालों वाली देहाती औरत की तरफ़ देखा और छकड़े को आगे बढ़ा ले गया।

"यह कौन है? बेटा है क्या?" लेविन ने पूछा।

"सबसे छोटो," स्नेह-सिक्त मुस्कान के साथ बूढ़े ने जवाब दिया।

"कितना अच्छा लड़का है!"

"हां, अच्छो है।"

"शादी भी हो चुकी इसकी?"

"हां, सन्त फिलिप के दिन से तीसरा बरस सुरू होत है।"

"तो क्या बच्चे भी हैं?"

"कैसे बच्चे! साल भर तो कुछ समझयो ही नहीं और फिर सरमात भी था," बूढ़े ने जवाब दिया। "अहा, कित्ती अच्छी घास है! बिल्कुल चाय जैसी!" बातचीत का सिलसिला बदलने के लिये उसने फिर से घास की प्रशंसा की।

लेविन ने इवान पार्मेनोव और उसकी बीवी को बहुत ध्यान से देखा। वे दोनों उसके क़रीब ही घास की लदाई कर रहे थे। इवान पार्मेनोव छकड़े में खड़ा हुआ घास के उन बड़े-बड़े ढेरों को लेता था, बराबर करता था और दबाता था, जो उसकी जवान और ख़ूबसूरत बीवी शुरू में बांहों में भर भर कर और फिर पांचे पर उठा-उठाकर दे रही थी। जवान औरत आसानी, ख़ुशी और फुर्ती से काम कर रही थी। बड़ी-बड़ी और दबी हुई घास एकबारगी पांचे पर नहीं उठ पाती थी। वह पहले तो पांचा घुसेड़ कर घास को ढीला करती, इसके बाद लोच और झटके से पांचे पर अपने शरीर का पूरा बोझ डाल देती, फ़ौरन ही लाल कमरबन्द से कसी हुई अपनी कमर को सीधी करती और सफ़ेद लबादे के नीचे से अपने उरोजों का उभार दिखाकर बड़ी मुस्तैदी से पांचे को ऊपर उठाती और फिर घास के ढेर को छकड़े की तरफ़ बढ़ा देती। इवान स्पष्टतः इस बात की कोशिश करते हुए कि बीवी को एक क्षण के लिये भी बेकार कष्ट न उठाना पड़े, बांहें फैलाकर घास के ढेर को जल्दी से ले लेता और उसे छकड़े में फैलाकर बराबर कर देता। औरत ने जेली से घास का अन्तिम ढेर दिया, गर्दन पर लटकती घास को झाड़ा, गोरे, धूप में अभी तक नहीं संवलाये माथे पर

लाल रूमाल को ठीक किया और घास को रस्सी से बांधने के लिये छकड़े के नीचे घुस गयी। इवान उसे सिखा रहा था कि यह काम कैसे करना चाहिये और बीवी द्वारा कहे गये कुछ शब्दों को सुनकर वह ज़ोर से हंस पड़ा। दोनों के चेहरों के भावों में यौवन से मदमदाता, प्रबल और कुछ ही समय पहले पलक खोलने वाला प्यार झलक रहा था।

(१२)

छकड़े पर लदी घास बांध दी गयी थी। इवान कूदकर नीचे आ गया और बढ़िया तथा मोटे-ताज़े घोड़े की लगाम थामकर चलने लगा। उसकी बीवी ने छकड़े पर लदी घास पर जेली फेंक दी और फुर्ती से डग भरती तथा हाथ हिलाती हुई चक्र में जमा औरतों की तरफ़ चल दी। सड़क पर पहुंचकर इवान ने छकड़ों की लम्बी पांत में अपना छकड़ा भी लगा दिया। कंधों पर जेली रखे, रंग-बिरंगी चटकीली पोशाकों की झलक दिखाती और ख़ुशी भरी ऊंची आवाज़ों को गुंजाती हुई औरतें छकड़ों के पीछे-पीछे चल रही थीं। एक खरखरे और अनसधे नारी-कण्ठ ने एक गाना शुरू किया और उसे दोहरायी जानेवाली स्थायी तक गा दिया तथा पचास मोटी और बारीक और ज़ोरदार आवाज़ों ने उसे एकसाथ ही मिल-जुलकर फिर से गाना शुरू कर दिया।

गाती हुई औरतें लेविन के क़रीब आती जा रही थीं और उसे ऐसा लगा मानो हंसी-ख़ुशी की गड़गड़ाहट करती हुई एक काली घटा उसकी ओर बढ़ती आ रही है। यह घटा घिर आई, उसे, जिस टाल पर वह लेटा हुआ था, उसे तथा घास की दूसरी टालों और छकड़ों तथा दूरस्थ खेतों-मैदानों तक को उसने अपनी लपेट में ले लिया और सभी कुछ मानो सीटियों और तरह-तरह की आवाज़ों की गूंज वाले इस हंसी-ख़ुशी से हुमकते उन्मत्त गाने की लय के साथ डोल और झूम रहा था। लेविन को इस तरह के स्वस्थ आनन्द-मंगल से ईर्ष्या हुई, उसने चाहा कि जीवन की इस ख़ुशी की अभिव्यक्ति में भाग ले। किन्तु वह कुछ भी नहीं कर सकता था और लेटे रहकर देखने तथा सुनने के सिवा उसके लिये कोई चारा नहीं था। जब गाते हुए ये

साधारण लोग नज़र से ओझल हो गये और उनकी आवाज़ भी लुप्त हो गयी, तो अपने एकाकीपन, अपनी शारीरिक काहिली और इस दुनिया के प्रति अपनी शत्रुता के कारण बेचैनी की बोझिल भावना ने उसे जकड़ लिया।

उन्हीं किसानों में से कुछ ने, जिन्होंने घास के लिये उसके साथ सबसे अधिक झगड़ा किया था, जिन्हें उसने नाराज़ किया था या जो उसे धोखा देना चाहते थे, उन्हीं किसानों ने प्रफुल्लता से सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और स्पष्टतः उन्हें उसके प्रति कोई गुस्सा-गिला नहीं था और न ही हो सकता था या उन्हें न केवल कोई पश्चाताप ही नहीं, बल्कि इस बात की याद तक भी नहीं थी कि उन्होंने उसे धोखा देना चाहा था। यह सब कुछ साझे श्रम के सागर में डूब गया था। भगवान ने दिन दिया, भगवान ने ही शक्ति दी, दिन और शक्ति भी श्रम को समर्पित हैं और इसी में इनका पुरस्कार है। किन्तु श्रम किसके लिये? श्रम के क्या फल होंगे? उन्हें इन बातों से कोई सरोकार नहीं और इनका कोई महत्त्व नहीं।

लेविन ने अक्सर इस तरह के जीवन को मुग्ध होकर देखा था, इस तरह का जीवन बितानेवाले लोगों के प्रति उसे अक्सर ईर्ष्या हुई थी, किन्तु आज पहली बार, विशेषतः इवान पार्मेनोव के अपनी पत्नी के प्रति मधुर व्यवहार को देख कर मन पर पड़ी छाप के फलस्वरूप लेविन के हृदय में पहली बार यह स्पष्ट विचार आया कि अपने इतने बोझिल, काहिली से भरे और बनावटी व्यक्तिगत जीवन को इस तरह के श्रम-पूर्ण, निर्मल तथा साझे श्रमवाले सुखद जीवन में बदलना ख़ुद उसके अपने ही बस की बात है।

लेविन के पास बैठा हुआ बूढ़ा कभी का जा चुका था, किसान बिखर-बिखरा गये थे। क़रीब रहनेवाले अपने घरों को चले गये थे और जो दूर रहते थे, वे रात का खाना खाने और चरागाह में रात बिताने की तैयारी करने लगे। लेविन, जो लोगों को नज़र नहीं आ रहा था, घास की टाल पर लेटा हुआ उन्हें देखता और उनकी आवाज़ों को सुनता तथा सोचता रहा। चरागाह में सोने के लिये रह जानेवाले किसान गर्मी की इस छोटी-सी रात में लगभग नहीं सोये। शुरू में तो भोजन के वक़्त सभी की ख़ुशी भरी बातचीत और ठहाके गूंजते रहे तथा बाद में फिर गाने और हास-परिहास सुनाई देते रहे।

काम के पूरे लम्बे दिन ने हंसी-खुशी के अतिरिक्त उन पर अन्य कोई छाप नहीं छोड़ी थी। पौ फटने के पहले सब कुछ शान्त हो गया। सिर्फ़ रात की आवाजें – दलदलों में लगातार टरटरानेवाले मेंढ़कों का स्वर और सुबह होने के पहले चरागाह में छा जानेवाले कुहासे में घोड़ों की हिनहिनाहट ही सुनाई दे रही थी। आंख खुलने पर लेविन घास की टाल पर से उठा और तारों को देखते ही समझ गया कि रात गुज़र चुकी है।

"तो मैं क्या करूंगा? कैसे करूंगा मैं यह?" उसने अपने आपसे कहा। वह खुद अपने लिये उस विचार की अभिव्यक्ति ढूंढ़ रहा था, जो उसने इस छोटी-सी रात में सोचा और अनुभव किया था। उसने जो कुछ सोचा और अनुभव किया था, उसे तीन विभिन्न विचार-श्रृंखलाओं में विभाजित किया जा सकता था। पहली, पुरानी ज़िन्दगी, अपने अनुपयोगी ज्ञान और उस शिक्षा से इन्कार करना था, जिसकी किसी को आवश्यकता नहीं थी। ऐसा करने से उसे आनन्द की अनुभूति होती थी और यह उसके लिये बहुत आसान तथा सीधी-सादी बात थी। दूसरे विचारों और कल्पनाओं का सम्बन्ध उस जीवन से था, जो वह अब बिताना चाहता था। इस जीवन की सादगी, निर्मलता और औचित्य को वह स्पष्ट रूप से अनुभव करता था और उसे विश्वास था कि उस जीवन में उसे वह सन्तोष, चैन और गरिमा प्राप्त हो जायेगी, जिनकी अनुपस्थिति को वह दुखी मन से अनुभव करता था। तीसरी विचार-शृंखला का सम्बन्ध इस प्रश्न से था कि इस पुराने जीवन से नये की ओर संक्रमण कैसे किया जाये। इस प्रश्न के जवाब में उसे कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। "बीवी ले आऊं? कोई काम करूं और काम करने की आवश्यकता अनुभव करूं? पोक्रोव्स्कोये को छोड़ दूं? भूमि ख़रीद लूं? किसान-कम्यून में शामिल हो जाऊं? किसी किसान औरत से शादी कर लूं? कैसे बदलूं मैं अपनी इस ज़िन्दगी को?" उसने फिर अपने से यह पूछा और उसे कोई जवाब नहीं मिला। "वैसे मैं रात भर नहीं सोया और कुछ भी तो स्पष्ट कल्पना नहीं कर सकता," उसने अपने आपसे कहा। "मैं बाद में इसे स्पष्ट करूंगा। एक बात तय है कि आज की रात ने मेरे भाग्य का निर्णय कर दिया। पारिवारिक जीवन के बारे में मेरे पहले के सभी सपने बकवास हैं, अवास्तविक हैं,"

उसने अपने आपसे कहा। "यह सब कुछ बहुत सीधा-सादा और कहीं बेहतर है..."

"कितना सुन्दर दृश्य है यह!" लेविन ने आकाश के बीच अपने सिर के ऊपर दूधिया और नर्म बादलों से बनी अजीब-सी सीपी को देखते हुए मन ही मन सोचा। "इस अद्भुत रात में सब कुछ कितना अद्भुत है! और बादलों की यह सीपी कब बन गयी? कुछ ही देर पहले मैंने आकाश पर नज़र डाली थी और वहां कुछ भी नहीं था– सिर्फ़ दो सफ़ेद धारियां थीं। हां, जीवन के बारे में मेरा दृष्टिकोण भी ऐसे अनजाने ही बदल गया है!"

लेविन चरागाह से निकला और बड़े रास्ते से गांव की तरफ़ चल दिया। कुछ हवा चल पड़ी थी और सब कुछ धुंधला तथा उदास-सा हो गया था। पौ फटने, अन्धेरे पर प्रकाश की पूर्ण विजय के पहले आम तौर पर छानेवाले झुटपुटे का क्षण आ गया था।

ठण्ड से सिकुड़ता लेविन धरती की ओर देखता हुआ जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ा रहा था। "यह क्या है? बग्घी में कोई आ रहा है?" घंटियों की आवाज़ सुनकर उसने सोचा और सिर ऊपर उठाया। जिस रास्ते पर वह जा रहा था, उसी बड़े, घासवाले रास्ते पर उससे चालीस क़दमों की दूरी पर चार घोड़ों की बग्घी आ रही थी, जिसके ऊपर सामान रखा था। बग़लवाले घोड़े पहियों की लीकों से बमों की ओर हटते थे, मगर बक्स पर टेढ़ा बैठा हुआ होशियार कोचवान बम को लीक की सीध में रखता था और इस तरह पहिये समतल भाग पर ही दौडते थे।

लेविन ने केवल यही देखा और यह सोचे बिना ही कि बग्घी में कौन हो सकता है, बेख़्याली से बग्घी के भीतर नज़र दौड़ाई।

बग्घी के कोने में एक बुढ़िया ऊंघ रही थी और खिड़की के क़रीब सम्भवतः अभी-अभी जागनेवाली एक जवान लड़की अपनी सफ़ेद टोपी के फ़ीतों को दोनों हाथों में थामे बैठी थी। उल्लसित और चिन्तनशील, सुन्दर और जटिल आन्तरिक जीवन से परिपूर्ण, जिससे लेविन अपरिचित था, वह उससे दूर, उषा की लालिमा की ओर देख रही थी।

जब यह दृश्य लुप्त हो रहा था, उसी क्षण दो निश्छल आंखों ने उसकी तरफ़ देखा। लड़की ने लेविन को पहचान लिया और आश्चर्यपूर्ण प्रसन्नता से उसका चेहरा खिल उठा।

लेविन से भूल नहीं हो सकती थी। दुनिया में ऐसी और आंखें तो थीं ही नहीं। दुनिया में केवल यही एक लड़की थी, जो उसके लिये जीवन का सारा प्रकाश और अर्थ संकेन्द्रित कर सकती थी। यह वही थी। यह कीटी ही थी। लेविन समझ गया कि वह स्टेशन से येर्गूशोवो जा रही है। वे सभी चीज़ें, जो इस उनींदी रात में लेविन को परेशान करती रही थीं, वे सभी निर्णय, जो उसने किये थे, अचानक ग़ायब हो गये। किसी किसान औरत के साथ शादी करने की बात को उसने नफ़रत से याद किया। केवल वहीं, तेज़ी से दूर जाती और सड़क के दूसरी ओर पहुंच जानेवाली इस बग्घी में, केवल वहीं पिछले कुछ अर्से से उसके लिये इतने यातनाप्रद ढंग से बोझिल बनी हुई जीवन की पहेली का हल था।

कीटी ने फिर बग्घी से बाहर नहीं झांका। बग्घी के स्प्रिंगों की आवाज़ अब सुनाई नहीं देती थी, घंटियों की टनटनाहट तनिक सुनाई पड़ रही थी। कुत्तों की भूंक ने स्पष्ट कर दिया कि बग्घी गांव में पहुंच गयी है, और इर्द-गिर्द ख़ाली खेत, सामने गांव तथा वह ख़ुद एकाकी तथा सभी कुछ से बेगाना बड़े मार्ग पर फेंका हुआ-सा अकेला चला जा रहा है।

लेविन ने वह बादल-सीपी देख पाने की आशा से आकाश को ताका, जिसे उसने कुछ क्षण पहले मुग्ध होकर देखा था और जो उसके लिये उस रात के सभी विचारों और भावनाक्रम का प्रतीक बन गयी थी। अब आकाश में सीपी जैसा कुछ भी नहीं था। वहां, पहुंच से बाहर की ऊंचाई पर रहस्यपूर्ण परिवर्तन हो चुका था। बादल-सीपी का तो चिह्न तक बाक़ी नहीं रहा था और आधे आकाश में अधिकाधिक छोटे होते जाते फूले-फूले बादलों का समतल क़ालीन-सा फैला हुआ था। आकाश नीला हो चुका था और चमक रहा था तथा उसी कोमलता और उसी पहुंच से बाहर की दूरी से उसकी प्रश्नसूचक दृष्टि का उत्तर दे रहा था।

"नहीं," उसने अपने आपसे कहा, "सादगी और मेहनत की यह ज़िन्दगी चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हो, मैं उसकी तरफ़ नहीं लौट सकता। मैं 'उसे' प्यार करता हूं।"

(१३)

अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच कारेनिन के अत्यधिक घनिष्ठ लोगों के सिवा कोई भी यह नहीं जानता था कि इस बहुत कठोर और तर्कशील व्यक्ति के चरित्र की सामान्य संरचना से बिल्कुल मेल न खानेवाली एक दुर्बलता भी उसमें थी। कारेनिन किसी बच्चे या नारी का रोना देख-सुन नहीं सकता था। आंसू देखकर वह परेशान हो उठता था और उसकी सोचने-समझने की पूरी क्षमता जाती रहती थी। उसके दफ़्तर का संचालक और सेक्रेटरी भी यह जानता था और इसलिये वे प्रार्थी नारियों को पहले से ही चेतावनी दे देते थे कि अगर वे अपना मामला बिगाड़ना नहीं चाहतीं, तो रोयें नहीं। " वह झल्ला उठेंगे और आपकी बात नहीं सुनेंगे, " वे कहते। वास्तव में ही आंसू देखकर कारेनिन को जो मानसिक परेशानी होती थी, वह फ़ौरन ग़ुस्से का रूप ले लेती थी। "मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं कर सकता। कृपया जाइये यहां से!" ऐसी स्थितियों में वह सामान्यतः चिल्ला उठता।

घुड़दौड़ों से लौटते समय आन्ना ने जब उससे व्रोन्स्की के साथ अपने सम्बन्धों की घोषणा की और इसके बाद हाथों से मुंह ढांपकर रो पड़ी, तो कारेनिन ने आन्ना के प्रति उत्पन्न होनेवाले क्रोध के बावजूद साथ ही वह मानसिक बेचैनी भी अनुभव की, जो आंसुओं के कारण उसे हमेशा महसूस होती थी। यह जानते और यह भी समझते हुए कि इस समय अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देना परिस्थिति के अनुरूप नहीं होगा, उसने अपने भीतर जीवन के हर लक्षण को दबाने-छिपाने की कोशिश की और उसकी तरफ़ नहीं देखा। इसी कारण उसके चेहरे पर मुर्दे जैसा वह अजीब भाव झलक उठा था, जिससे आन्ना स्तम्भित-सी रह गयी थी।

घर के सामने पहुंचने पर कारेनिन ने आन्ना को सहारा देकर बग्घी से नीचे उतारा, अपनी भावनाओं को किसी तरह वश में करके सदा की सी शिष्टता दिखाते हुए उससे विदा ली और वे शब्द कहे, जो उसे किसी भी चीज़ के लिये बाध्य नहीं करते थे। उसने कहा कि वह अगले दिन उसे अपने निर्णय की सूचना दे देगा।

कारेनिन के बुरे से बुरे सन्देहों की पुष्टि करनेवाले पत्नी के शब्दों से उसका हृदय बुरी तरह टीस उठा। आन्ना के आंसुओं से उसे उसके प्रति शारीरिक दया भाव की जो अजीब-सी अनुभूति हुई, उससे यह पीड़ा और भी तीखी हो गयी। किन्तु बग्घी में अकेले रह जाने पर कारेनिन ने हैरानी और ख़ुशी के साथ यह महसूस किया कि उसे इस दया भाव और उन सन्देहों तथा ईर्ष्या की उन यातनाओं से मुक्ति मिल गयी है, जो पिछले कुछ अर्से में उसे बुरी तरह परेशान करती रही थीं।

उसे उस व्यक्ति के समान ही अनुभूति हुई, जिसने अपना दुखता हुआ दांत निकलवा दिया हो। भयानक दर्द और किसी बहुत बड़ी चीज़, सिर से भी बड़ी चीज़ के जबड़े में से निकाल दिये जाने की अनुभूति के बाद रोगी अभी अपने सौभाग्य पर विश्वास न करते हुए अचानक यह महसूस करता है कि अब वह नहीं रहा, जो इतने समय तक उसके जीवन में विष घोलता रहा, पूरी तरह अपनी ओर ध्यान आकर्षित करता रहा, कि वह अब फिर से जीवित रह सकता है, केवल अपने दांत के अलावा और चीज़ों के बारे में सोच और उनमें दिलचस्पी ले सकता है। कारेनिन को ऐसी ही अनुभुति हुई। दर्द अजीब और भयानक था, मगर अब वह जाता रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि अब फिर से केवल पत्नी के बारे में सोचे बिना ज़िन्दा रह सकता है।

"मानहीन, हृदयहीन, धर्महीन, चरित्रहीन नारी। मैं सदा यह जानता था और सदा देखता था, यद्यपि उस पर दया करते हुए अपने को धोखा देने का प्रयास करता था," उसने अपने आपसे कहा। उसे सचमुच ही ऐसा लगा कि वह हमेशा यह देखता रहा है। वह उन दोनों के बीते जीवन की उन तफ़सीलों को याद करने लगा, जो पहले उसे किसी तरह बुरी नहीं लगी थीं, मगर अब वही तफ़सीलें स्पष्ट रूप से यह ज़ाहिर करती थीं कि वह हमेशा बदचलन औरत रही थी। "अपने जीवन को उसके साथ जोड़कर मैंने भूल की है, लेकिन मेरी भूल में कुछ भी निन्दनीय नहीं है और इसलिये में दुखी नहीं हो सकता। मैं दोषी नहीं हूं," उसने अपने आपसे कहा, "बल्कि वह है। लेकिन मुझे क्या मतलब है उससे। मेरे लिये अब उसका कोई अस्तित्व नहीं रहा..."

आन्ना और बेटे के साथ, जिसके प्रति पत्नी की तरह उसका

रवैया बदल गया था, जो कुछ बीतेगी उसे उसमें दिलचस्पी नहीं रही। उसे अब केवल इसी चीज़ में दिलचस्पी थी कि कैसे सबसे अच्छे, शिष्टतम और अपने लिये अधिकतम सुविधाजनक और इस तरह न्यायसंगत ढंग से वह कीचड़ साफ़ कर दे, जो उसकी बीवी ने अपने पतन द्वारा उस पर पोत दिया था तथा अपने क्रियाशील, निष्कपट और उपयोगी जीवन के पथ पर चलता रहे।

"मैं इस कारण दुखी नहीं हो सकता कि उस घृणित नारी ने अपराध किया है। मुझे तो केवल उस विकट स्थिति से निकलने का रास्ता ढूंढ़ना है, जिसमें उसने मुझे डाल दिया है। और मैं वह रास्ता ढूंढ़ लूंगा," उसने अधिकाधिक नाक-भौंह सिकोड़ते हुए अपने आपसे कहा। "मैं न तो पहला और न अन्तिम हूं।" और मेनेलास से आरम्भ करके, जो 'सुन्दर हेलेन' के कारण सभी की याद में फिर से ताज़ा हो गया था, उसे अनेक ऐतिहासिक नाम ही नहीं, बल्कि आधुनिक ऊंचे समाज में पतियों के साथ पत्नियों की बेवफ़ाई की अनेक घटनायें याद आ गयीं। "दार्यालोव, पोल्ताव्स्की, प्रिंस कारीबानोव, काउंट पास्कूदिन, द्राम... हां, द्राम भी... इतना ईमानदार और काम-काजी आदमी... सेम्योनोव, चागिन, सिगोनिन," कारेनिन को ये नाम याद आये। "माना जा सकता है कि कुछ हद तक ये अनुचित ridicule* के पात्र बनते हैं, लेकिन मुझे इसमें दुर्भाग्य के सिवा कभी और कुछ दिखाई नहीं दिया तथा हमेशा ही मैंने उनके प्रति सहानुभूति अनुभव की है," कारेनिन ने अपने आपसे कहा, यद्यपि यह सच नहीं था और इस तरह के दुर्भाग्य के प्रति उसने कभी सहानुभूति अनुभव नहीं की थी तथा अपने पतियों के साथ बेवफ़ाई करनेवाली पत्नियों के जितने अधिक उदाहरण उसके सामने आते थे, स्वयं अपनी दृष्टि में उसका उतना ही अधिक मूल्य बढ़ जाता था। "यह वह दुर्भाग्य है, जिसका कोई भी आदमी शिकार हो सकता है। और अब इस दुर्भाग्य ने मुझे आ दबोचा है। अब तो मुख्य बात यही है कि कैसे अधिक से अधिक अच्छे ढंग से इस स्थिति का सामना किया जाये।" और उसने अपनी जैसी स्थिति में पड़े लोगों की गतिविधि की तफ़सीलों पर विचार करना शुरू किया।

* उपहास। (फ़्रांसीसी)

"दार्यालोव ने द्वन्द्व-युद्ध किया था..."

किशोरावस्था में द्वन्द्व-युद्ध का विचार कारेनिन को ख़ास तौर पर इसलिये आकृष्ट करता रहा था कि वह स्वभाव से दब्बू आदमी था और इस बात को अच्छी तरह जानता था, कारेनिन अपनी ओर तनी हुई पिस्तौल की कल्पना करके कांप उठता था और उसने अपने जीवन में कभी किसी हथियार का इस्तेमाल नहीं किया था। इस भय ने जवानी के दिनों में उसे अक्सर द्वन्द्व-युद्ध के बारे में सोचने और उस स्थिति की कल्पना करने के लिये बाध्य किया, जिसमें उसे अपने जीवन को ख़तरे के सामने करना होगा। ज़िन्दगी में कामयाबी पाने और मज़बूत स्थिति बना लेने के बाद वह कभी का इस भावना को भूल चुका था। मगर इस पुरानी आदत ने अपना रंग दिखाया और अपनी कायरता का भय इतना प्रबल सिद्ध हुआ कि उसने द्वन्द्व-युद्ध पर सभी पहलुओं से देर तक सोचा और मन ही मन इस विचार से खिलवाड़ किया, यद्यपि वह पहले से ही यह जानता था कि किसी भी हालत में द्वन्द्व-युद्ध नहीं करेगा।

"निस्सन्देह हमारा समाज अभी इतना असभ्य है (इंगलैंड जैसी बात तो नहीं) कि बहुत-से लोग" – और इन लोगों में वे भी शामिल थे, जिनके मत को कारेनिन महत्त्व देता था – "द्वन्द्व-युद्ध को अच्छा मानते हैं, मगर इसका नतीजा क्या निकलेगा? मान लें, मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती देता हूं," कारेनिन ने मन ही मन सोचना जारी रखा और चुनौती के बाद की रात और अपनी ओर तनी हुई पिस्तौल की सजीव कल्पना करके सिहर उठा और समझ गया कि वह कभी ऐसा नहीं करेगा – "मान लें, मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकार लेता हूं। मान लें, मुझे पिस्तौल चलाना सिखा दिया जाता है," वह सोचता गया, "मुझे ढंग से खड़ा कर दिया जाता है, मैं घोड़ा दबा देता हूं," – उसने आंखें मूंद कर अपने आपसे कहा – "और पता चलता है कि मैंने उसकी हत्या कर डाली," कारेनिन ने अपने आपसे कहा और इन बेहूदा विचारों को दूर भगाने के लिये सिर झटका। "अपराधिनी पत्नी और बेटे के साथ अपने सम्बन्धों का निपटारा करने के लिये किसी आदमी की हत्या करने में क्या तुक है? फिर भी मुझे यह तो तय करना ही होगा कि बीवी के साथ क्या व्यवहार करूं? लेकिन इससे भी ज़्यादा जिस बात की सम्भावना है और जो निस्सन्देह

हो ही जायेगा, वह यह है कि मैं मारा जाऊंगा या घायल हो जाऊंगा। मैं, जो बेक़सूर आदमी हूं, बलि का बकरा हूं, मारा जाऊंगा या घायल हो जाऊंगा। यह तो और भी ज़्यादा बेतुकी बात है। लेकिन इतना ही नहीं, मेरी ओर से उसे द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती देना ईमानदारी का काम नहीं होगा। क्या मैं पहले से ही यह नहीं जानता हूं कि मेरे दोस्त मेरे लिये द्वन्द्व-युद्ध की नौबत नहीं आने देंगे – कभी ऐसा नहीं होने देंगे कि राजकीय कार्यकर्त्ता, रूस के लिये महत्त्व रखनेवाले व्यक्ति का जीवन ख़तरे में पड़े? तो इसका क्या नतीजा होगा? नतीजा यह होगा कि मैंने पहले से ही यह जानते हुए कि मामला कभी भी ख़तरे की हद तक नहीं पहुंच सकेगा, उसे चुनौती देकर अपनी थोड़ी झूठी शान दिखानी चाही है। यह बेईमानी, यह ढोंग, अपने को और दूसरों को धोखा देना होगा। द्वन्द्व-युद्ध की बात नहीं सोची जा सकती और कोई भी मुझसे इसकी आशा नहीं करता। मेरा लक्ष्य तो यह है कि अपने सम्मान की रक्षा करूं, ताकि किसी तरह की बाधा के बिना अपने कार्य-कलाप को जारी रख सकूं।" कारेनिन के लिये सरकारी काम पहले भी बहुत ज़्यादा माने रखता था और अब तो उसे वह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने लगा।

द्वन्द्व-युद्ध पर सोच-विचार और उससे इन्कार करने के बाद कारेनिन ने तलाक़ के बारे में सोचना शुरू किया। यह वह दूसरा उपाय था, जिसका उन पतियों ने, जो उसे याद थे, उपयोग किया था। तलाक़ की सभी घटनाओं को (जिनकी उसके सुपरिचित समाज में बहुत अधिक संख्या थी) मन ही मन याद करते हुए कारेनिन को एक भी ऐसी घटना याद नहीं आई, जिसका उद्देश्य वही हो, जो उसका था। इन सभी घटनाओं में पति ने या तो बेवफ़ा बीवी को त्याग दिया था या बेच डाला था, और वही पक्ष, जो अपराधी होने के कारण विवाह करने का अधिकार नहीं रखता था, किसी नये साथी के साथ जाली, झूठे क़ानूनी दाम्पत्य-सम्बन्ध स्थापित कर लेता था। कारेनिन ने अपने मामले में यह देखा कि क़ानूनी यानी ऐसा तलाक़ देना मुमकिन नहीं, जिसके अनुसार केवल अपराधी पत्नी से ही इन्कार किया जा सके। वह समझता था कि जीवन की जिन जटिल परिस्थितियों से घिरा हुआ था, वे उन भोंडे प्रमाणों की सम्भावनायें नहीं देती थीं, पत्नी के अपराध

का भण्डाफोड़ करने के लिये कानून जिनकी मांग करता था। वह जानता था कि ऐसे जीवन का स्वीकृत शिष्टाचार इस तरह के प्रमाणों का, यदि वे उपलब्ध भी होते, उपयोग नहीं करने देगा, कि ऐसे प्रमाणों का उपयोग पत्नी की तुलना में उसे ही समाज की नज़रों में कहीं अधिक नीचे गिरा देगा।

तलाक़ की कोशिश से सिर्फ़ जग-हंसाई का ही मौक़ा पैदा होगा, जिसका उसके दुश्मन उसकी बदनामी करने और समाज में उसके ऊंचे दर्जे पर बट्टा लगाने के लिये इस्तेमाल करेंगे। उसका मुख्य उद्देश्य यानी कम से कम परेशानी से मामले को निपटाने का उद्देश्य तलाक़ से भी पूरा नहीं होता था। इसके अलावा, तलाक़ लेने की सूरत में, यहां तक कि तलाक़ की कोशिश करने पर भी यह स्पष्ट हो जाता था कि पति के साथ पत्नी के सम्बन्ध टूट जाते हैं और वह प्रेमी के साथ अपने सम्बन्ध जोड़ने को स्वतन्त्र है। किन्तु पत्नी के प्रति तिरस्कारपूर्ण उदासीनता के बावजूद, जैसा कि अब उसे लगता था, कारेनिन के दिल की गहराई में यह एक इच्छा ज़रूर रह गयी थी कि व्रोन्स्की के साथ उसका अबाध ढंग से नाता न जुड़ सके कि उसका अपराध उसके लिये वरदान न बन सके। कारेनिन को इस एक विचार से इतनी झल्लाहट अनुभव हुई कि वह इसकी कल्पना करके ही आन्तरिक पीड़ा से तिलमिला उठा, उसने उठकर बग्घी में अपनी जगह बदली और इसके बहुत देर बाद तक नाक-भौंह सिकोड़े हुए अपनी हड़ीली तथा ठिठुरी टांगों को रोयेंदार कम्बल में लपेटता रहा।

"क़ानूनी ढंग से तलाक़ लेने के अलावा एक और भी तरीक़ा है – वही किया जाये, जो कारीबानोव, पास्कूदिन और भले द्राम ने किया था, यानी पत्नी से अलग हो जाया जाये," शान्त हो जाने पर उसने फिर से सोचना जारी रखा। किन्तु यह उपाय भी तलाक़ की तरह ही बदनामी की परेशानी पैदा करता था और फिर सबसे बड़ी बात तो यह थी कि औपचारिक तलाक़ की भांति यह उपाय भी पत्नी को व्रोन्स्की की बांहों में डाल देता था। "नहीं, यह सम्भव नहीं, यह सम्भव नहीं!" फिर से कम्बल को लपेटते हुए वह ऊंचे-ऊंचे कह उठा। "मुझे दुखी नहीं होना चाहिये, लेकिन आन्ना और व्रोन्स्की को भी सुखी नहीं होना चाहिये।"

मामले के साफ़ होने तक शक और ईर्ष्या की जो भावना उसे

यातना देती रही थी, उसी क्षण ख़त्म हो गयी थी, जब पत्नी द्वारा कहे गये शब्दों के फलस्वरूप दर्द के साथ दांत निकल गया था। किन्तु एक दूसरी भावना ने इसकी जगह ले ली थी – उसके दिल में यह इच्छा पैदा हो गयी थी कि पत्नी को न केवल विजय ही न प्राप्त हो, बल्कि अपने अपराध के लिये उसे दण्ड भी मिले। वह इस भावना को स्वीकार नहीं करता था, किन्तु अपने मन की गहराई में यह चाहता ज़रूर था कि उसका चैन और प्रतिष्ठा नष्ट करने के लिये उसे कुछ दुख अवश्य उठाना पड़े। फिर से द्वन्द्व, तलाक़ और अलग हो जाने की स्थितियों पर विचार करने और फिर से उन्हें ठुकराने के बाद कारेनिन को इस बात का यक़ीन हो गया कि उसके लिये सिर्फ़ एक ही रास्ता है – जो कुछ हुआ है, उसे समाज से गुप्त रखते हुए पत्नी को अपने से अलग न होने दे और उनके मिलने-जुलने की सम्भावना तथा मुख्यतः – जिसे वह अपने सम्मुख भी स्वीकार करने को तैयार नहीं था – उसे दण्ड देने के लिये सभी सम्भव उपाय करे। "मुझे अपना यह निर्णय उसे सूचित कर देना चाहिये कि उस सारी कठिन परिस्थिति पर विचार करने के बाद, जिसमें उसने परिवार को डाल दिया है, बाहरी status quo* के अलावा सभी रास्ते दोनों पक्षों के लिये कहीं अधिक बुरे होंगे और मैं ऐसा करने को राज़ी हूं, बशर्ते कि वह मेरी इच्छा का कड़ाई से पालन करे, यानी प्रेमी के साथ अपने सम्बन्ध समाप्त कर दे।" कारेनिन ने जब यह निर्णय स्वीकार कर लिया था, तो इसके समर्थन में एक अन्य ज़ोरदार तर्क उसके दिमाग़ में आया। "ऐसा निर्णय करके मैं धर्म के अनुसार भी काम कर रहा हूं," उसने अपने आपसे कहा, "केवल ऐसा निर्णय करके ही मैं न केवल अपराधिनी पत्नी से इन्कार नहीं कर रहा हूं, बल्कि उसे सुधार की सम्भावना भी दे रहा हूं तथा इतना ही नहीं – मेरे लिये यह चाहे कितना ही कष्टप्रद क्यों न हो – उसके सुधार और उत्थान के लिये अपनी कुछ शक्ति भी समर्पित कर रहा हूं।" कारेनिन यद्यपि यह जानता था कि अपनी पत्नी पर वह नैतिक प्रभाव नहीं डाल सकता, कि सुधार की ऐसी सभी कोशिशों का झूठ और कपट के सिवा कोई नतीजा नहीं निकलेगा, यद्यपि दुख के इन

* स्थिति को ज्यों का त्यों बनाये रखना। (लैटिन)

क्षणों को सहन करते हुए धर्म का निर्देशन पाने की बात एक बार भी उसके दिमाग़ में नहीं आई थी, फिर भी अब उसका यह निर्णय, जैसा कि उसे लगा, धर्म के तकाज़ों के अनुरूप था, तो इस धार्मिक पुष्टि ने उसे पूरा सन्तोष और कुछ हद तक चैन भी प्रदान किया। उसे यह सोचकर ख़ुशी हुई कि जीवन के ऐसे महत्त्वपूर्ण मामले में कोई यह नहीं कह सकेगा कि उसने उस धर्म के नियमों के अनुसार आचरण नहीं किया, जिसका सामान्य उदासीनता और उत्साहहीनता की स्थिति में भी उसने हमेशा झण्डा ऊंचा रखा है। इस मामले की और अधिक तफ़सीलों पर विचार करते हुए कारेनिन को ऐसी कोई बाधा सामने दिखाई नहीं दी कि पत्नी के साथ उसके सम्बन्ध लगभग पहले जैसे ही क्यों नहीं रह सकते। इसमें कोई शक नहीं कि उसके प्रति अपना आदर भाव तो वह कभी नहीं लौटा सकेगा, किन्तु इसके लिये न तो ऐसे कारण थे और न हो ही सकते थे कि वह अपनी ज़िन्दगी को बरबाद करे और इसलिये दुख सहे कि वह बुरी और बेवफ़ा बीवी थी। "हां, वक़्त बीतेगा, सब कुछ ठीक-ठाक कर देनेवाला वक़्त बीतेगा, और पहले जैसे सम्बन्ध बहाल हो जायेंगे," कारेनिन ने अपने आपसे कहा, "यानी उस हद तक बहाल हो जायेंगे कि मैं अपनी ज़िंदगी में अशान्ति अनुभव नहीं करूंगा। वह दुखी होगी, लेकिन मैं दोषी नहीं हूं और इसलिये मैं दुखी नहीं हो सकता।"

(१४)

पीटर्सबर्ग पहुंचने तक कारेनिन ने इस निर्णय को न केवल पूरी तरह मान लिया, बल्कि अपने दिमाग़ में वह ख़त भी तैयार कर लिया, जो वह अपनी बीवी को लिखेगा। दरबान के कमरे में जाकर कारेनिन ने पत्रों और मन्त्रालय से लाये गये कागज़ों पर नज़र डाली और उन्हें अपने अध्ययन-कक्ष में लाने का आदेश दिया।

"घोड़े खोल दिये जायें और मैं अब किसी से भी नहीं मिलूंगा," अन्तिम शब्दों पर ज़ोर देते हुए दरबान के सवाल के जवाब में कुछ ख़ुशी के साथ, जो इस बात का लक्षण थी कि उसका मूड अच्छा है, उसने कहा।

कारेनिन ने अपने अध्ययन-कक्ष के दो चक्कर लगाये, लिखने की बहुत बड़ी मेज़ के सामने रुका, जिस पर उसके यहां आने के पहले ही नौकर ने छः मोमबत्तियां जला दी थीं, उसने अपनी उंगलियां चटकायीं और बैठकर लिखने का सामान व्यवस्थित करने लगा। मेज़ पर कोहनियां टिकाकर उसने एक ओर को सिर झुकाते हुए क्षण भर को कुछ सोचा और फिर एक पल भी रुके बिना लिखने लगा। वह उसे सम्बोधित किये बिना फ़्रांसीसी भाषा में "आप" सर्वनाम का उपयोग करते हुए, जो रूसी भाषा के "आप" जैसी रुखाई से मुक्त है, पत्र लिख रहा था।

"हमारी अन्तिम बातचीत के समय मैंने उसी बातचीत से सम्बन्धित एक विषय पर अपने निर्णय की सूचना देने का इरादा ज़ाहिर किया था। सभी चीज़ों पर बहुत ध्यान से विचार करके मैं अपना यह वचन पूरा करने के उद्देश्य से अब यह पत्र लिख रहा हूं। मेरा निर्णय यह है – आपकी हरकतें चाहे कैसी भी क्यों न हों, मैं अपने को उन बन्धनों को तोड़ने का अधिकारी नहीं मानता हूं, जिनमें उच्च शक्ति ने हमें बांधा है। दम्पति में से किसी एक की सनक, मनमर्ज़ी या अपराध तक से परिवार को तोड़ा नहीं जा सकता और हमारा जीवन पहले की तरह ही चलता जाना चाहिये। ऐसा मेरे लिये, आपके लिये और हमारे बेटे के लिये ज़रूरी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप उस चीज़ के लिये पश्चाताप कर चुकी हैं और पश्चाताप कर रही हैं, जो मेरे यह पत्र लिखने का कारण है और यह कि आप हमारे मनमुटाव के कारण को जड़ से ख़त्म करने तथा अतीत को भूल जाने के लिये मेरे साथ सहयोग करेंगी। ऐसा न करने पर आप स्वयं ही उसकी कल्पना कर सकती हैं, जो आप तथा आपके बेटे के साथ बीतनेवाला है। व्यक्तिगत रूप से भेंट होने पर इन सब बातों के बारे में अधिक विस्तार से बातचीत करने की आशा रखता हूं। चूंकि देहात के बंगले में रहने का समय ख़त्म हो रहा है, इसलिये मैं आपसे जितनी भी जल्दी हो सके, मंगलवार तक तो अवश्य ही पीटर्सबर्ग आने का अनुरोध करता हूं। आपके यहां आने से सम्बन्धित सब प्रबन्ध कर दिये जायेंगे। इस बात की ओर ध्यान देने का अनुरोध करता हूं कि अपने इस अनुरोध की पूर्त्ति को मैं विशेष महत्त्व देता हूं।

अ० कारेनिन

पुनश्च: – इस पत्र के साथ कुछ रक़म भी भेज रहा हूं, जिसकी आपको अपने ख़र्चों के लिये ज़रूरत हो सकती है।"

पत्र को फिर से पढ़कर वह ख़ुश हुआ, ख़ास तौर पर इसलिये कि उसे रुपये भेजने का भी ध्यान आ गया था। पत्र में न तो कोई कठोर शब्द था, न किसी तरह की भर्त्सना और न नम्रता ही थी। मुख्य बात तो यह थी – लौटने के लिये सुनहरा पुल उपस्थित था। पत्र को तह करने और हाथी दांत की बड़ी तथा भारी काग़ज़-काट छुरी से उसे बराबर करने तथा रुपयों के साथ उसे लिफ़ाफ़े में डालने के बाद उसने उस ख़ुशी को महसूस करते हुए, जो उसकी ढंग से व्यवस्थित लेखन-सामग्री उसे हमेशा प्रदान करती थी, घण्टी बजाई।

"हरकारे को देकर कहना कि कल देहात के बंगले पर आन्ना अर्कादियेव्ना को पहुंचा दे," उसने कहा और उठकर खड़ा हो गया।

"जो हुक्म, हुज़ूर। चाय यहीं लाने की आज्ञा देंगे?"

कारेनिन ने अध्ययन-कक्ष में ही चाय लाने का आदेश दिया और हाथी दांत की बड़ी सारी छुरी से खिलवाड़ करता हुआ उस आरामकुर्सी की तरफ़ चल दिया, जिसके क़रीब लैम्प और युगूवाइन उत्कीर्णन-लेखों के बारे में फ़्रांसीसी भाषा में वह पुस्तक रखी हुई थी, जिसे वह पढ़ना आरम्भ कर चुका था। आरामकुर्सी के ऊपर एक विख्यात चित्रकार द्वारा बनाया गया तथा अण्डाकार सुनहरे चौखटे में जड़ा आन्ना का बहुत ही बढ़िया छविचित्र टंगा हुआ था। कारेनिन ने उसकी तरफ़ देखा। अभेद्य नज़रें मज़ाक़ उड़ाती-सी और धृष्टता के साथ उसकी तरफ़ वैसे ही देख रही थीं, जैसे उस अन्तिम शाम को, जब उनके बीच बातचीत हुई थी। कारेनिन को चित्रकार द्वारा आन्ना के सिर पर बहुत अच्छे ढंग से बनायी गयी काली लेस, काले बाल और अंगूठियों से ढकी हुई अनामिका सहित गोरा और बहुत सुन्दर हाथ असह्य रूप से धृष्टतापूर्ण और चुनौती देते-से प्रतीत हुए। एक मिनट तक इस छविचित्र को देखने पर कारेनिन ऐसे कांपा कि उसके होंठों ने फड़फड़ा कर "बर्र" की आवाज़ निकाली तथा उसने मुंह फेर लिया। जल्दी से आरामकुर्सी पर बैठकर उसने पुस्तक खोल ली। उसने पढ़ने की कोशिश की, मगर वह किसी प्रकार भी युगूवाइन उत्कीर्णन-लेखों में पहले जैसी सजीव रुचि अनु-

भव नहीं कर सका। वह पुस्तक को देख रहा था, मगर सोच कुछ और रहा था। वह पत्नी के बारे में नहीं, बल्कि उस जटिलता के सम्बन्ध में सोच रहा था, जो पिछले कुछ समय में उसके राजकीय कार्य-कलापों में पैदा हो गयी थी और जो इस समय उसके कार्य की मुख्य दिलचस्पी बनी हुई थी। वह अनुभव कर रहा था कि पहले की तुलना में अब वह इस जटिलता की गहराई में कहीं अधिक पैठ गया है और उसके दिमाग़ में एक ऐसा महत्वपूर्ण विचार पैदा हुआ है – ऐसा तो वह आत्मप्रशंसा के बिना ही कह सकता था – जो इस सारे मामले की गुत्थियां खोल देगा, उसके कार्य-पद को और ऊंचा कर देगा, दुश्मनों को मात दे देगा और इसलिये राज्य को उससे बहुत लाभ होगा। चाय रखकर नौकर ज्यों ही कमरे से बाहर निकला, कारेनिन उसी क्षण उठा और अपनी लिखने की मेज़ पर जा बैठा। चालू मामलों की फ़ाइल को मेज़ के मध्य में खिसकाकर उसने आत्मसन्तोष की तनिक दिखाई देनेवाली मुस्कान के साथ स्टैंड से पेंसिल ली और उस जटिलता से सम्बन्धित काग़ज़ात को, जो उसने मंगवाये थे, पढ़ने के काम में डूब गया। जटिलता यह थी। राजकीय कार्यकर्त्ता के रूप में कारेनिन की एक ख़ास ख़ूबी थी, जो निरन्तर उन्नति करते हुए हर राजकीय कर्मचारी में होती है, वह ख़ूबी, जिसने उसकी दृढ़ महत्त्वाकांक्षा, संयतता, ईमानदारी और आत्मविश्वास के साथ मिलकर उसे आगे बढ़ाया था। वह ख़ूबी थी – दफ़्तरी लाल फ़ीते-बाज़ी के प्रति उसकी घृणा, पत्र-व्यवहार में यथाशक्ति कमी करना, चालू मामले के तथ्यों के साथ यथासम्भव प्रत्यक्ष सम्पर्क जोड़ना और मितव्ययता से काम लेना। ऐसा हुआ कि २ जून के विख्यात आयोग को ज़ारायस्काया गुबेर्निया की ज़मीनों की सिंचाई के मामले से निपटना पड़ रहा था। यह मामला कारेनिन के मन्त्रालय के अन्तर्गत था और फ़िज़ूलख़र्ची तथा दफ़्तरी लाल फ़ीतेबाज़ी की बढ़िया मिसाल था। कारेनिन इस बात को अच्छी तरह जानता था। ज़ारायस्काया गुबेर्निया की ज़मीनों की सिंचाई का मामला कारेनिन से पहले और उससे भी पहले के अधिकारी ने शुरू किया था। वास्तव में ही इस मामले पर बहुत-सा बेकार पैसा ख़र्च किया जा चुका था और किया जा रहा था तथा स्पष्टतः इसका कोई नतीजा नहीं निकलनेवाला था। अपना पद सम्भालते ही कारेनिन यह समझ गया और उसने इस मामले को ख़त्म

करना चाहा। लेकिन शुरू में जब उसकी अपनी स्थिति बहुत मज़बूत नहीं थी और जब उसे यह मालूम था कि बहुत-से लोगों के हित इस मामले के साथ उलझे हुए हैं, उसे ऐसा करना समझदारी की बात प्रतीत नहीं हुआ। बाद को दूसरे मामलों में व्यस्त हो जाने पर वह इसके बारे में भूल गया। अन्य सभी मामलों की भांति यह मामला भी अपने आप ही चलता रहा। (बहुत-से लोगों को इससे रोज़ी-रोटी मिलती थी, ख़ास तौर पर एक बहुत ही नैतिकतावादी और संगीत-प्रेमी परिवार को। इस परिवार की सभी बेटियां तार वाद्य-यन्त्र बजाती थीं और एक बेटी की शादी के वक़्त कारेनिन ने धर्म-पिता का कर्त्तव्य निभाया था।) कारेनिन के मतानुसार शत्रुतापूर्ण मन्त्रालय द्वारा इस मामले को उठाना शराफ़त का काम नहीं था, क्योंकि हर मन्त्रालय में इससे भी कहीं बुरे मामले थे, जिन्हें दफ़्तरी काम के जाने-माने शिष्टाचार के मुताबिक़ कोई नहीं उठाता था। अब अगर उसे ललकारा ही गया था, तो उसने दिलेरी से इस चुनौती को स्वीकार किया था और ज़ारायस्काया गुबेर्निया की ज़मीनों की सिंचाई के आयोग के काम के अध्ययन और जांच के लिये एक विशेष आयोग की नियुक्ति की मांग की थी। अब वह उन श्रीमानों को किसी तरह का चैन नहीं लेने दे रहा था। उसने ग़ैररूसी निवासियों के जीवन की सुव्यवस्था के बारे में एक अन्य आयोग की नियुक्ति की भी मांग की। ग़ैररूसी निवासियों के जीवन की सुव्यवस्था का प्रश्न २ जून की कमेटी में संयोग से ही उठाया गया था और इन लोगों की दुर्दशा को ध्यान में रखते हुए कारेनिन ने इसका ज़ोरदार समर्थन किया था। कमेटी में यह मामला कई मन्त्रालयों के बीच विवाद का कारण था। कारेनिन के विरोधी मन्त्रालय ने यह सिद्ध किया कि ग़ैररूसी लोग ख़ूब फल-फूल रहे हैं और प्रस्तावित पुनर्व्यवस्था से उनकी ख़ुशहाली नष्ट हो जायेगी। अगर कोई बुरी बात है भी, तो वह केवल इस कारण कि कारेनिन के मन्त्रालय ने क़ानून द्वारा सुनिश्चित उपायों को लागू नहीं किया है। कारेनिन अब ये मांगें करने का इरादा रखता था – एक, ग़ैररूसियों की स्थिति का वहीं जाकर अध्ययन करने के लिये एक आयोग नियुक्त किया जाये; दो, अगर ग़ैररूसियों की हालत वास्तव में वैसी ही हो, जैसी कि कमेटी के हाथों में विद्यमान सरकारी दस्तावेज़ों से प्रतीत होती है, तो उनकी इस दुर्दशा के (क) राजनी-

तिक, (ख) प्रशासकीय, (ग) आर्थिक, (घ) नृवंशीय, (ङ) भौतिक तथा (च) धार्मिक कारणों की जांच करने के लिये एक अन्य वैज्ञानिक आयोग नियुक्त किया जाये; तीन, शत्रुतापूर्ण मन्त्रालय से उन बुरी परिस्थितियों को दूर करने के लिये, जिनमें अब ग़ैररूसी थे, पिछले दस सालों में उठाये गये क़दमों के बारे में सूचना देने की मांग की जाये; और चार, तथा अन्तिम, मन्त्रालय को यह स्पष्ट करने के लिये कहा जाये कि उसने मूलभूत क़ानून के खण्ड ..., धारा १८ तथा धारा ३६ की टिप्पणी की भावना के विरुद्ध क्यों कार्रवाई की, जैसा कि कमेटी को ५ दिसम्बर १८६३ और ७ जून १८६४ को प्राप्त तथा १७० १५ और १८ ३०८ नम्बर से फ़ाइल की गयी सूचनाओं से स्पष्ट है। इन विचारों की रूप-रेखा को जल्दी-जल्दी लिखते समय कारेनिन के चेहरे पर सजीवता की लालिमा-सी दौड़ गयी। एक काग़ज़ लिख लेने के बाद वह उठा, उसने घण्टी बजायी और आवश्यक सूचना-सामग्री भेजने के लिये अपने सेक्रेटरी के नाम एक रुक़्क़ा भेज दिया। वह उठा, उसने कमरे का चक्कर लगाया, फिर से आन्ना के छविचित्र पर नज़र डाली, नाक-भौंह सिकोड़ी और तिरस्कारपूर्वक मुस्कराया। युगूवाइन उत्कीर्णन-लेखों के बारे में पुस्तक को थोड़ा और पढ़ने तथा उसमें फिर से रुचि लेने के बाद कारेनिन रात के ग्यारह बजे बिस्तर पर चला गया और वहां लेटे-लेटे जब उसे पत्नी के साथ अपनी स्थिति का ध्यान आया, तो वह उसे इतनी अधिक निराशाजनक नहीं प्रतीत हुई।

(१५)

व्रोन्स्की ने आन्ना से जब यह कहा कि उसकी स्थिति असह्नीय है और उसे इस बात के लिये राज़ी करना चाहा कि वह पति से सब कुछ कह दे, तो आन्ना ने बेशक बहुत दृढ़ता और क्रोध से उसका विरोध किया, फिर भी अपनी आत्मा की गहराई में वह अपनी स्थिति को झूठी और छलपूर्ण मानती थी तथा जी-जान से उसे बदलना चाहती थी। घुड़दौड़ों के बाद पति के साथ घर लौटते हुए उत्तेजना के क्षण में उसने उससे सब कुछ कह दिया था और उस पीड़ा के बावजूद, जो ऐसा करने पर उसने अनुभव की, वह ऐसा करके ख़ुश थी। पति के जाने पर उसने

अपने आपसे कहा कि वह ख़ुश है, कि अब सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा और कम से कम झूठ तथा छल-कपट तो बाक़ी नहीं रहेगा। उसे यह बिल्कुल निश्चित प्रतीत हुआ कि उसकी स्थिति अब सदा के लिये स्पष्ट हो जायेगी। उसकी यह नयी स्थिति बुरी हो सकती है, किन्तु स्पष्ट होगी, उसमें अस्पष्टता और झूठ नहीं होगा। वह समझती थी कि ये शब्द कह कर उसने ख़ुद को तथा अपने पति को जो पीड़ा दी थी, अब उसका पुरस्कार यह होगा कि सब कुछ एक स्पष्ट रूप धारण कर लेगा। उसी शाम को व्रोन्स्की से उसकी मुलाक़ात हुई, मगर पति के साथ उसकी जो बातचीत हुई थी, उसने उसकी चर्चा नहीं की, यद्यपि इसलिये कि स्थिति स्पष्ट हो जाये, व्रोन्स्की से यह कह देना चाहिये था।

अगली सुबह को आंख खुलने पर आन्ना को सबसे पहले वही शब्द याद आये, जो उसने पति से कहे थे। ये शब्द उसे इतने भयानक प्रतीत हुए कि अब वह यह नहीं समझ पा रही थी कि ऐसे अजीब और भद्दे शब्द कहने का वह साहस ही कैसे कर पायी तथा इस बात की कल्पना करने में असमर्थ थी कि इसका नतीजा क्या होगा। किन्तु शब्द तो कहे जा चुके थे और कारेनिन कुछ भी कहे बिना चला गया था। "मैं व्रोन्स्की से मिली और उसे यह नहीं बताया। जब वह जा रहा था, तो मैंने उसे वापस बुलाकर यह बताना चाहा, मगर फिर इरादा बदल लिया, क्योंकि अजीब-सा लगता था कि मैंने शुरू में ही उसे सब कुछ क्यों नहीं बताया था। कहना चाहते हुए भी मैंने क्यों नहीं कहा?" और इस प्रश्न के उत्तर में शर्म की गर्म-सी लाली उसके चेहरे पर छा गयी। वह समझ गयी कि किस चीज़ ने उसे ऐसा नहीं करने दिया, समझ गयी कि उसे शर्म महसूस हो रही थी। अपनी स्थिति, जो पिछली शाम को उसे स्पष्ट हो गयी प्रतीत हुई थी, अब अचानक न केवल अस्पष्ट, बल्कि पूरी तरह निराशाजनक लगी। उस बदनामी का ख़्याल करके, जिसके बारे में पहले उसने सोचा ही नहीं था, वह भयभीत हो उठी। उसने जब यह सोचा कि उसका पति क्या करेगा, तो भयानक से भयानक ख़्याल उसके दिमाग़ में आने लगे। उसे लगा कि अभी कारिन्दा आकर उसे घर से निकाल देगा और उसकी ऐसी बेइज़्ज़ती की ख़बर घर-घर पहुंच जायेगी। उसने ख़ुद से यह पूछा कि घर से निकाल दी जाने पर वह कहां जायेगी और उसे इसका कोई जवाब नहीं सूझा।

व्रोन्स्की का ध्यान आने पर उसे प्रतीत हुआ कि वह उसे प्यार नहीं करता, कि वह उसे बोझ अनुभव करने लगा है, कि उसकी बन जाने के लिये वह उससे नहीं कह सकती और इसलिये उसके प्रति उसे शत्रुभाव की अनुभूति होने लगी। उसे लगा कि उसने पति से जो शब्द कहे थे और जिन्हें वह लगातार अपनी कल्पना में दोहराती जाती थी, वे शब्द उसने सभी से कहे थे और सभी ने सुने थे। उसे उन लोगों के साथ आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी, जिनके साथ वह रहती थी। उसे नौकरानी को बुलाने और नीचे जाकर अपने बेटे तथा उसकी शिक्षिका को देखने की तो और भी कम हिम्मत हो रही थी।

नौकरानी, जो बहुत देर से आन्ना के दरवाज़े पर कान लगाये हुई थी, ख़ुद ही उसके कमरे में आ गयी। आन्ना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी आंखों में झांका और उसके चेहरे पर भय की लाली छा गयी। नौकरानी ने यह कहकर भीतर आने के लिये माफ़ी मांगी कि उसे प्रतीत हुआ था मानो घण्टी बजायी गयी है। वह पोशाक और एक रुक्क़ा ले आई। रुक्क़ा बेत्सी ने भेजा था। बेत्सी ने उसे याद दिलाया था कि लीज़ा मेर्कालोवा और काउंटेस श्तोल्त्स अपने प्रशंसकों कालूज़्स्की तथा बूढ़े स्त्रेमोव के साथ आज सुबह क्रोकेट की एक बाज़ी खेलने आयेंगी। "और कुछ नहीं, तो तौर-तरीक़ों के अध्ययन के लिये ही आ जाइये। मैं आपकी राह देख रही हूं," उसने लिखा था।

आन्ना ने रुक्क़ा पढ़कर गहरी सांस ली।

"कुछ नहीं, कुछ भी नहीं चाहिये," उसने शृंगार की मेज़ पर बोतलों और बाल संवारने के ब्रुशों को ठीक करती हुई आन्नुश्का से कहा। "तुम जाओ, मैं अभी कपड़े पहनकर बाहर आ जाऊंगी। कुछ भी, कुछ भी नहीं चाहिये।"

आन्नुश्का बाहर चली गयी, मगर आन्ना ने कपड़े पहनने शुरू नहीं किये। वह पहले की तरह ही सिर झुकाये और बांहें लटकाये बैठी रही, कभी-कभी उसका सारा शरीर सिहर उठता मानो वह कोई संकेत करना या कुछ कहना चाहती हो और फिर से ज्यों की त्यों बैठी रह जाती। वह लगातार दोहरा रही थी: "हे भगवान! हे मेरे भगवान!" लेकिन उसके लिये न तो "मेरे" और न "भगवान" शब्द ही कोई अर्थ रखता था। इस चीज़ के बावजूद कि उसे जिस धर्म की शिक्षा दी

गयी थी, उसके प्रति उसके मन में कभी कोई शंका पैदा नहीं हुई थी, उसके लिये अपनी इस स्थिति में धर्म का अवलंब ढूंढ़ना उतना ही अटपटा था, जितना कि ख़ुद कारेनिन से सहायता पाने की इच्छा करना। वह पहले से ही यह जानती थी कि उसके लिये धर्म की सहायता पाना तभी सम्भव है, जब वह उससे इन्कार कर दे, जो उसके जीवन का सारतत्त्व था। न केवल उसके मन पर भारी बोझ था, बल्कि वह एक नयी और उस मानसिक स्थिति के कारण भय अनुभव करने लगी, जिसकी उसे पहले कभी अनुभूति नहीं हुई थी। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा में हर चीज़ वैसे ही दो रूप धारण करने लगी है, जैसे थकी आंखों को सभी कुछ दोहरा दिखाई देने लगता है। क्या वह डरती है और क्या चाहती है, जो हुआ था या जो होगा, वह यह नहीं जानती थी।

"ओह, यह मैं क्या कर रही हूं!" अचानक सिर के दोनों ओर दर्द महसूस होने पर उसने अपने आपसे कहा। सम्भलने पर उसने देखा कि कनपटियों के पास वह दोनों हाथों से बालों को पकड़े हुए उन्हें खींच रही है। वह उछलकर खड़ी हुई और कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगी।

"कॉफ़ी तैयार है और सेर्योझा तथा शिक्षिका आपकी राह देख रहे हैं," आन्नुश्का ने फिर से कमरे में आकर और फिर से आन्ना को उसी स्थिति में पाकर कहा।

"सेर्योझा? क्या बात है सेर्योझा के बारे में?" सारी सुबह में पहली बार अपने बेटे के अस्तित्व के बारे में याद आने पर आन्ना ने अचानक सजीवता से पूछा।

"लगता है कि कोई क़सूर हो गया है उनसे," आन्नुश्का ने मुस्करा-कर उत्तर दिया।

"क्या क़सूर हो गया है?"

"कोनेवाले कमरे में कुछ आड़ू रखे थे। लगता है कि उन्होंने चुपके से एक खा लिया है।"

आन्ना अपने को जिस असहाय स्थिति में पा रही थी, बेटे का ध्यान आने पर वह अचानक उससे उबर आयी। उसे बेटे के लिये मां के जीने की कुछ हद तक निश्छल, यद्यपि अतिशयोक्तिपूर्ण वह भूमिका याद

आ गयी, जो पिछले कुछ सालों से वह निभा रही थी, तथा उसने खुश होते हुए यह अनुभव किया कि पति और व्रोन्स्की के साथ उसके सम्बन्ध चाहे कोई भी रूप क्यों न लें, उसके बावजूद उसका अपना एक सहारा है। यह सहारा उसका बेटा था। बेटे को वह किसी भी हालत में नहीं छोड़ सकती थी। बेशक पति उसे बुइज़्ज़त करके निकाल दे, बेशक व्रोन्स्की के प्यार का उफ़ान ठण्डा पड़ जाये और वह अपनी आज़ाद ज़िन्दगी बिताता रहे (उसने फिर कटुता और तिरस्कारपूर्वक उसके बारे में सोचा), वह अपने बेटे को नहीं छोड़ सकती। उसके जीवन का एक लक्ष्य है। बेटे के साथ अपनी इस स्थिति को मज़बूत करने के लिये, ताकि उसे उससे छीन न लिया जाये, उसे कुछ करना चाहिये, करना चाहिये। इतना ही नहीं, जल्दी, जितनी भी जल्दी सम्भव हो, जब तक कि उसे उससे छीन नहीं लिया गया, कुछ करना चाहिये। बेटे को लेकर कहीं चले जाना चाहिये। बस, यही है, जो उसे करना चाहिये। उसके लिये शान्त होना और इस यातनापूर्ण स्थिति से मुक्ति पाना ज़रूरी था। बेटे को ध्यान में रखते हुए कोई क़दम उठाने के विचार, इस ख़्याल ने कि इसी वक़्त उसको साथ लेकर कहीं चले जाना चाहिये, उसे शान्ति प्रदान की।

आन्ना ने झटपट कपड़े पहने, नीचे उतरी और दृढ़ क़दमों से मेहमानख़ाने में गयी, जहां हर दिन की तरह मेज़ पर कॉफ़ी रखी थी और शिक्षिका के साथ सेर्योझा उसकी राह देख रहा था। सिर से पांव तक सफ़ेद पोशाक पहने हुए सेर्योझा दर्पण के नीचे मेज़ के पास खड़ा था और पीठ तथा सिर झुकाये हुए बहुत ही ध्यानमग्न होकर, जिससे वह परिचित थी और जिस मुद्रा में वह अपने पिता से मिलता-जुलता प्रतीत होता था, उन फूलों के साथ कुछ कर रहा था, जिन्हें लाया था।

शिक्षिका के चेहरे पर विशेष रूप से बहुत कड़ाई झलक रही थी। सेर्योझा बहुत ज़ोर से, जैसा कि अक्सर उसके साथ होता था, चिल्लाया: "ओ, अम्मा!" और इस दुविधा में कि फूल छोड़कर मां का अभिवादन करने जाये या माला बना ले और फूलों को लेकर जाये, जहां का तहां ठिठक कर रह गया।

शिक्षिका अभिवादन करने के बाद बहुत विस्तारपूर्वक और हर

चीज़ को स्पष्ट करते हुए सेर्योझा के क़सूर के बारे में बताने लगी, मगर आन्ना उसकी बातें नहीं सुन रही थी। वह यह सोच रही थी कि शिक्षिका को अपने साथ ले जायेगी या नहीं। "नहीं, नहीं ले जाऊंगी," उसने तय किया। "बेटे को लेकर अकेली ही जाऊंगी।"

"हां, यह बहुत बुरी बात है," आन्ना ने कहा और बेटे का कंधा थामकर कड़ी नहीं, बल्कि भीरु-सी दृष्टि से, जिससे लड़का चक्कर में पड़ा और ख़ुश भी हुआ, देखा और चूमा। "इसे मेरे पास छोड़ दीजिये," उसने हैरान होती हुई शिक्षिका से कहा और बेटे के हाथ अपने हाथ में लिये हुए ही उस मेज़ पर जा बैठी, जहां कॉफ़ी रखी थी।

"अम्मा! मैं... मैं... मैंने नहीं..." बेटे ने उसके चेहरे के भाव से यह समझने की कोशिश करते हुए कि आड़ू के लिये उसके साथ क्या होनेवाला है, कहा।

"सेर्योझा," शिक्षिका के कमरे से बाहर जाते ही आन्ना बोली, "यह बुरी बात है, लेकिन तुम फिर कभी ऐसा नहीं करोगे न? तुम मुझे प्यार करते हो न?"

आन्ना ने अनुभव किया कि उसकी आंखें डबडबायी आ रही हैं। "क्या मैं इससे प्यार किये बिना रह सकती हूं?" बेटे की डरी-सहमी और साथ ही प्रसन्न आंखों में झांकते हुए उसने अपने आपसे कहा। "क्या मुझे यातना देने के लिये वह भी अपने पिता का साथ देगा? क्या मुझ पर तरस नहीं आयेगा उसे?" आंसू उसके चेहरे पर छलक आये थे और उन्हें छिपाने के लिये वह तेज़ी से उठी और लगभग भागती हुई बरामदे में चली गयी।

पिछले दिनों में गरज के साथ बारिश होने के बाद आज मौसम ठण्डा और साफ़ हो गया था। धुले हुए पत्तों के बीच से छननेवाली तेज़ धूप के बावजूद हवा में ठण्ड थी।

आन्ना ठण्ड और आन्तरिक भय से, जिसने खुली हवा में नयी शक्ति के साथ उसे जकड़ लिया था, सिहर उठी।

"जाओ, Mariette के पास जाओ," उसने अपने पीछे-पीछे बाहर आनेवाले सेर्योझा से कहा और बरामदे में बिछी चटाई पर इधर-उधर आने-जाने लगी। "क्या वे मुझे क्षमा नहीं कर देंगे, यह नहीं समझ पायेंगे कि जो हुआ है, उसके सिवा कुछ हो ही नहीं सकता था?" उसने अपने आपसे कहा।

ऐस्प वृक्षों के पास रुककर और हवा से कांपती हुई उनकी फुनगियों को देखते हुए, जिनके धुले पत्ते ठण्डी धूप में खूब चमक रहे थे, वह समझ गयी कि वे क्षमा नहीं करेंगे और सभी कुछ तथा हर कोई उसके प्रति अब ऐसे ही निर्दयी होगा, जैसे यह आकाश और जैसे यह हरियाली है। उसने फिर से यह महसूस किया कि उसकी आत्मा में हर चीज़ दो रूप धारण करने लगी है। "नहीं, सोचना नहीं, सोचना नहीं चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। "जाने की तैयारी करनी चाहिये। कहां? कब? किसको अपने साथ लूं? हां, मास्को चलना चाहिये, शाम की गाड़ी से। आन्नुश्का और सेर्योझा तथा नितान्त आवश्यक चीज़ें साथ लेकर। लेकिन इससे पहले उन दोनों को पत्र लिखने चाहिये!" वह जल्दी से घर के भीतर अपने कमरे में गयी और मेज़ पर बैठकर उसने पति को लिखा:

"जो कुछ हो चुका है, उसके बाद मैं आपके घर में और नहीं रह सकती। मैं जा रही हूं और बेटे को अपने साथ लिये जा रही हूं। क़ानून-क़ायदे मैं नहीं जानती और इसलिये मुझे यह मालूम नहीं कि बेटे को किसके पास रहना चाहिये। लेकिन मैं इसलिये उसे अपने साथ लिये जा रही हूं कि उसके बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती। इतनी उदारता दिखाइये, उसे मेरे पास रहने दीजिये।"

अभी तक तो वह जल्दी-जल्दी और स्वाभाविक ढंग से लिखती रही थी, किन्तु पति से उदारता की अपील करने पर, जिसे वह उसमें मानने को तैयार नहीं थी, तथा किसी मर्मस्पर्शी बात के साथ पत्र को समाप्त करने की आवश्यकता ने उसे रोक दिया।

"अपने अपराध और पश्चाताप की चर्चा मैं नहीं कर सकती, क्योंकि ..."

अपने विचारों में कोई शृंखला न अनुभव करते हुए वह फिर से रुकी। "नहीं," उसने अपने आपसे कहा, "कुछ ज़रूरत नहीं है इसकी," और पत्र फाड़कर उसने पति की उदारता की बात छोड़ते हुए उसे फिर से लिखा और मुहर लगा दी।

दूसरा पत्र व्रोन्स्की को लिखना था। "मैंने पति को सब कुछ बता दिया है," उसने लिखा और आगे कुछ भी लिखने में असमर्थ देर तक यों ही बैठी रही। यह इतना भद्दा और स्त्रैणता के इतना विरुद्ध था।

"और फिर मैं उसे लिख ही क्या सकती हूं?" उसने अपने आपसे कहा। फिर से उसके चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ गयी, उसकी शान्तचित्तता की याद आ गयी और उसके प्रति खीझ की भावना ने उसे एक ही वाक्य लिखे हुए काग़ज़ को फाड़कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर देने को विवश किया। "कुछ ज़रूरत नहीं इसकी," उसने अपने आपसे कहा और लेखन-सामग्री रखकर वह ऊपर चली गयी, शिक्षिका और नौकरों-चाकरों को उसने यह बताया कि आज मास्को जा रही है और उसी समय अपनी चीज़ें इकट्ठी करने लगी।

(१६)

देहात के बंगले के चौकीदार, माली और नौकर-चाकर सभी कमरों में आते-जाते हुए चीज़ें उठाकर ला रहे थे। छोटी-बड़ी अलमारियां खुली हुई थीं, रस्सियां लाने के लिये किसी को दुकान पर भेजना पड़ा और फ़र्श पर अख़बारी काग़ज़ फैले हुए थे। दो सन्दूक़, थैले और कम्बल ड्योढ़ी में लाकर रख दिये गये थे। बग्घी और किराये की दो घोड़ा-गाड़ियां बाहर दरवाज़े के सामने खड़ी थीं। सामान पैक करने के काम में आन्तरिक परेशानी को भूल जानेवाली आन्ना अपने कमरे की मेज़ के सामने खड़ी हुई सफ़री थैला तैयार कर रही थी, जब आन्नुश्का ने घर के क़रीब पहुंचती हुई बग्घी की खड़खड़ाहट की ओर उसका ध्यान आकृष्ट किया। आन्ना ने खिड़की में से बाहर झांका और कारेनिन के सन्देशवाहक को दरवाज़े की घण्टी बजाते देखा।

"जाकर मालूम करो कि क्या मामला है," आन्ना ने कहा और शान्ति से अपने को हर चीज़ के लिये तैयार करके तथा घुटनों पर हाथ टिकाकर आरामकुर्सी में बैठ गयी। नौकर ने कारेनिन के हाथ का लिखा हुआ मोटा-सा पैकेट लाकर दिया।

"सन्देशवाहक को उत्तर लाने का आदेश दिया गया है," नौकर ने बताया।

"अच्छी बात है," आन्ना ने कहा और ज्योंही नौकर बाहर गया, उसने कांपती उंगलियों से पत्र खोला। नये नोटों की एक गड्डी उसमें से निकलकर गिर पड़ी। वह पत्र निकालकर उसे अन्त से पढ़ने लगी।

"आपके यहां आने से सम्बन्धित सब प्रबंध कर दिये जायेंगे। इस बात की ओर ध्यान देने का अनुरोध करता हूं कि अपने इस अनुरोध की पुर्त्ति को में विशेष महत्त्व देता हूं," उसने पढ़ा। उसने जल्दी-जल्दी पीछे की ओर उसे आगे पढ़ा, सारे ख़त को पढ़ा और एक बार फिर सारे पत्र को शुरू से अन्त तक पढ़ा। पत्र समाप्त करने पर उसे लगा कि वह ठण्ड महसूस कर रही है और उस पर ऐसी भयानक मुसीबत टूट पड़ी है, जिसकी उसने आशा नहीं की थी।

सुबह उसे अपने पति से कहे हुए शब्दों के लिये पश्चाताप हो रहा था और वह केवल यही चाह रही थी कि वे शब्द न कहे गये होते। यह पत्र उन शब्दों को अनकहा स्वीकार कर रहा था और जो वह चाहती थी, उसे वही दे रहा था। किन्तु अब उसे यह पत्र उससे भी कहीं ज़्यादा भयानक प्रतीत हो रहा था, जिसकी वह कल्पना कर सकती थी।

"वह सही है! सही है!" उसने कहा। "ज़ाहिर है कि वह हमेशा सही होता है, वह ईसाई धर्म का अनुयायी है, वह उदार-दयालु है! हां, घटिया और दुष्ट व्यक्ति है वह! मेरे सिवा यह कोई नहीं समझता और समझ भी नहीं पायेगा। मैं इसे स्पष्ट करने में असमर्थ हूं। लोग कहते हैं कि वह धर्म-परायण, सदाचारी, ईमानदार और समझदार आदमी है। किन्तु जो कुछ मैंने देखा है, वे उसे नहीं देखते। वे नहीं जानते कि कैसे आठ सालों तक उसने मेरे जीवन को घोंटा, मुझमें जो कुछ सजीव था, उसको दबा दिया, कि उसने एक बार भी यह नहीं सोचा – मैं जीती-जागती नारी हूं, जिसे प्यार की अपेक्षा है। वे नहीं जानते कि कैसे हर क़दम पर उसने मेरा अपमान किया और आत्मतुष्ट रहा। क्या मैंने अपने जीवन का औचित्य ढूंढ़ पाने के लिये कोशिश नहीं की, जी-जान से कोशिश नहीं की? क्या मैंने उससे प्यार करने की, जब पति को प्यार करना सम्भव नहीं रहा, तो बेटे को प्यार करने की कोशिश नहीं की? किन्तु वह वक़्त आया, जब मैं यह समझ गयी कि अब अपने को और धोखा नहीं दे सकती, कि मैं हाड़-मांस की बनी हुई हूं, कि अगर भगवान ने मुझे ऐसा बनाया है कि मैं प्यार करूं और ज़िन्दा रहूं, तो इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। और अब? वह अगर मेरी हत्या कर डालता, उसे मार डालता, तो मैं सब कुछ सहन कर लेती, मैं सब कुछ क्षमा कर देती, लेकिन नहीं, वह ..."

"वह क्या करेगा, मैं इसका क्यों अनुमान नहीं लगा पायी? वह वही करेगा, जो उसके नीच स्वभाव के अनुरूप है। वह जो भी करेगा, ठीक ही रहेगा, लेकिन मुझे, तबाह हो चुकी औरत को और बुरी तरह, और नीचतापूर्वक तबाह कर डालेगा ..." "आप स्वयं ही इसकी कल्पना कर सकती हैं, जो आप और आपके बेटे के साथ बीतनेवाला है," उसे पति के पत्र के ये शब्द याद हो आये। "यह इस बात की धमकी है कि वह बेटे को मुझसे छीन लेगा और सम्भवतः उनके मूर्खतापूर्ण क़ानून के मुताबिक़ ऐसा मुमकिन भी है। किन्तु क्या मैं यह नहीं जानती हूं कि वह ऐसा क्यों कह रहा है? वह बेटे के प्रति मेरे प्यार में भी विश्वास नहीं करता या उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है (जैसा कि वह हमेशा उसका मज़ाक़ उड़ाता रहा है), मेरी इस भावना का तिरस्कार करता है, किन्तु वह जानता है कि मैं बेटे को छोड़कर कभी नहीं जाऊंगी, बेटे को नहीं छोड़ सकती, कि बेटे के बिना मेरे लिये उस व्यक्ति के साथ भी, जिसे मैं प्यार करती हूं, जीवन का कोई अर्थ नहीं हो सकता, कि बेटे को छोड़कर भाग जाने पर मैं सबसे अधिक कलंकित और घृणित नारी जैसा व्यवहार करूंगी – वह यह जानता है और जानता है कि मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगी।"

"हमारा जीवन पहले की तरह ही चलता जाना चाहिये," उसे पत्र का एक अन्य वाक्य याद आ गया। "यह जीवन तो पहले भी यातनाप्रद था और पिछले कुछ समय में तो बहुत ही भयानक था। अब कैसा होगा यह? वह यह सब कुछ जानता है, जानता है कि मैं इस बात के लिये पश्चाताप नहीं कर सकती कि सांस लेती हूं, कि प्यार करती हूं, कि झूठ और कपट के सिवा इसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा, लेकिन उसके लिये तो मुझे यातना देते जाना ज़रूरी है। मैं उसे जानती हूं, मैं जानती हूं कि जैसे मछली पानी में, वैसे ही वह झूठ में तैरता और इससे आनन्दित होता है। लेकिन नहीं, मैं उसे यह आनन्द नहीं पाने दूंगी, मैं झूठ का वह जाला तार-तार कर डालूंगी, जिसमें वह मुझे उलझाना चाहता है। इसका जो भी नतीजा होना है, हो जाये। झूठ और धोखे-फ़रेब से तो सभी कुछ बेहतर है!

"लेकिन कैसे करूं यह? हे मेरे भगवान! हे मेरे भगवान! क्या मुझसे ज़्यादा बदक़िस्मत कभी कोई नारी थी?.."

"नहीं, तार-तार कर डालूंगी, तार-तार कर डालूंगी!" उछलकर खड़ी होते और अपने आंसुओं पर क़ाबू पाते हुए वह चिल्ला उठी। वह उसे दूसरा ख़त लिखने के लिये मेज़ के पास गयी। किन्तु अपनी आत्मा की गहराई में वह पहले ही यह अनुभव कर रही थी कि कुछ भी तार-तार करने की शक्ति उसमें नहीं होगी, कितनी ही झूठी और बेई-मानी की स्थिति होने पर भी वह उसमें से नहीं निकल पायेगी।

वह लिखने की मेज़ पर बैठ गयी, किन्तु पत्र लिखने के बजाय मेज़ पर हाथ रखकर उसने उनपर सिर टिका दिया तथा सिसकते और गहरी सांसों के कारण उभरते-गिरते वक्ष के साथ बच्चों की तरह रोने लगी। वह इस कारण रो रही थी कि उसकी स्थिति के स्पष्ट तथा निश्चित होने का स्वप्न सदा के लिये भंग हो चुका था। वह पहले से ही यह जानती थी कि सब कुछ ऐसा ही रहेगा और इतना ही नहीं, पहले से ज़्यादा बुरा हो जायेगा। वह अनुभव कर रही थी कि ऊंचे समाज में उसे जो स्थिति प्राप्त थी और सुबह के समय जो उसे इतनी महत्त्वहीन प्रतीत हुई थी, वह उसे प्रिय थी; कि उसे पति और बेटे को छोड़ने तथा प्रेमी के साथ अपना भाग्य जोड़नेवाली कलंकित नारी की स्थिति में बदलने की शक्ति वह नहीं जुटा सकेगी; कि कितनी ही कोशिश करने पर भी वह अपने से अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकेगी। वह कभी भी प्यार की स्वतन्त्रता को अनुभव नहीं कर पायेगी और हमेशा अपराधिनी पत्नी बनी रहेगी, जिसपर किसी भी क्षण पर्दाफ़ाश होने का ख़तरा मंडराता रहेगा, जो हमेशा एक पराये और स्वतन्त्र व्यक्ति के साथ अपमानजनक सम्बन्ध बनाये रखने के लिये, जिसके जीवन को वह अंग नहीं बन पायेगी, पति को धोखा देती रहेगी। वह जानती थी कि ऐसा ही होगा और साथ ही यह इतना भयानक था कि इसका क्या अन्त होगा, वह इसकी कल्पना करने में असमर्थ थी। और अपने पर क़ाबू पाने में असमर्थ वह ऐसे रो रही थी, जैसे दण्ड पानेवाले बच्चे रोते हैं।

नौकर के पैरों की आहट से वह होश में आने को विवश हुई और उससे अपना मुंह छिपाकर उसने यह ढोंग किया कि पत्र लिख रही है।

"सन्देशवाहक उत्तर देने का अनुरोध कर रहा है," नौकर ने कहा।

"उत्तर? हां," आन्ना बोली, "कह दो थोड़ा रुके। मैं घण्टी बजाकर बुला लूंगी।"

"मैं क्या लिख सकती हूं?" वह सोच रही थी। "मैं अकेली क्या तय कर सकती हूं? मैं क्या जानती हूं? मैं क्या चाहती हूं? किस चीज़ से प्यार है मुझे?" उसने फिर से यह अनुभव किया कि उसकी आत्मा में सभी कुछ दो रूप धारण करने लगा है। इस भावना से वह फिर भयभीत हो उठी और क्रियाशीलता के लिये उसने मस्तिष्क में आनेवाले पहले ही उस आधार को थाम लिया, जो अपने बारे में उसके विचारों से उसे मुक्ति दिला सकता था। "मुझे अलेक्सेई (ऐसे उसने मन ही मन व्रोन्स्की को सम्बोधित किया) से मिलना चाहिये, सिर्फ़ वही यह बता सकता है कि मुझे क्या करना चाहिये। बेत्सी के यहां जाऊंगी, सम्भव है कि वहां उससे मेरी भेंट हो जाये," उसने अपने आपसे कहा और सर्वथा यह भूल गयी कि पिछली रात को, जब उसने व्रोन्स्की से कहा था कि वह प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां नहीं जायेगी, तो व्रोन्स्की ने भी इसी कारण वहां जाने से इन्कार कर दिया था। आन्ना ने मेज़ के पास जाकर पति को यह लिख भेजा: "मुझे आपका पत्र मिल गया है। आ०" – और घण्टी बजाकर अपना उत्तर नौकर को दे दिया।

"हम मास्को नहीं जा रही हैं," उसने कमरे में दाख़िल होनेवाली आन्नुश्का से कहा।

"बिल्कुल नहीं जा रही हैं?"

"नहीं, कल तक सामान को ऐसे ही बंधा रहने दो और बग्घी को रोके रहो। मैं प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां जाऊंगी।"

"कौन-सी पोशाक तैयार करूं?"

(१७)

क्रोकेट की बाज़ी में हिस्सा लेनेवालों में, जिसके लिये प्रिंसेस त्वेरस्काया ने आन्ना को बुलाया था, दो महिलायें और उनके प्रशंसक शामिल थे। ये दोनों महिलायें पीटर्सबर्ग के बहुत ही चुने हुए लोगों की एक नयी मण्डली की, जिन्हें किसी चीज़ के अनुकरण के अनुकरण में

les sept merveilles du monde* कहा जाता था, मुख्य प्रतिनिधि थीं। यह सही है कि ये महिलायें ऊंचे समाज के लोगों की मण्डली से सम्बन्ध रखती थीं, किन्तु उस मण्डली की एकदम दुश्मन थीं, जिसमें आन्ना जाती थी। इसके अलावा बूढ़ा स्त्रेमोव, जो पीटर्सबर्ग का एक प्रभावशाली व्यक्ति और लीज़ा मेर्कालोवा का प्रशंसक था, सरकारी नौकरी के मामले में कारेनिन का शत्रु था। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आन्ना यहां नहीं आना चाहती थी और प्रिंसेस त्वेरस्काया के रुक़्क़े में उसके इसी इन्कार के बारे में कुछ इशारे किये गये थे। अब व्रोन्स्की से मिल पाने की उम्मीद करते हुए आन्ना यहां आने को इच्छुक थी।

आन्ना दूसरे मेहमानों के पहुंचने से पहले ही प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां पहुंच गयी।

आन्ना जब प्रिंसेस त्वेरस्काया के घर में दाख़िल हो रही थी, तो दरबारी प्रबन्धक के समान अपनी क़लमों को संवारे हुए व्रोन्स्की का नौकर भी भीतर प्रवेश कर रहा था। वह दरवाज़े के क़रीब रुक गया और टोपी उतारकर उसने आन्ना को पहले भीतर जाने दिया। आन्ना ने उसे पहचान लिया और केवल अभी उसे यह याद आया कि व्रोन्स्की ने कल यहां आने से इन्कार कर दिया था। शायद इसी बारे में उसने रुक़्क़ा भेजा है।

आन्ना ड्योढ़ी में खड़ी ऊपर के कपड़े उतार रही थी, जब उसने व्रोन्स्की के नौकर को दरबारी प्रबन्धक की भांति ही 'र' का उच्चारण करते हुए यह कहते सुना: "काउंट की ओर से प्रिंसेस के लिये" और उसने रुक़्क़ा दे दिया।

आन्ना ने पूछना चाहा कि उसके साहब कहां हैं। उसका मन हुआ कि घर वापस आकर उसे पत्र लिख भेजे कि वह उसके यहां आ जाये या फिर ख़ुद उसके यहां चली जाये। लेकिन वह पहला, दूसरा या तीसरा, कुछ भी तो नहीं कर पायी। उसे अपने आने की सूचना देनेवाली घण्टी की आवाज़ सुनाई दी और उसने देखा कि प्रिंसेस त्वेरस्काया का नौकर खुले हुए दरवाज़े के सामने टेढ़ा खड़ा होकर उसके भीतरवाले कमरों में जाने की राह देख रहा है।

---

* दुनिया के सात अजूबे। (फ़्रांसीसी)

"प्रिंसेस बाग़ में हैं, अभी उन्हें सूचना दे दी जायेगी। आप बाग़ में चलना पसन्द नहीं करेंगी?" दूसरे कमरे में एक अन्य नौकर ने पूछा।

अनिश्चितता और अस्पष्टता की स्थिति वैसी ही बनी हुई थी, जैसी घर पर। वह तो पहले से भी बुरी थी, क्योंकि कुछ भी करना सम्भव नहीं था, व्रोन्स्की से मिलना मुमकिन नहीं था और यहां, पराये तथा इस समय उसके मूड के बिल्कुल प्रतिकूल लोगों की संगत में यहां रुकना ज़रूरी था। किन्तु वह ऐसी पोशाक पहने थी, जो उसे मालूम था कि उसपर फबती है। वह अकेली नहीं थी, उसके इर्द-गिर्द काहिली का अभ्यस्त, ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण था और घर की तुलना में यहां उसका मन हल्का था। उसे यह सोचने की ज़रूरत नहीं थी कि वह क्या करे। हर चीज़ अपने आप होती जा रही थी। अपने सजीलेपन से चकित करनेवाली सफ़ेद पोशाक पहने अपनी ओर आती हुई बेत्सी को देखकर आन्ना सदा की भांति मुस्करायी। प्रिंसेस त्वेरस्काया के साथ तुश्केविच और रिश्ते की एक लड़की भी थी, जिसके राजधानी से दूर रहनेवाले मां-बाप की ख़ुशी का इसलिये कोई ठिकाना नहीं था कि उनकी बेटी जानी-मानी प्रिंसेस के यहां गर्मी बिता रही थी।

सम्भवतः आन्ना में कोई अजीब बात रही होगी, क्योंकि बेत्सी का फ़ौरन इसकी ओर ध्यान गया।

"पिछली रात मैं ढंग से सो नहीं पाई," आन्ना ने इन तीनों की तरफ़ आते नौकर पर नज़र डालते हुए, जो उसकी कल्पना के अनुसार व्रोन्स्की का रुक्क़ा लाया था, प्रिंसेस त्वेरस्काया के प्रश्न का उत्तर दिया।

"मैं कितनी ख़ुश हूं कि आप आ गयीं," बेत्सी ने कहा। "मैं थक गयी हूं और जब तक वे लोग आते हैं, चाय का प्याला पीना चाहती हूं। और आप माशा को साथ लेकर ज़रा उस क्रोकेट ग्राउंड की जांच कर लें, जहां उन्होंने घास काटी है," उसने तुश्केविच को सम्बोधित करते हुए कहा। "हम आपके साथ चाय पीते हुए दिली बातें कर लेंगी – we'll have a cosy chat, ठीक है न?" उसने मुस्कराते और आन्ना का वह हाथ दबाते हुए कहा, जिसमें वह छाता लिये थी।

"ख़ास तौर पर जबकि मैं आपके यहां बहुत देर तक नहीं रुक सकती। मुझे बूढ़ी व्रेदे के यहां ज़रूर ही जाना है। यह समझिये कि सौ

साल हो गये हैं मुझे उससे वादा किये हुए," आन्ना ने कहा, जिसके लिये झूठ बोलना, जो उसके स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप नहीं था, समाज में न केवल साधारण और स्वाभाविक बन गया था, बल्कि उसे ख़ुशी भी प्रदान करता था।

एक सेकण्ड पहले तक उसने जो सोचा भी नहीं था, वह किसलिये कह दिया, आन्ना किसी प्रकार भी यह स्पष्ट न कर पाती। उसने सिर्फ़ इसी बात को ध्यान में रखते हुए ऐसा कहा था कि चूंकि व्रोन्स्की यहां नहीं आयेगा, इसलिये उसे यहां से जाने की आज़ादी सुनिश्चित कर लेनी तथा किसी न किसी प्रकार उससे मिलने की कोशिश करनी चाहिये। लेकिन उसने मदाम व्रेदे का ही क्यों नाम लिया, जिसके साथ अन्य बहुत-से लोगों की तरह उसने आने का वादा किया हुआ था, आन्ना यह न बता सकती। फिर भी, जैसा कि बाद में पता चला, व्रोन्स्की के साथ मुलाक़ात के अधिकतम चातुर्यपूर्ण उपायों की कल्पना करने पर भी वह इससे बेहतर और कुछ न सोच पाती।

"नहीं, मैं आपको किसी हालत में नहीं जाने दूंगी," आन्ना के चेहरे को बहुत ग़ौर से देखते हुए उसने कहा। "सच कहती हूं कि अगर आपको प्यार न करती होती, तो आपसे नाराज़ हो जाती। लगता है कि आप इस बात से डरती हैं कि मेरे दोस्तों की संगत से आप अटपटी स्थिति में पड़ जायेंगी। कृपया हमारे लिये छोटे मेहमानख़ाने में चाय ले आओ," सदा की भांति नौकर से बात करते हुए उसने अपनी आंखें सिकोड़कर कहा। उससे रुक्क़ा लेकर उसने पढ़ा। "अलेक्सेई हमें चकमा दे गया," उसने फ़्रांसीसी में कहा, "लिखता है कि वह नहीं आ सकता," उसने ऐसे स्वाभाविक और साधारण अन्दाज़ में कहा, मानो उसके दिमाग़ में यह बात कभी आ ही नहीं सकती थी कि व्रोन्स्की क्रोकेट के खिलाड़ी के अतिरिक्त आन्ना के लिये कोई और भी महत्त्व रखता है।

आन्ना जानती थी कि बेत्सी को सब कुछ मालूम है, लेकिन उसकी उपस्थिति में वह व्रोन्स्की की जैसे चर्चा करती थी, उसे सुनते हुए उसे हमेशा क्षण भर को यह विश्वास हो जाता था कि वह कुछ नहीं जानती।

"अच्छा!" आन्ना ने ऐसे उदासीनता से कहा मानो इस मामले में उसकी बहुत कम दिलचस्पी हो और मुस्कराते हुए कहती गयी: "आपके दोस्तों की संगत से कैसे कोई अटपटी स्थिति में पड़ सकता है?" अन्य

नारियों की भांति शब्दों का यह खिलवाड़, रहस्य का यह दुराव-छिपाव आन्ना को भी बहुत प्रिय था। न तो छिपाने की आवश्यकता और न वह लक्ष्य, जिसके लिये इसे छिपाया गया था, बल्कि छिपाने की यह प्रक्रिया ही उसे आकर्षित करती थी। "मैं पोप से ज़्यादा कैथौलिक नहीं हो सकती," वह बोली। "स्त्रेमोव और लीज़ा मेर्कालोवा हमारी सोसाइटी की क्रीम हैं। फिर हर जगह ही उनका स्वागत-सत्कार होता है और मैं" –उसने मैं पर विशेष ज़ोर दिया–"कभी भी कठोर और अनुदार नहीं रही। बात यह है कि मैं जल्दी में हूं।"

"नहीं, शायद आप स्त्रेमोव से नहीं मिलना चाहतीं? उसे और अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच को सरकारी कमेटी में चोंचें लड़ाने दो, हमें इससे कोई मतलब नहीं। लेकिन ऊंचे समाज के मेरी जान-पहचान के लोगों में वह बहुत ही मधुर व्यक्ति है तथा क्रोकेट के खेल का तो दीवाना है। आप ख़ुद देख लेंगी। लीज़ा के बूढ़े प्रेमी की हास्यास्पद स्थिति के बावजूद यह देखते ही बनता है कि वह इस हास्यास्पद स्थिति से कैसे बच निकलता है। बहुत ही प्यारा व्यक्ति है वह। साफ़ो श्तोल्त्स को आप नहीं जानतीं? यह नया, बिल्कुल नया ही रंग है।"

बेत्सी यह सब कुछ कह रही थी और आन्ना उसकी ख़ुशी से चमकती और बुद्धिमत्तापूर्ण दृष्टि से यह महसूस कर रही थी कि वह कुछ हद तक उसकी परिस्थिति को समझती है और कोई रास्ता ढूंढ़ना चाहती है। वे दोनों अध्ययन-कक्ष में थीं।

"फिर भी अलेक्सेई को रुक्क़ा लिख भेजना चाहिये," और बेत्सी ने मेज़ पर बैठकर कुछ पंक्तियां लिखीं और रुक़्क़े को लिफ़ाफ़े में डाल दिया। "मैंने लिखा है कि वह दोपहर के खाने के लिये आ जाये। मेरे यहां एक महिला खाने के वक़्त अकेली होगी। ज़रा देख लीजिये, मेरा रुक्क़ा प्रभावपूर्ण है या नहीं? क्षमा चाहती हूं, क्षणभर को मुझे आपको अकेली छोड़ना होगा। कृपया लिफ़ाफ़े को बन्द करके भेज दीजिये," उसने दरवाज़े के निकट से कहा, "मुझे कुछ हिदायतें देनी हैं।"

कुछ भी सोचे बिना ही आन्ना बेत्सी का पत्र लेकर मेज़ पर बैठ गयी और उसे पढ़े बिना उसने नीचे यह लिख दिया: "आपसे मिलना बहुत

ज़रूरी है। ब्रेदे के बाग़ में आ जाइये। छः बजे वहां पहुंच जाऊंगी।" उसने लिफ़ाफ़ा बन्द कर दिया और बेत्सी ने लौटने पर उसके सामने ही पत्र को भेज दिया।

सचमुच, चाय पीते वक़्त, जो छोटे ठण्डे मेहमानख़ाने में छोटी-सी मेज़ पर लायी गयी थी, दोनों नारियों के बीच a cosy chat* शुरू हो गयी, जिसका मेहमानों के आने से पहले प्रिंसेस त्वेरस्काया ने वादा किया था। वे आनेवालों के बारे में बातचीत करने लगीं और बातचीत लीज़ा मेर्कालोवा पर केन्द्रित हो गयी।

"वह बहुत प्यारी है और मुझे हमेशा बहुत अच्छी लगती है," आन्ना ने कहा।

"आपको उसे प्यार करना चाहिये। वह आपकी दीवानी है। घुड़दौड़ों के बाद वह मेरे पास आई और आपसे मुलाक़ात न होने पर बड़ी निराश हुई। वह कहती है कि आप बिल्कुल किसी उपन्यास की नायिका जैसी हैं और अगर वह पुरुष होती, तो आपके कारण हज़ारों बेवक़ूफ़ियां कर डालती। स्त्रेमोव उससे कहता है कि वह यों भी ऐसा करती है।"

"किन्तु, कृपया मुझे यह बताइये, मैं कभी भी समझ नहीं पाई," आन्ना ने कुछ देर चुप रहने के बाद ऐसे अन्दाज़ में कहा, जो स्पष्ट करता था कि वह यों ही बेकार यह सवाल नहीं पूछ रही है, बल्कि उसके लिये जितना होना चाहिये था, वह उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। "कृपया यह बताइये कि प्रिंस कालूज़्स्की से, जिसे सब मीश्का कहते हैं, उसका क्या सम्बन्ध है? मैं उनसे कम मिली हूं। कैसा सम्बन्ध है यह?"

बेत्सी आंखों में ही मुस्कराई और उसने ग़ौर से आन्ना को देखा।

"नया ढंग है," वह बोली। "उन सभी ने यह ढंग चुना है। परवाह करे उनकी जूती। लेकिन परवाह न करने के अन्दाज़ तो अलग-अलग हो सकते हैं।"

"हां, लेकिन कालूज़्स्की के साथ उसके कैसे सम्बन्ध हैं?"

बेत्सी अप्रत्याशित बहुत ख़ुशमिज़ाजी से तथा खुलकर हंस दी, जैसा कि वह बहुत कम करती थी।

---

* प्यारी बातचीत। (अंग्रेज़ी)

"यह तो आप प्रिंसेस म्याग्काया के अधिकार-क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं। कोई भोला बच्चा ही ऐसा सवाल पूछ सकता है," बेत्सी ने सम्भवतः अपनी हंसी रोकनी चाही, पर असफल रही और उसने दूसरों को भी प्रभावित करनेवाला ऐसा ठहाका लगाया, जैसा कि कभी-कभार हंसनेवाले लोग ही लगाते हैं। "उनसे पूछना चाहिये," उसने हंसी के आंसुओं के बीच कहा।

"नहीं, आप हंस रही हैं," आन्ना खुद भी उसकी हंसी से प्रभावित होकर बरबस हंसते हुए बोली, "लेकिन मैं कभी भी नहीं समझ पायी। इस मामले में पति की भूमिका मेरी समझ में नहीं आती।"

"पति? लीज़ा मेर्कालोवा का पति उसके पीछे-पीछे उसकी पोशाक का झोल सम्भालता है और हमेशा उसका हुक्म बजा लाने को तैयार रहता है। मगर इसके आगे वास्तव में क्या है, कोई भी यह नहीं जानना चाहता। आप तो जानती ही हैं कि अच्छे समाज में पोशाक की कुछ तफ़सीलों के बारे में न तो सोचा जाता है और न उनकी चर्चा ही की जाती है। यहां भी यही बात है।"

"आप रोलैंड्की की पार्टी में जायेंगी?" आन्ना ने बात बदलने के लिये पूछा।

"शायद नहीं जाऊंगी," बेत्सी ने जवाब दिया और अपनी सहेली की ओर देखे बिना छोटे-छोटे पारदर्शी प्यालों में खुशबूदार चाय डालने लगी। प्याले को आन्ना की ओर बढ़ाकर उसने सिगरेट निकाली और उसे चांदी के होल्डर में लगाकर कश खींचने लगी।

"तो देखिये न, मैं बहुत सौभाग्यशाली स्थिति में हूं," प्याला हाथ में लेकर उसने अब हंसे बिना कहा। "मैं आपको भी समझती हूं और लीज़ा को भी। लीज़ा तो उन भोले-भाले स्वभाववालों में से है, जो बच्चों की भांति यह नहीं समझते कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। कम से कम तब नहीं समझती थी, जब बहुत जवान थी। अब वह यह जानती है कि उसका यह समझ न पाना उसे जंचता है। हो सकता है कि अब वह जान-बूझकर न समझती हो," बेत्सी ने पतली-सी मुस्कान-रेखा के साथ कहा। "लेकिन फिर भी यह उसे जंचता है। बात यह है कि एक ही चीज़ को दुखद दृष्टिकोण से देखा और यातना बनाया जा सकता है और उसके प्रति सीधा-सादा और खुशी का रवैया भी अपनाया

जा सकता है। सम्भवतः आप चीज़ों को बहुत ही दुखद ढंग से देखने की प्रवृत्ति रखती हैं।"

"काश मैं दूसरों को भी वैसे ही जानती होती, जैसे ख़ुद को जानती हूं," आन्ना ने गम्भीरता से और सोचते हुए कहा। "मैं दूसरों से अच्छी या बुरी हूं? मेरे ख़्याल में तो बुरी हूं।"

"बिल्कुल बच्ची, एकदम बच्ची हैं," बेत्सी ने दोहराया। "पर लो, वे आ गये।"

(१८)

क़दमों की आहट हुई और मर्दाना आवाज़, उसके बाद ज़नाना आवाज़ और हंसी सुनाई दी तथा इसके फ़ौरन बाद प्रतीक्षित अतिथि – साफ़ो श्तोल्त्स और अच्छे स्वास्थ्य से बहुत ही चमकता-दमकता हुआ तथाकथित वास्का भीतर दाख़िल हुए। साफ़ नज़र आ रहा था कि कम तले मांस, खुमियों और बरगंडी का उस पर बहुत अच्छा असर हुआ था। वास्का ने सिर झुकाकर महिलाओं का अभिवादन किया, उनकी ओर देखा, लेकिन केवल एक सेकण्ड को। वह साफ़ो के पीछे-पीछे मेहमानख़ाने में दाख़िल हुआ और उसके पीछे-पीछे ही उसने मेहमानख़ाने को ऐसे लांघा मानो उसके साथ बंधा हुआ हो और अपनी चमकती आंखों को उसपर ऐसे टिकाये रहा मानो उसे खा जाना चाहता हो। साफ़ो श्तोल्त्स के बाल सुनहरे तथा आंखें काली थीं। ऊंची एड़ी के जूते पहने हुए वह छोटे-छोटे तथा तेज़ क़दमों से कमरे में दाख़िल हुई और उसने महिलाओं के साथ मर्दों की भांति ख़ूब मज़बूती और ज़ोर से हाथ मिलाया।

इस नयी ख्याति-तारिका से आन्ना पहले कभी नहीं मिली थी और वह उसकी सुन्दरता तथा अति की सीमा तक पहुंची हुई बहुत सजीली पोशाक और उसके साहसपूर्ण अन्दाज़ से दंग रह गयी। उसके सिर पर अपने तथा पराये सुनहरे और नर्म बालों का ऐसा ढांचा-सा बना हुआ था कि उसका सिर उसके बड़े-बड़े, तने तथा सामने की ओर काफ़ी नंगे उरोजों जैसा लग रहा था। उसकी हर गतिविधि में कुछ ऐसा था कि हर क़दम पर पोशाक के नीचे से उसके घुटनों तथा

जांघों की बनावट बिल्कुल साफ़ दिखाई देती थी और आदमी यह सवाल पूछने को विवश हो जाता था कि पीठ पर ढेर सारे तथा हिलते-डुलते कपड़े के नीचे उसका अपना छोटा-सा और सुन्दर शरीर, जो सामने की ओर इतना नग्न तथा पीछे और नीचे की तरफ़ इतना ढका हुआ था, वास्तव में कहां समाप्त होता है।

बेत्सी ने झटपट आन्ना से उसका परिचय कराया।

"आप कल्पना तो करें कि हमने दो फ़ौजियों को बग्घी के नीचे बस कुचल ही नहीं डाला," वह मुस्कराते, आंख मटकाते और अपनी पोशाक के झोल को पीछे की तरफ़ करते हुए, जिसे उसने एक ओर को बहुत अधिक झटक दिया था, फ़ौरन यह बताने लगी। "मैं वास्का के साथ बग्घी में जा रही थी... अरे हां, आप तो परिचित नहीं हैं।" और नौजवान आदमी का कुलनाम बताकर परिचय करवाया तथा लाल होते हुए अपनी भूल यानी इस बात पर कि एक अपरिचिता के सामने उसे वास्का कहा था, गूंजती खिलखिलाहट के साथ हंस दी।

वास्का ने फिर से आन्ना के सामने सिर झुका दिया, मगर कुछ कहा नहीं। उसने साफ़ो को सम्बोधित किया :

"आप बाज़ी हार गयीं। हम यहां पहले पहुंच गये हैं। लाइये, शर्त अदा कीजिये," उसने मुस्कराते हुए कहा।

साफ़ो और भी अधिक रंग में आकर हंस दी।

"इसी वक़्त तो अदायगी नहीं होगी," उसने कहा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं, बाद में हासिल कर लूंगा।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। अरे हां!" उसने अचानक गृह-स्वामिनी को सम्बोधित किया। "मैं भी ख़ूब हूं... भूल ही गयी... आपके लिये एक मेहमान लाई हूं। यह रहा वह।"

अप्रत्याशित युवा मेहमान, जिसे साफ़ो अपने साथ लाई और भूल गयी थी, इतना महत्त्वपूर्ण मेहमान था कि उसके जवान होने के बावजूद दोनों महिलायें उसके स्वागत को खड़ी हो गयीं।

यह साफ़ो का नया प्रशंसक था। वास्का की भांति अब वह भी उसकी दुम बना फिरता था।

कुछ ही देर बाद प्रिंस कालूज़्स्की और स्त्रेमोव के साथ लीज़ा मेर्कालोवा आ गयी। काले बालोंवाली लीज़ा मेर्कालोवा दुबली-पतली

थी, उसका चेहरा अलस, पूर्वी ढंग का था और आंखें बड़ी सुन्दर तथा, जैसा कि सभी कहते थे, रहस्यपूर्ण-सी थीं। उसकी काली पोशाक का अन्दाज़ (आन्ना ने तुरन्त ही उसकी ओर ध्यान दिया तथा ऊंचा आंका) सर्वथा उसकी सुन्दरता के अनुरूप था। साफ़ो जितनी चुस्त और नपी-तुली थी, लीज़ा उतनी ही नर्म तथा ढीली-ढाली थी।

किन्तु आन्ना की रुचि की दृष्टि से लीज़ा कहीं अधिक आकर्षक थी। बेत्सी ने उसके बारे में आन्ना से कहा था कि लीज़ा ने भोले-भाले बालक का चोला-सा धारण कर लिया है, मगर उसे देखने पर आन्ना ने महसूस किया कि यह सही नहीं है। वह वास्तव में ही भोली-भाली और लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई, किन्तु प्यारी और उदारमना नारी थी। यह सही है कि उसका भी साफ़ो जैसा रंग-ढंग था – साफ़ो की भांति उसके भी दो प्रशंसक – एक जवान और एक बूढ़ा – उसके साथ नत्थी हुए से घूमते थे और नज़रों से उसे हड़पते जाते थे, किन्तु उसमें कुछ ऐसा था, जो उसके इर्द-गिर्द के वातावरण से ऊंचा था – उसमें शीशों के बीच असली हीरे की सी चमक थी। यह चमक उसकी बहुत सुन्दर और वास्तव में ही रहस्यपूर्ण आंखों में झलकती थी। काले घेरोंवाली इन आंखों की थकी-थकी और साथ ही भावुक दृष्टि अपनी पूर्ण निश्छलता से चकित करती थी। इन आंखों में झांकने पर हर किसी को ऐसा लगता था कि वह उसे पूरी तरह जान गया है और जानने पर उससे प्यार किये बिना नहीं रह सकता था। आन्ना को देखकर उसका चेहरा अचानक ख़ुशी भरी मुस्कान से चमक उठा।

"ओह, कितनी ख़ुश हूं मैं आपको यहां पा कर!" आन्ना के पास आकर उसने कहा। "कल घुड़दौड़ों के वक़्त में आपके पास आना ही चाहती थी कि आप चली गयीं। ख़ास तौर पर कल मैं बहुत उत्सुक थी आपसे मिलने को। सचमुच ही बड़ा भयानक दृश्य था न वह?" उसने आन्ना को ऐसी दृष्टि से देखते हुए कहा, जिसने मानो उसकी आत्मा को खोलकर रख दिया था।

"हां, मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि वहां ऐसी विह्वलता अनुभव होती है," आन्ना ने लज्जारुण होते हुए कहा।

इसी समय सब लोग बाग़ में जाने के लिये उठे।

"मैं नहीं जाऊंगी," लीज़ा ने मुस्कराते और आन्ना के क़रीब

बैठते हुए कहा। "आप भी नहीं जायेंगी न? क्रोकेट खेलने में क्या तुक है!"

"नहीं, मुझे पसन्द है," आन्ना ने कहा।

"तो यह, यह बताइये, आप ऐसा क्या करती हैं कि आपको ऊब नहीं महसूस होती? आपको देखने से ही मन खिल उठता है। आप ज़िन्दगी को जीती हैं, मगर मैं ऊबती हूं।"

"आप ऊबती हैं? आप तो पीटर्सबर्ग के सबसे ज़्यादा ख़ुश लोगों के हलक़े में रहती हैं," आन्ना ने कहा।

"यह मुमकिन है कि जो लोग हमारे हलक़े में नहीं हैं, उन्हें और भी ज़्यादा ऊब महसूस होती है। लेकिन हमें, शायद मुझे तो, ख़ुशी नहीं, बहुत, बहुत ही ज़्यादा ऊब महसूस होती है।"

साफ़ो सिगरेट जलाकर अपने दोनों जवान प्रशंसकों के साथ बाग़ में चली गयी। बेत्सी और स्त्रेमोव चाय की मेज़ पर डटे रहे।

"आपको ऊब महसूस होती है?" बेत्सी ने कहा। "साफ़ो कहती है कि कल उन्होंने आपके यहां बहुत मौज मनायी।"

"ओह, बेहद उकताहट रही!" लीज़ा मेर्कालोवा ने कहा। "घुड़दौड़ों के बाद सभी मेरे यहां चले गये। वही, फिर वही के वही लोग! फिर वही की वही बातें। शाम भर सोफ़े तोड़ते रहे। इसमें क्या मौज-मज़ा हो सकता है? नहीं, आप इसके लिये क्या करती हैं कि आपको ऊब महसूस न हो?" उसने फिर आन्ना से पूछा। "आप पर नज़र डालते ही यह अनुभव होता है – यह रही वह नारी, जो शायद सुखी, दुखी भी हो सकती है, मगर ऊब अनुभव नहीं करती। मुझे सिखा दीजिये कि आप यह कैसे कर पाती हैं?"

"मैं कुछ नहीं करती," इन अनुरोधपूर्ण प्रश्नों से लजाकर लाल होते हुए आन्ना ने जवाब दिया।

"यही सबसे अच्छा ढंग है," स्त्रेमोव ने बातचीत में दख़ल दिया।

स्त्रेमोव पचास साल का मर्द था, उसके आधे बाल पक चुके थे, फिर भी उसमें ताज़गी थी, वह बदसूरत था, मगर चेहरे पर समझदारी और चरित्र की दृढ़ता अंकित थी। लीज़ा मेर्कालोवा उसकी बीवी की भतीजी थी और वह अपना फ़ुरसत का सारा वक़्त उसी के साथ बिताता था। सरकारी नौकरी के मामले में वह आन्ना के पति कारेनिन का विरोधी था और उसकी बीवी से मुलाक़ात होने पर शिष्ट तथा

समझदार व्यक्ति के नाते उसने उसके साथ विशेषत: अच्छी तरह से पेश आने की कोशिश की।

"'कुछ नहीं करती,'" उसने हल्की-सी मुस्कान के साथ इन शब्दों को दोहराया, "यही सबसे अच्छा उपाय है। मैं बहुत अर्से से आपसे कह रहा हूं," उसने लीज़ा मेर्कालोवा को सम्बोधित किया, "इस बात के लिये कि ऊब महसूस न हो, यह नहीं सोचना चाहिये कि ऊब महसूस होगी। यह तो बिल्कुल वही बात है कि अगर आदमी उनींदेपन से डरता हो, तो उसे इस चीज़ से नहीं डरना चाहिये कि नींद नहीं आयेगी। आन्ना अर्कादयेव्ना ने आपसे यही कहा है।"

"अगर मैंने यह कहा होता तो मुझे बड़ी ख़ुशी हुई होती। कारण कि यह न केवल बुद्धिमत्तापूर्ण, बल्कि सच भी है," आन्ना ने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, यह बताइये कि उनींदेपन और ऊब से कैसे बचा जा सकता है?"

"नींद आये, इसके लिये काम करना चाहिये और ख़ुश होने के लिये भी काम करना चाहिये।"

"अगर मेरे काम की किसी को ज़रूरत नहीं, तो मैं किसलिये काम करूं? ढोंग करना मुझे आता नहीं और मैं चाहती भी नहीं।"

"आप कभी नहीं सुधर सकेंगी," लीज़ा की ओर देखे बिना स्त्रेमोव ने कहा और फिर से आन्ना को सम्बोधित किया।

चूंकि आन्ना के साथ उसकी बहुत कम मुलाक़ात होती थी, इसलिये मामूली बातों के सिवा वह उससे और कुछ नहीं कह सकता था। लेकिन स्त्रेमोव ऐसी मामूली बातें ही कहता रहा कि कब वह पीटर्सबर्ग लौटेगी, कि काउंटेस लीदिया इवानोव्ना उसे कितना अधिक प्यार करती है और सो भी ऐसे अभिव्यक्तिपूर्ण ढंग से, जो ज़ाहिर करता था कि वह जी-जान से उसके लिये मधुर होना तथा उसके प्रति अपना सम्मान ही नहीं, बल्कि उससे भी कुछ अधिक भावना दिखाना चाहता है।

तुश्केविच ने भीतर आकर कहा कि सभी लोग क्रोकेट के खिलाड़ियों की राह देख रहे हैं।

"नहीं, कृपया नहीं जाइये," लीज़ा मेर्कालोवा ने यह मालूम

होने पर कि आन्ना जाना चाहती है, अनुरोध किया। स्त्रेमोव ने भी उसका साथ दिया।

"ऐसे लोगों की संगत के बाद बुढ़िया व्रेदे के यहां जाना तो ज़मीन-आसमान के फ़र्क़ के समान होगा। इसके अलावा वहां आप निन्दा-चुग़ली ही सुनेंगी, जबकि यहां दूसरी, बहुत ही अच्छी और निन्दा-चुग़ली के बिल्कुल उलट भावनायें जागृत कर पायेंगी," उसने आन्ना से कहा।

आन्ना कुछ देर तक दुविधा में पड़कर सोचती रही। इस समझदार आदमी की प्रशंसापूर्ण बातें, अपने प्रति लीज़ा द्वारा प्रकट किया जानेवाला भोला-भाला और बाल-सुलभ स्नेह तथा ऊंचे समाज का यह परिचित वातावरण – यह सब कुछ इतना राहत देनेवाला था, जबकि इतना कठिन समय उसके सामने था कि वह घड़ी भर को इस असमंजस में रही – क्या यहीं रुके रहना और स्पष्टीकरण के इस बोझिल क्षण को टाल देना अच्छा नहीं होगा? किन्तु यह याद आने पर कि अगर वह कोई निर्णय नहीं करेगी, तो घर में अकेली होने पर उसका क्या हाल होगा, उस भयानक हरकत के स्मरण मात्र से, जब वह दोनों हाथों से सिर थमे हुए थी, उसने विदा ली और चली गयी।

(१९)

ऊंचे समाज के जीवन में पहली नज़र में चंचल तबीयत का व्यक्ति दिखाई देने के बावजूद व्रोन्स्की को गड़बड़ से बड़ी नफ़रत थी। जवानी के दिनों में ही, जब वह सैनिक विद्यालय का विद्यार्थी था, उसने किसी मुश्किल में पड़ जाने पर क़र्ज़ मांगा था और कोरा जवाब पाने के अपमान को अनुभव कर लिया था। तब से उसने कभी भी अपने को ऐसी स्थिति में नहीं पड़ने दिया था।

अपने मामलों को ठीक-ठाक करने के लिये वह परिस्थितियों के अनुसार साल में चार-पांच बार एकान्त में बैठकर अपने सारे हिसाब-किताब को स्पष्ट रूप देता। इसे वह हिसाब चुकाना या faire la lessive* कहता।

---

* धुलाई करना। (फ़्रांसीसी)

घुड़दौड़ों के बाद अगले दिन देर से जागने पर व्रोन्स्की ने दाढ़ी बनाये और नहाये बिना सूती फ़ौजी क़मीज़ पहनी और पैसे, बिल और पत्रों को मेज़ पर रखकर काम में जुट गया। पेत्रीत्स्की ने यह जानते हुए कि ऐसे मौक़ों पर वह झल्लाया होता है, आंख खुलते ही दोस्त को लिखने की मेज़ पर बैठे देखकर चुपचाप कपड़े पहने और उसके काम में ख़लल डाले बिना बाहर चला गया।

अपने चारों ओर के वातावरण की परिस्थितियों की जटिलता की छोटी से छोटी तफ़सीलों से परिचित हर व्यक्ति अनचाहे ही ऐसा मानता है कि इन परिस्थितियों की जटिलता और उनके स्पष्टीकरण की कठिनाई केवल उसी से सम्बन्धित व्यक्तिगत और सांयोगिक बातें हैं और वह किसी तरह भी यह नहीं सोचता कि दूसरों को भी उसी के समान अपनी जटिल परिस्थितियों का सामना करना होता है। व्रोन्स्की को भी ऐसा ही लगता था। इसलिये वह साधार आन्तरिक गर्वभावना से यह सोचता था कि उसकी जगह कोई दूसरा आदमी अगर अपने को उसके जैसी कठिन परिस्थितियों में पाता तो कभी का भटक गया होता और कोई बुरा रास्ता अपनाने को विवश हो जाता। किन्तु व्रोन्स्की अनुभव कर रहा था कि अगर उसे भटकना नहीं है, तो अब उसके लिये अपनी सारी स्थिति को समझना और स्पष्ट करना ज़रूरी है।

सबसे आसान काम के रूप में व्रोन्स्की ने सबसे पहले रुपयों-पैसों के हिसाब-किताब की तरफ़ ध्यान दिया। अपनी बारीक लिखावट में पत्र लिखने के काग़ज़ पर सभी ऋण लिखकर जब उसने उनका जोड़ किया, तो पाया कि उसे सत्रह हज़ार और कुछ सौ रूबल देने हैं। हिसाब को सरल बनाने के लिये उसने सैकड़ों की संख्या को छोड़ दिया। नक़द रक़म और बैंक की कापी में जमा धन को गिनने पर उसे पता चला कि उसके पास कुल अठारह सौ रूबल बाक़ी हैं और नया साल शुरू होने तक और आमदनी की कोई सम्भावना नहीं है। क़र्ज़ों की सूची को फिर से पढ़ने के बाद व्रोन्स्की ने उसे तीन श्रेणियों में बांटते हुए फिर से लिख लिया। पहली श्रेणी के अन्तर्गत वे ऋण थे, जिहें फ़ौरन अदा करना चाहिये था या कम से कम जिनकी अदायगी के लिये रक़म तैयार होनी चाहिये थी, ताकि मांगे जाने पर पल भर की देरी के बिना उन्हें चुकाया जा सके। ऐसे ऋणों की रक़म लगभग चार हज़ार थी – डेढ़

हज़ार घोड़ी और ढाई हज़ार उस ज़मानत की अदायगी के लिये, जो उसने अपने एक नौजवान साथी वेनेव्स्की द्वारा एक पत्तेबाज़ के साथ खेल में हारी गयी इस रक़म के लिये दी थी। व्रोन्स्की ने उसी समय यह रक़म चुकानी चाही थी (तब उसकी जेब में इतने रूबल थे), लेकिन वेनेव्स्की और याश्विन ने इस बात पर ज़िद की कि यह रक़म व्रोन्स्की नहीं, जिसने खेल में हिस्सा नहीं लिया था, बल्कि वे चुकायेंगे। यह पब बहुत अच्छा था, मगर व्रोन्स्की जानता था कि इस गन्दे मामले को निपटाने के लिये, जिसमें उसने सिर्फ़ इतना ही हिस्सा लिया था कि वेनेव्स्की की ज़बानी ज़मानत दी थी, उसके पास ढाई हज़ार रूबल होने चाहिये ताकि उन्हें पत्तेबाज़ के मुंह पर दे मारे और इससे अधिक कोई बातचीत न करे। तो इस तरह सबसे महत्त्वपूर्ण पहली श्रेणी के लिये उसके पास चार हज़ार रूबल होने चाहिये। दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत आनेवाले आठ हज़ार रूबल कम महत्त्वपूर्ण ऋण थे। ये ऋण मुख्यतः अस्तबल यानी जई, घास, अंग्रेज़ ट्रेनर, साज़गर, आदि से सम्बन्धित ख़र्च थे। इन क़र्ज़ों के लिये भी उसके पास दो हज़ार रूबल होने चाहिये थे, ताकि पूरी तरह से निश्चिन्त हुआ जा सके। अन्तिम श्रेणी में दुकानों, होटलों और दर्ज़ी के ऋण थे, जिनके बारे में चिन्ता की कोई बात नहीं थी। इस तरह चालू ख़र्चों के लिये उसे कम से कम छः हज़ार की ज़रूरत थी, लेकिन उसके पास केवल अठारह सौ रूबल थे। एक लाख रूबल की वार्षिक आयवाले व्यक्ति के लिये, जैसा कि व्रोन्स्की के सम्बन्ध में सभी मानते थे, ऐसा प्रतीत हो सकता था कि इस तरह के ऋण कोई कठिनाई नहीं पेश कर सकते थे। लेकिन बात यह थी कि उसकी आय एक लाख रूबल नहीं थी। पिता द्वारा छोड़ी गयी बहुत बड़ी सम्पत्ति, जिससे दो लाख की वार्षिक आय होती थी, भाइयों के बीच अविभाजित ही रही थी। बड़े भाई ने, जिस पर कर्ज़ों का बहुत बड़ा बोझ था और जिसने जब एक दिसम्बरवादी * की सर्वथा सम्पत्ति-हीन बेटी प्रिंसेस वार्या चिरकोवा से शादी की, तो व्रोन्स्की ने अपने

* दिसम्बरवादी वे कुलीन क्रान्तिकारी थे, जिन्होंने १८२५ में ज़ारशाही के विरुद्ध विद्रोह किया था और जिन्हें साइबेरिया में निर्वासित किया गया था।

लिये केवल पच्चीस हज़ार रूबल वार्षिक निश्चित करके पिता की जागीर की बाक़ी सारी आमदनी भाई को देने का निर्णय किया। व्रोन्स्की ने तब भाई से कहा कि जब तक वह शादी नहीं करता, जो सम्भवतः कभी नहीं करेगा, उसके लिये इतनी रक़म काफ़ी रहेगी। बड़ा भाई, जो एक सबसे अधिक ख़र्चीली पलटन का कमांडर था और जिसने उन्हीं दिनों शादी की थी, इस उपहार को स्वीकार करने से इन्कार नहीं कर सकता था। मां, जिसकी अपनी अलग जागीर थी, उन पच्चीस हज़ार के अलावा बीस हज़ार रूबल व्रोन्स्की को हर साल और देती थी और व्रोन्स्की यह सब कुछ ख़र्च कर डालता था। पिछले कुछ समय से मां आन्ना के साथ व्रोन्स्की के सम्बन्ध और उसके मास्को से चले जाने की बात को लेकर उससे नाराज़ हो गयी थी और उसने उसे रूबल भेजना बन्द कर दिया था। नतीजा यह हुआ था कि व्रोन्स्की, जो पैंतालीस हज़ार वार्षिक आय का आदी हो चुका था, इस साल केवल पच्चीस हज़ार मिलने पर अपने को मुश्किल में पा रहा था। इस मुश्किल से निजात पाने के लिये वह अपनी मां से पैसे नहीं मांग सकता था। मां के अन्तिम पत्र ने, जो उसे एक ही दिन पहले मिला था, उसे ख़ास तौर पर चिढ़ा दिया था, क्योंकि उसमें कुछ ऐसे संकेत थे कि वह ऊंचे समाज और नौकरी के मामले में उसकी मदद करने को तैयार थी, किन्तु ऐसी ज़िन्दगी के लिये नहीं, जिससे सारे अच्छे समाज में बदनामी होती हो। मां की उसे इस तरह से ख़रीद लेने की इच्छा ने उसके मर्म को बुरी तरह आहत कर दिया और उसके प्रति उसका हृदय और भी उदासीन हो गया। लेकिन वह दरियादिली से कहे गये अपने शब्दों को वापस नहीं ले सकता था, यद्यपि आन्ना के साथ अपने सम्बन्ध की कुछ सम्भावनाओं का धुंधला-सा पूर्वानुमान लगाते हुए अब वह यह महसूस करता था कि दरियादिली के ये शब्द सोचे-समझे बिना कहे गये थे और उसे, अविवाहित को ही, अपनी एक लाख की पूरी आमदनी की ज़रूरत हो सकती है। किन्तु वह अपने शब्दों को वापस नहीं ले सकता था। उसके लिये केवल अपनी भाभी को याद कर लेना, इतना ही याद कर लेना काफ़ी था कि कैसे प्यारी और अच्छी वार्या हर सम्भव अवसर पर यह याद दिलाती थी कि वह उसकी दरियादिली को भूली नहीं है और उसका ऊंचा मूल्यांकन करती

है और व्रोन्स्की को यह समझने में देर नहीं लगती थी कि जो कुछ दिया चुका है, उसे वापस लेना मुमकिन नहीं। यह वैसे ही असम्भव था, जैसे किसी नारी को पीटना, चोरी करना या झूठ बोलना। उसके लिये एक ही बात सम्भव थी, जो उसे करनी चाहिये थी और जिसके बारे में उसने क्षण भर की दुविधा के बिना ही निर्णय कर लिया – सूदख़ोर से दस हज़ार रूबल उधार ले, जिसमें कोई कठिनाई नहीं हो सकती, अपने ख़र्च कम करे और घुड़दौड़ के घोड़े बेच डाले। यह निर्णय करके उसने रोलैंडकी को, जो घोड़े ख़रीदने के लिये उसके पास कई बार सन्देश भिजवा चुका था, फ़ौरन एक रुक्क़ा लिख भेजा। इसके बाद उसने अंग्रेज़ ट्रेनर और सूदख़ोर को बुलवाया तथा उसके पास जो रक़म थी, उसे अलग-अलग हिसाबों में बांट दिया। इन मामलों को निपटाकर उसने मां को एक कठोर और कटु पत्र लिखा। इसके बाद बटुए में से आन्ना के तीन रुक्क़े निकाले, उन्हें फिर से पढ़ा, जलाया और पिछले दिन उसके साथ हुई अपनी बातचीत को याद करके सोच में डूब गया।

(२०)

व्रोन्स्की का जीवन इसलिये विशेष रूप से सुखी था कि उसका एक अपना नियम-संग्रह था, जो निश्चित रूप से यह तय करता था कि उसे क्या करना और क्या नहीं करना चाहिये। यह नियम-संग्रह परिस्थितियों के छोटे-से दायरे तक सीमित था, लेकिन दूसरी ओर ये नियम बिल्कुल निश्चित थे और इस दायरे से बाहर न निकलते हुए व्रोन्स्की को कभी क्षण भर को भी उसे जो कुछ करना चाहिये, उसके बारे में असमंजस नहीं होता था। ये नियम पक्के तौर पर तय करते थे कि पत्तेबाज़ को पैसे देने चाहिये, मगर दर्ज़ी को देने की ज़रूरत नहीं, कि मर्दों के साथ झूठ नहीं बोलना चाहिये, लेकिन औरतों के साथ झूठ बोला जा सकता है, किसी को धोखा नहीं देना चाहिये, लेकिन पति को धोखा दिया जा सकता है, कि अपमान को क्षमा नहीं करना चाहिये, मगर वह ख़ुद अपमान कर सकता है, आदि। ये सभी नियम बेसमझी के और बुरे हो सकते थे, किन्तु सन्देहहीन थे और इन पर अमल करते हुए व्रोन्स्की अपने को शान्त और यह अनुभव करता कि अपना सिर ऊंचा रख

सकता है। केवल पिछले कुछ अर्से से आन्ना के साथ अपने सम्बन्धों के सिलसिले में व्रोन्स्की यह महसूस करने लगा था कि उसका नियम-संग्रह सभी परिस्थितियों के लिये पर्याप्त नहीं है और भविष्य ऐसी कठिनाइयां तथा सन्देह प्रस्तुत कर रहा है, जिनके लिये उसके पास मार्ग-दर्शन के कोई सूत्र नहीं थे।

आन्ना और उसके पति के प्रति उसका इस समय का रवैया बिल्कुल सीधा-सादा और साफ़ था। वह जिस नियम-संग्रह से निर्देशित होता था, उसमें उसका निश्चित और स्पष्ट रूप विद्यमान था।

आन्ना एक बाइज़्ज़त औरत थी, जिसने उसे अपना प्यार भेंट किया था और वह ख़ुद भी उसे प्यार करता था। इसलिये उसकी नज़र में वह ऐसी औरत थी, जिसे क़ानूनी बीवी जैसा और उससे भी ज़्यादा आदर-सत्कार मिलना चाहिये। किसी शब्द या संकेत से उसका न केवल अपमान ही नहीं करना चाहिये, बल्कि वह आदर भी न दिखाने के बजाय, जिसकी कोई नारी आशा-अपेक्षा कर सकती है, वह अपना हाथ कटवा डालना बेहतर समझता।

समाज के प्रति भी उसका रवैया स्पष्ट था। सभी लोग इस बात को जान सकते हैं, इसके बारे में अनुमान लगा सकते हैं, मगर किसी को भी इसके बारे में कुछ कहने की हिम्मत नहीं होनी चाहिये। ऐसा न होने पर वह मुंह खोलनेवालों को चुप रहने और अपनी प्रेम-पात्र नारी की अविद्यमान प्रतिष्ठा का आदर करने को विवश कर सकता था।

आन्ना के पति के प्रति उसका रवैया तो सबसे ज़्यादा साफ़ था। आन्ना जब से उसे प्यार करने लगी थी तभी से वह उसपर अपना चुनौतीहीन अधिकार मानता था। पति तो फ़ालतू और ख़लल डालनेवाला ही था। निस्सन्देह उसकी स्थिति दयनीय थी, किन्तु क्या हो सकता है? पति को सिर्फ़ इतना ही अधिकार प्राप्त था कि हाथ में हथियार लेकर अपने को सन्तुष्ट करने की मांग करे और व्रोन्स्की इसके लिये पहले ही क्षण से तैयार था।

किन्तु पिछले कुछ समय में आन्ना और उसके बीच कुछ नये आन्तरिक सम्बन्ध प्रकट हो गये थे, जो अपनी अस्पष्टता से व्रोन्स्की को चिन्तित करते थे। आन्ना ने पिछले दिन ही उसे यह बताया था कि वह गर्भवती हो गयी है। उसे अनुभव हो रहा था कि यह ख़बर और आन्ना

उससे जो आशा कर रही थी, वह कुछ ऐसी अपेक्षा रखता है, जिसे वह नियम-संग्रह, जिससे वह निर्देशित होता था, पूरी तरह स्पष्ट नहीं करता। वास्तव में ही उसने ऐसी ख़बर की आशा नहीं की थी और आन्ना के अपनी स्थिति घोषित करते ही उसके हृदय ने उससे कहा कि वह आन्ना से पति को छोड़ देने की मांग करे। उसने यह कह दिया, किन्तु अब विचार करने पर उसे यह स्पष्ट दिख रहा था कि ऐसा न करना ही बेहतर होता। साथ ही अपने से ऐसे कहते हुए उसे यह शंका भी हो रही थी – क्या ऐसा करना बुरा नहीं होगा?

"अगर मैंने पति को छोड़ने की बात कही है, तो इसका मतलब यह है कि वह मेरे पास आ जाये। क्या मैं इसके लिये तैयार हूं? मैं उसे अपने साथ कहीं ले जा ही कैसे सकता हूं, जबकि मेरी जेब ख़ाली है? मान लें कि इस मुश्किल को मैं दूर कर सकता हूं... लेकिन सेना में रहते हुए मैं उसे कैसे ले जा सकता हूं? अगर मैंने ऐसा कहा है, तो मुझे इसके लिये तैयार होना चाहिये, यानी मेरे पास पैसे होने चाहिये और मुझे सेना से त्यागपत्र दे देना चाहिये।"

व्रोन्स्की सोच में डूब गया। इस प्रश्न से कि वह सेना से अवकाश ग्रहण करे या नहीं, एक अन्य, गुप्त, केवल उसे ही ज्ञात और उसके जीवन की लगभग मुख्य दिलचस्पी ने, जिसे उसने बेशक ज़िन्दगी भर छिपाये रखा था, सिर उठाया।

महत्वाकांक्षा तो उसके बचपन और किशोरावस्था का पुराना सपना रही थी। यह ऐसा सपना था, जिसे वह स्वयं अपने सम्मुख भी स्वीकार नहीं करता था, किन्तु जो इतना प्रबल था कि अब उसकी तीव्रता उसके प्यार से भी टक्कर ले रही थी। ऊंचे समाज और नौकरी के मामले में शुरू में उसे सफलता मिली, किन्तु दो साल पहले उसने एक बड़ी भूल कर दी। उसने अपनी स्वावलंबिता दिखाने और आगे बढ़ने की इच्छा से उस ओहदे को लेने से इन्कार कर दिया, जो उसे पेश किया गया था। उसे उम्मीद थी कि इस इन्कार से उसका महत्त्व बढ़ जायेगा, किन्तु ऐसा करने पर वह कुछ अधिक ही साहसी प्रतीत हुआ तथा उसकी अवहेलना कर दी गयी। चाहे-अनचाहे एक स्वतन्त्र व्यक्ति की स्थिति ग्रहण कर लेने पर वह बड़ी व्यवहारकुशलता और समझदारी से यह ज़ाहिर करते हुए इसे निभाता रहा कि मानो किसी से भी

नाराज़ नहीं है, कि किसी ने भी उसे ठेस नहीं पहुंचाई है और केवल यही चाहता है कि उसे चैन से रहने दिया जाये, क्योंकि वह बहुत मज़े में है। वास्तव में पिछले साल से, जब वह मास्को गया, उसके मज़े ख़त्म हो गये थे। वह महसूस करता था कि ऐसे स्वावलम्बी व्यक्ति की स्थिति, जो सब कुछ कर सकता है, मगर जो कुछ भी करने की परवाह नहीं करता, लुप्त होने लगी है, बहुत से लोग यही सोचने लगे हैं कि ईमानदार तथा भला आदमी होने के अलावा वह कुछ भी करने में असमर्थ है। आन्ना के साथ उसके सम्बन्ध से इतना अधिक शोर मचा, इसने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तथा व्रोन्स्की को एक नयी चमक-दमक प्रदान करके कुछ देर के लिये उसकी महत्वाकांक्षा के कुरेदते कीड़े को शान्त कर दिया। किन्तु एक सप्ताह पहले यह कीड़ा नई शक्ति के साथ मचल उठा। उसके बचपन का साथी, एक ही हलक़े, एक ही समाज और शाही सैनिक स्कूल का साथी, सेर्पुख़ोव्स्कोई, जिसके साथ उसने सैनिक विद्यालय की शिक्षा पूरी की, जिसके साथ वह कक्षा, कसरत, शरारतों और महत्त्वाकांक्षा के स्वपनों में होड़ करता रहा था, कुछ ही दिन पहले मध्य एशिया से लौटा था, जहां उसकी दो बार पदोन्नति हुई थी और वह प्रतिष्ठा मिली थी, जो ऐसे जवान जनरलों को बहुत कम ही मिलती है।

सेर्पुख़ोव्स्कोई के पीटर्सबर्ग आते ही प्रथम महत्त्व के जगमगाते सितारे के रूप में उसकी चर्चा होने लगी। व्रोन्स्की का हमउम्र और सहपाठी सेर्पुख़ोव्स्कोई जनरल बन चुका था और ऐसी नियुक्ति की आशा कर रहा था, जो राजकीय कार्यों की गतिविधियों को प्रभावित कर सकती थी, जबकि व्रोन्स्की स्वावलम्बी, बहुत होनहार तथा एक सुन्दर नारी का प्रेमपात्र होते हुए भी केवल घुड़सेना का कप्तान था, जो जितना भी चाहे, स्वावलम्बी हो सकता था। "ज़ाहिर है कि सेर्पुख़ो-व्स्कोई से मुझे ईर्ष्या नहीं है और हो भी नहीं सकती। किन्तु उसकी पदोन्नति मुझे यह स्पष्ट करती है कि बस प्रतीक्षा करनी चाहिये और मेरे जैसा व्यक्ति बहुत जल्दी ही उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ सकता है। तीन साल पहले उसकी मेरे जैसी ही स्थिति थी। सेना से इस्तीफ़ा देकर मैं अपनी नाव डुबो लूंगा। नौकरी में बने रहने पर मेरा कुछ भी हर्ज नहीं है। उसने तो ख़ुद यह कहा था कि वह अपनी स्थिति नहीं

बदलना चाहती। और मैं उसका प्रणय-पात्र होते हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई से ईर्ष्या नहीं कर सकता।" अपनी मूंछों को धीरे-धीरे मरोड़ते हुए वह मेज़ से उठा और उसने कमरे में चक्कर लगाया। उसकी आंखें विशेष रूप से चमक रही थीं और उसे अपने मन में वह दृढ़ता, शान्ति और ख़ुशी महसूस हो रही थी, जो अपनी स्थिति के स्पष्ट हो जाने पर उसे हमेशा अनुभव होती थी। पहले के हिसाब-किताब के बाद की तरह ही सब कुछ स्पष्ट और साफ़ था। उसने दाढ़ी बनाई, ठण्डे पानी से स्नान किया, कपड़े पहने और बाहर निकला।

(२१)

"मैं तुम्हें बुलाने आया हूं। तुम्हारी 'धुलाई' आज बहुत देर तक चलती रही," पेत्रीत्स्की ने कहा। "ख़त्म हो गयी न?"

"ख़त्म हो गयी," व्रोन्स्की ने केवल आंखों से ही हंसते और अपनी मूंछों के सिरों को ऐसे सावधानी से मरोड़ते हुए कहा मानो उसने अपने मामलों में जो सुव्यवस्था की है, कोई भी ज़ोरदार और तेज़ हरकत उसे गड़बड़ा सकती है।

"इसके बाद तुम हमेशा हमाम से बाहर निकले प्रतीत होते हो," पेत्रीत्स्की ने कहा। "मुझे ग्रीत्स्का (पलटन के कमांडर को वे ऐसे ही बुलाते थे) ने भेजा है, तुम्हारी राह देखी जा रही है।"

व्रोन्स्की ने कोई जवाब दिये बिना और कुछ दूसरी ही बात सोचते हुए अपने दोस्त की तरफ़ देखा।

"यह संगीत उसी के यहां गूंज रहा है?" उसने तुरहियों, पोल्का और वाल्ज़ नृत्यों की अपने कानों तक पहुंच रही जानी-पहचानी ध्वनियों को सुनकर कहा। "किस बात का जशन मनाया जा रहा है?"

"सेर्पुख़ोव्स्कोई आया है।"

"सच!" व्रोन्स्की बोला, "मुझे तो मालूम ही नहीं।"

उसकी आंखों की चमक और तेज़ हो गयी।

अपने मन में यह तय करके कि अपने प्यार की बदौलत वह अधिक सौभाग्यशाली है और उसके लिये उसने अपनी महत्त्वाकांक्षा की बलि दे दी है – कम से कम अपने लिये ऐसी भूमिका ग्रहण करने के बाद – व्रोन्स्की

न तो सेर्पुख़ोव्स्कोई के प्रति ईर्ष्या और न ही इस बात के लिये नाराज़गी महसूस कर सकता था कि पलटन में आने पर वह सबसे पहले उसी के पास नहीं आया था। सेर्पुख़ोव्स्कोई अच्छा मित्र था और व्रोन्स्की को उसके आने से ख़ुशी हुई थी।

"मैं बहुत ख़ुश हूं।"

पलटन का कमांडर देमिन एक बड़ी हवेली में रहता था। सभी मेहमान नीचे वाले, खुले छज्जे में जमा थे। आंगन में वोदका से भरे बड़े पीपे के क़रीब खड़े बावर्दी फ़ौजी गायकों तथा अफ़सरों से घिरी पलटन-कमांडर की लम्बी-तड़ंगी और ख़ुशी से उमगती आकृति पर ही व्रोन्स्की की सबसे पहले नज़र पड़ी। पलटन-कमांडर छज्जे की पहली पैड़ी पर आकर ओफ़ेनबाख़ का काड्रिल बजाते बैंड से भी अधिक ऊंची आवाज़ में एक तरफ़ को खड़े हुए फ़ौजियों को कुछ हुक्म दे रहा था और हाथ हिला रहा था। फ़ौजियों का एक दल, सार्जेन्ट और कुछ छोटे अफ़सर व्रोन्स्की के साथ ही छज्जे के क़रीब पहुंचे। पलटन-कमांडर मेज़ की तरफ़ लौटा और हाथ में गिलास लिये हुए फिर छज्जे के चबूतरे पर बाहर आया और जाम ऊपर उठाते हुए उसने ये शब्द कहे: "हमारे भूतपूर्व साथी और बहादुर जनरल प्रिंस सेर्पुख़ोव्स्कोई की सेहत के लिये। हुर्रा!"

पलटन-कमांडर के पीछे-पीछे ही हाथ में गिलास लिये हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई बाहर आया।

"तुम तो लगातार और भी जवान होते जा रहे हो, बोन्दारेन्को," उसने अपने सामने खड़े, सैन्यसेवा की दूसरी अवधि पूरी कर रहे जवान दिखने तथा लाल-लाल गालोंवाले सार्जेन्ट से कहा।

व्रोन्स्की तीन सालों से सेर्पुख़ोव्स्कोई से नहीं मिला था। उसने गलमुच्छे बढ़ा लिये थे, अधिक हृष्ट-पुष्ट हो गया था, मगर पहले की तरह ही सुघड़-सुडौल था और अपनी सुन्दरता से इतना नहीं, जितना कि सौजन्य और चेहरे तथा आकृति की उदात्तता से चकित करता था। व्रोन्स्की ने उसमें जिस एक तब्दीली को लक्षित किया, वह थी धीमी-धीमी और स्थायी कान्ति, जो सफलता पाने और इस सफलता की सर्वमान्यता के बारे में विश्वास रखने वाले लोगों के चेहरों पर अंकित हो जाती है। व्रोन्स्की इस चमक से परिचित था और सेर्पुख़ोव्स्कोई के चेहरे पर उसे वह फ़ौरन दिखाई दे गयी।

ज़ीने से नीचे उतरते हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई ने व्रोन्स्की को देखा। सेर्पुख़ोव्स्कोई का चेहरा ख़ुशी से चमक उठा। उसने पीछे की तरफ़ सिर झटका, व्रोन्स्की का अभिवादन करते हुए गिलास ऊपर उठाया और इस संकेत से यह स्पष्ट कर दिया कि उसके पास आने के पहले सार्जेन्ट से मिलना ज़रूरी है, जो तनकर सीधा खड़ा था और चुम्बन के लिये होंठों को तैयार कर रहा था।

"लो, वह आ गया!" पलटन-कमांडर चिल्लाया। "और याश्विन ने मुझसे यह कहा था कि तुम अपने बुरे मूड में हो।"

सेर्पुख़ोव्स्कोई ने चुस्त सार्जेन्ट के गीले और ताज़ा होंठों को चूमा तथा रूमाल से मुंह पोंछकर व्रोन्स्की के पास गया।

"ओह, कितना ख़ुश हूं मैं!" व्रोन्स्की से हाथ मिलाते और उसे एक तरफ़ को ले जाते हुए उसने कहा।

"इसकी चिन्ता करो!" पलटन-कमांडर ने व्रोन्स्की की तरफ़ इशारा करते हुए याश्विन से कहा और सैनिकों की तरफ़ नीचे चला गया।

"तुम कल घुड़दौड़ों में क्यों नहीं आये? मैंने सोचा था कि तुमसे वहां मुलाक़ात हो जायेगी," सेर्पुख़ोव्स्कोई को ग़ौर से देखते हुए व्रोन्स्की बोला।

"मैं आया तो था, लेकिन देर से। माफ़ी चाहता हूं," उसने इतना और जोड़ दिया तथा अपने एड-डी-कैम्प से बोला: "कृपया मेरी ओर से यह सभी फ़ौजियों में बांट दीजिये।"

उसने झटपट अपने बटुए से सौ-सौ रूबलों के तीन नोट निकाले और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"व्रोन्स्की! कुछ खाओगे या पियोगे?" याश्विन ने पूछा। "ऐ, इधर काउंट को कुछ खाने को दो! लो, यह पियो।"

पलटन-कमांडर के यहां दावत बहुत देर तक चली।

ख़ूब पिलाई हुई। सेर्पुख़ोव्स्कोई को झुलाया और ऊपर उछाला गया। इसके बाद पलटन-कमांडर को झुलाया गया। इसके पश्चात पेत्रीत्स्की के साथ ख़ुद पलटन-कमांडर गायकों के सामने नाचा। फिर पलटन-कमांडर कुछ कमज़ोर-सा होकर आंगन में बेंच पर बैठ गया और याश्विन को प्रशा के मुक़ाबले में रूस की श्रेष्ठता, विशेषकर घुड़सेना के

आक्रमण के सिलसिले में ऐसी श्रेष्ठता सिद्ध करने लगा तथा कुछ देर के लिये हो-हल्ला शान्त हो गया। सेर्पुख़ोव्स्कोई हाथ धोने के लिये भीतर ग़ुसलख़ाने में गया और वहां उसे व्रोन्स्की मिल गया। व्रोन्स्की पानी से अपना सिर भिगो रहा था। फ़ौजी क़मीज़ उतारकर उसने बालों से ढकी हुई लाल गर्दन वाश बेसिन के नल की धार के नीचे कर दी थी और गर्दन तथा सिर को हाथों से मल रहा था। यह काम ख़त्म करने के बाद व्रोन्स्की सेर्पुख़ोव्स्कोई के पास चला गया। दोनों तुरन्त ही एक सोफ़े पर बैठ गये और उनके बीच दोनों के लिये ही बहुत दिलचस्प बातचीत छिड़ गयी।

"मुझे बीवी के ज़रिये तुम्हारे बारे में सभी कुछ मालूम होता रहा," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने कहा। "मैं ख़ुश हूं कि तुम उससे अक्सर मिलते रहे।"

"वह वार्या की सहेली है और पीटर्सबर्ग की मात्र यही तो नारियां हैं, जिनसे मिलकर मुझे ख़ुशी होती है," व्रोन्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया। वह इसलिये मुस्कराया कि बातचीत के रुख़ का उसने पहले से ही अनुमान लगा लिया था और यह उसे अच्छा लग रहा था।

"मात्र यही नारियां?" सेर्पुख़ोव्स्कोई ने मुस्कराकर पूछा।

"मुझे भी तुम्हारे बारे में जानकारी मिलती रही, लेकिन सिर्फ़ तुम्हारी बीवी के ज़रिये ही नहीं," चेहरे की कठोर अभिव्यक्ति से सेर्पुख़ोव्स्कोई के संकेत के लिये मनाही करते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "तुम्हारी सफलता से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई, मगर हैरानी ज़रा भी नहीं। मैं तो इससे ज़्यादा की उम्मीद कर रहा था।"

सेर्पुख़ोव्स्कोई मुस्कराया। अपने बारे में उसे स्पष्टतः यह राय अच्छी लगी और उसने इसे छिपाने की ज़रूरत नहीं समझी।

"तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ मानता हूं कि मैंने तो इसके उलट कम सफलता की आशा की थी। मैं महत्वाकांक्षी हूं, यह मेरी कमज़ोरी है और मैं इसे स्वीकार करता हूं।"

"तुम्हें अगर सफलता न मिली होती, तो शायद तुमने इसे स्वीकार न किया होता," व्रोन्स्की ने कहा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने फिर मुस्कराकर

जवाब दिया। "यह नहीं कहूंगा कि इसके बिना जीना बेकार होता, मगर ऊब भरा होता। ज़ाहिर है कि शायद मैं भूल कर रहा हूं, किन्तु मुझे लगता है कि मैंने अपनी गतिविधि का जो क्षेत्र चुना है, मुझमें उसके लिये कुछ योग्यता है और सत्ता, वह कैसी भी क्यों न हो, अगर मेरे हाथों में आई, तो उन अनेक की तुलना में, जिन्हें मैं जानता हूं, वह अधिक बेहतर रहेगी," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने सफलता की चेतना से मुस्कराते हुए कहा। "इसलिये मैं इसके जितना अधिक निकट पहुंच रहा हूं, उतना ही ख़ुश हूं।"

"हो सकता है कि तुम्हारे लिये यह ऐसा हो, मगर सभी के लिये नहीं। मैंने भी ऐसा सोचा था, लेकिन अब जी रहा हूं और ऐसा पाता हूं कि केवल इसी के लिये जीने में कोई तुक नहीं," व्रोन्स्की ने कहा।

"अब तुम आये असली बात पर! असली बात पर!" सेर्पुख़ोव्स्कोई हंसते हुए बोला। "मैंने तो उसी चीज़ से, जो तुम्हारे बारे में सुनी थी, बात शुरू की थी, तुम्हारे इन्कार से... ज़ाहिर है कि मैंने तुम्हारे निर्णय का अनुमोदन किया। लेकिन हर चीज़ को करने का अपना ढंग होता है। मेरे ख़्याल में तुमने किया तो ठीक, मगर वैसे नहीं किया, जैसे करना चाहिये था।"

"जो हो चुका, सो हो चुका और तुम जानते हो कि जो कर चुका हूं, मैं उसकी तरफ़ मुड़कर नहीं देखता। फिर इसके अलावा मैं ख़ूब मज़े में हूं।"

"मज़े में हो – वक़्ती तौर पर। लेकिन तुम्हें इससे सन्तोष नहीं होगा। मैं तुम्हारे भाई से ऐसा नहीं कहूंगा। वह तो हमारे इस मेज़बान की तरह प्यारा बच्चा-सा है। सुनो तो!" उसने हुर्रा की गूंज सुनते हुए इतना और कहा। "वह बहुत ख़ुश है, लेकिन तुम्हें इससे सन्तोष नहीं होगा।"

"मैं नहीं कह रहा हूं कि मुझे सन्तोष है।"

"बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है। तुम्हारे जैसे लोगों की ज़रूरत है।"

"किसे?"

"किसे? समाज को। रूस को लोगों की ज़रूरत है, पार्टी की जरूरत है, वरना सब सत्यानाश हो जायेगा।"

"क्या मतलब तुम्हारा ? रूसी कम्युनिस्टों के विरुद्ध बेर्तेनेव की पार्टी की ?"

"नहीं," इस बात से दुखी होते हुए कि उसपर ऐसी मूर्खता का सन्देह किया जा रहा है, उसने नाक-भौंह सिकोड़कर जवाब दिया। Tout ça est une blaque*. ऐसा तो हमेशा था और रहेगा। कहीं कोई कम्युनिस्ट वगैरह नहीं हैं। लेकिन षड्यन्त्रकारी हमेशा कोई बुरी, ख़तरनाक पार्टी की कल्पना करते रहते हैं। यह पुरानी बात है। नहीं, मेरे और तुम्हारे जैसे स्वावलम्बी लोगों की सत्तावाली पार्टी की ज़रूरत है।"

"लेकिन क्यों ?" व्रोन्स्की ने कुछ ऐसे लोगों के नाम लिये, जिनके हाथों में सत्ता थी। "लेकिन वे स्वावलम्बी क्यों नहीं हैं ?"

"केवल इसलिये कि उनकी जन्म से स्वावलम्बी स्थिति नहीं है या नहीं थी, नाम नहीं था, हमारी तरह उनका भाग्य-सितारा ऊंचा नहीं था। उन्हें या तो पैसे या कृपा-अनुकम्पा से ख़रीदा जा सकता है। अपनी स्थिति बनाये रखने के लिये उन्हें किसी दिशा की कल्पना करनी पड़ती है। वे कोई न कोई विचार या दिशा ढूंढ़ निकालते हैं, जिसमें ख़ुद उनका भी विश्वास नहीं होता और जिससे केवल अहित होता है। उनकी यह दिशा केवल सरकारी घर और एक विशेष वेतन पाने का ही साधन होती है। जब हम उनके पत्तों पर नज़र डालते हैं, तो cela n'est pas plus fin que ça**. हो सकता है कि मैं उनसे हीन, उनसे कम समझदार हूं, यद्यपि मुझे इसका कोई कारण नहीं दिखता कि मैं उनसे उन्नीस होऊं। किन्तु सम्भवतः एक महत्वपूर्ण बात में मुझे श्रेष्ठता प्राप्त है, वह यह कि हमें ख़रीदना कहीं अधिक कठिन है। और ऐसे लोगों की आज कहीं अधिक आवश्यकता है।"

व्रोन्स्की बहुत ध्यान से सुन रहा था, किन्तु शब्दों के सार की तुलना में मामले के प्रति सेर्पुख़ोव्स्कोई का रवैया उसके लिये अधिक दिलचस्पी रखता था। वह सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करने की सोच रहा था और इस सिलसिले में उसे कुछ पसन्द तथा नापसन्द भी था, जबकि

---

* यह सब बकवास है। (फ़्रांसीसी)

** यह सब कुछ सूझ-बूझ वाला नहीं है। (फ़्रांसीसी)

ख़ुद उसकी दिलचस्पी तो अपने दस्ते तक ही सीमित थी। व्रोन्स्की यह भी समझ गया कि चीज़ों के बारे में सोचने और उन्हें समझने की क्षमता, जिसके बारे में कोई सन्देह नहीं हो सकता था, अपनी अक़्ल और वाणी-वरदान की बदौलत, जो उसके क्षेत्र के लोगों में बहुत दुर्लभ चीज़ थी, सेर्पुख़ोव्स्कोई कितना अधिक शक्तिशाली हो सकता था। व्रोन्स्की को ईर्ष्या और इस कारण शर्म अनुभव हुई।

"फिर भी इसके लिये मेरे पास एक मुख्य चीज़ की कमी है," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया। "सत्ता पाने की इच्छा। ऐसी इच्छा कभी थी, मगर नहीं रही।"

"तुम मुझे माफ़ करना, यह सच नहीं है," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने मुस्करा कर कहा।

"नहीं, सच है, सच है!.. अब सच है," व्रोन्स्की ने अपने शब्दों की निश्छलता पर ज़ोर देने के लिये कहा।

"'अब' सच है, यह दूसरी बात है। किन्तु यह 'अब' हमेशा ही नहीं होगा।"

"सम्भव है," व्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

"तुम कहते हो, 'सम्भव है'," व्रोन्स्की के भावों का अनुमान लगाते हुए सेर्पुख़ोव्स्कोई कहता गया, "लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि 'निश्चय' ही ऐसा होगा। इसके लिये मैं तुमसे मिलना चाहता था। तुमने वैसा ही किया, जैसा कि करना चाहिये था। यह मेरी समझ में आता है, मगर तुम्हें इसे एक सीमा से आगे नहीं ले जाना चाहिये। मैं तुमसे carte blanche* चाहता हूं। मैं तुम्हारी सरपरस्ती नहीं कर रहा हूं... वैसे मैं तुम्हारी सरपरस्ती करूं भी क्यों नहीं? तुमने कितनी ही बार मेरी सरपरस्ती की है! आशा करता हूं कि हमारी मैत्री इससे ऊपर है। हां," उसने नारी की भांति प्यार से मुस्कराते हुए कहा। "मुझे carte blanche दे दो, पलटन छोड़ दो और मैं तुम्हें चुपके से ऊपर खींच लूंगा।"

"लेकिन तुम इस बात को समझो कि मुझे कुछ भी नहीं चाहिये," व्रोन्स्की ने कहा, "सिर्फ़ यही चाहता हूं कि सब कुछ वैसे ही रहे, जैसे था।"

---

* खुली छूट। (फ़्रांसीसी)

सेर्पुख़ोव्स्कोई उठा और व्रोन्स्की के सामने खड़ा हो गया।

"तुमने कहा कि सब कुछ वैसे ही रहे, जैसे था। मैं समझता हूं कि इसका क्या मतलब है। लेकिन सुनो – हम दोनों हमउम्र हैं, सम्भव है कि मेरी तुलना में तुम्हारा अधिक औरतों से वास्ता रहा है," सेर्पुख़ोव्स्कोई की मुस्कान और हाव-भाव यह जता रहे थे कि व्रोन्स्की को डरना नहीं चाहिये, कि वह बड़ी कोमलता और सावधानी से उसकी दुखती रग को छुयेगा। "मैं विवाहित हूं और विश्वास करो कि एक अपनी पत्नी को, जिसे तुम प्यार करते हो, जानकर ही (जैसे कि किसी ने लिखा है), तुम सभी नारियों को पहले से बेहतर समझ जाते हो, जितना कि हज़ारों को जानकर समझ पाते।"

"अभी आते हैं!" व्रोन्स्की ने कमरे में झांकने और पलटन-कमांडर के पास बुलाने के लिये आनेवाले अफ़सर से ऊंची आवाज़ में कहा।

व्रोन्स्की अब वह सुनना और जानना चाहता था, जो सेर्पुख़ोव्स्कोई उससे कहनेवाला था।

"तो मेरी राय यह है। नारियां – पुरुष के कार्य-कलापों के मार्ग की सबसे बड़ी बाधायें हैं। किसी औरत को प्यार करना और कुछ कर पाना मुश्किल है। इसके लिये बाधा के बिना और सुविधा से प्यार करने का एक ही साधन है – वह है शादी कर लेना। मैं जो सोचता हूं, उसको कैसे, कैसे स्पष्ट करूं," तुलनायें और उपमायें पसन्द करनेवाला सेर्पुख़ोव्स्कोई बोला, "रुको, ज़रा रुको! हां, कोई fardeau* उठाये रहना और साथ ही हाथों से कुछ कर पाना तभी मुमकिन होता है, जब fardeau पीठ पर बंधा हो – और यही है शादी। शादी करने पर मैंने ऐसा ही अनुभव किया। अचानक मेरे हाथ ख़ाली हो गये। लेकिन शादी के बिना इस बोझ को हम अपने साथ-साथ लिये फिरते रहते हैं – हाथ इतने व्यस्त रहते हैं कि कुछ भी कर पाना सम्भव नहीं होता। माज़ान्कोव और क्रूपोव को ही ले लो। उन दोनों ने औरतों के कारण अपना भविष्य बरबाद कर डाला।"

"किन औरतों की बात कर रहे हो!" व्रोन्स्की ने फ़्रांसीसी औरत

---

* बोझ। (फ़्रांसीसी)

और उस अभिनेत्री को याद करते हुए कहा, जिनके साथ उक्त दोनों व्यक्तियों के सम्बन्ध थे।

"नारियों की ऊंचे समाज में जितनी अधिक दृढ़ स्थिति होती है, उतना ही अधिक बुरा है। यह तो fardeau को हाथों से ढोना नहीं, बल्कि उसे दूसरे से छीनने के समान है।"

"तुमने कभी प्यार नहीं किया," व्रोन्स्की ने अपने सामने देखते और आन्ना के बारे में सोचते हुए धीमे से कहा।

"हो सकता है। लेकिन मैंने तुमसे जो कहा है, उसे याद रखना। एक बात और – नारियां हम पुरुषों की तुलना में अधिक व्यावहारिक होती हैं। हम प्यार को एक बहुत बड़ी चीज़ बना देते हैं, किन्तु उनके लिये वह सदा terre-à-terre* है।"

"अभी, अभी आ रहे हैं!" उसने भीतर आनेवाले नौकर से कहा। लेकिन जैसा कि उसने सोचा था, नौकर उन्हें फिर से बुलाने नहीं आया था। वह तो व्रोन्स्की के नाम रुक्क़ा लाया था।

"प्रिंसेस त्वेरस्काया का आदमी आपके लिये इसे लाया है।"

व्रोन्स्की ने पत्र खोलकर पढ़ा और उसके चेहरे पर उत्तेजना की लाली छा गयी।

"मेरे सिर में दर्द होने लगा है, मैं घर जा रहा हूं," उसने सेर्पुख़ोव्स्कोई से कहा।

"तो, जाओ। Carte blanche देते हो?"

"बाद में बात करेंगे। मैं तुमसे पीटर्सबर्ग में मिलूंगा।"

(२२)

पांच तो कभी के बज चुके थे और इस हेतु कि वह समय पर पहुंच जाये, सो भी अपनी बग्घी में नहीं, जिसे सभी जानते-पहचानते थे, व्रोन्स्की याश्विन की किराये की बग्घी में बैठ गया और उसने कोचवान को जितना सम्भव हो सके, तेज़ी से बग्घी दौड़ाने को कहा। चार स्थानोंवाली पुरानी बग्घी काफ़ी बड़ी थी। व्रोन्स्की एक कोने में

---

* हर दिन की मामूली बातें। (फ़्रांसीसी)

बैठ गया, सामनेवाली सीट पर उसने टांगें फैला लीं और सोच में डूब गया।

उसने अपने सारे मामलों को जैसे व्यवस्थित कर लिया था, उसकी धुंधली-सी चेतना, सेर्पुख़ोव्स्कोई की दोस्ती और उसकी इस प्रशंसा की धुंधली-सी स्मृति कि वह राज्य के लिये काम का आदमी है और मुख्यतः तो मिलन की प्रतीक्षा – यह सभी कुछ जीवन की एक सुखद अनुभूति के रूप में घुल-मिल गया। यह अनुभूति इतनी तीव्र थी कि वह अनचाहे ही मुस्करा दिया। उसने टांगें नीचे कर लीं, एक घुटने को दूसरे पर टिका लिया और उसे हाथ में लेकर, उस लचीली पिंडली को छुआ, जिस पर पिछले दिन गिरने के समय चोट आ गयी थी और पीठ टिकाकर कई बार गहरी सांसें लीं।

"ख़ूब, बहुत ख़ूब!" उसने अपने आपसे कहा। उसे पहले भी अक्सर अपने शरीर की सुखद चेतना की अनुभूति होती थी, किन्तु इस समय की भांति उसे अपना आप और अपना शरीर कभी इतना प्यारा नहीं लगा था। मज़बूत टांग में हल्का-सा दर्द उसे अच्छा लग रहा था, सांस लेते समय अपनी छाती के हिलने-डुलने से मांस-पेशियों की अनुभूति प्यारी लग रही थी। अगस्त महीने का वही उजला और ठण्डा दिन, जिसने आन्ना पर इतना निराशाजनक प्रभाव डाला था, व्रोन्स्की को उत्तेजनापूर्ण सजीवता प्रदान करनेवाला प्रतीत हुआ और नल के नीचे ख़ूब भिगोने से सिहरे हुए चेहरे तथा गर्दन को ताज़गी प्रदान कर रहा था। इस ताज़ा हवा में मूंछों पर लगी ब्रिलेन्तीन क्रीम की सुगन्ध उसे विशेषतः बहुत प्यारी लग रही थी। बग्घी की खिड़की में से उसे जो कुछ दिखाई दे रहा था, इस ठण्डी, निर्मल हवा, सूर्यास्त के समय के इस धुंधले प्रकाश में वैसा ही ताज़ा, प्रफुल्लतापूर्ण और शक्तिशाली था, जैसा वह ख़ुद – डूबते सूरज की किरणों में घरों की चमकती छतें, बाड़ों की रूप-रेखायें और इमारतों के कोण, कभी-कभार सामने आनेवाले राहगीर और बग्घियां, वृक्षों और घास की निश्चल हरियाली, ढंग से बनी हुई आलू की क्यारियां, घरों और वृक्षों, झाड़ियों तथा आलुओं की क्यारियों से पड़ती हुई टेढ़ी छायायें। सब कुछ थोड़ी ही देर पहले ख़त्म किये तथा वार्निश से चमकाये गये सुन्दर चित्र के समान था।

"तेज़, और तेज़ करो घोड़ों को!" उसने खिड़की में से बाहर

झांकते हुए कोचवान से कहा और जेब से तीन रूबल का नोट निकालकर उसे थमा दिया। कोचवान के हाथ ने लालटेन के पास किसी चीज़ को छुआ, चाबुक की सटकार सुनाई दी और हमवार सड़क पर बग्घी तेज़ी से दौड़ने लगी।

"इस सुख के सिवा मुझे और कुछ नहीं चाहिये," खिड़कियों के बीच की जगह पर घण्टी की हाथी-दांत की मुठिया को देखते और जिस रूप में उसने अन्तिम बार आन्ना को देखा था, उसकी कल्पना करते हुए उसने मन ही मन सोचा। "जितना अधिक समय बीतता जा रहा है, उससे मुझे उतना ही अधिक प्यार होता जा रहा है। लो, यह आ गया व्रेदे के सरकारी बंगले का बगीचा। कहां है वह यहां? कहां है? कैसे यहां आई है? उसने यहां क्यों मिलन-स्थल तय किया और बेत्सी के ख़त में क्यों मुझे लिखा है?" उसने केवल अभी यह सोचा, मगर सोचने का वक़्त नहीं था। उसने उद्यान-पथ तक पहुंचने के पहले ही कोचवान को बग्घी रोकने को कहा, दरवाज़ा खोलकर चलती बग्घी से उतर गया और घर की ओर ले जानेवाले उद्यान-पथ पर बढ़ चला। वहां कोई नहीं था, किन्तु दायीं ओर नज़र डालने पर उसे आन्ना दिखाई दी। उसका चेहरा परदे से ढका हुआ था, किन्तु उसने ख़ुशी भरी नज़र से आन्ना की उस विशेष चाल को, जो केवल उसी का लक्षण थी, उसके कंधों के झुकाव और जिस स्थिति में अपने सिर को रखती थी, पहचान लिया था तथा तुरन्त उसके शरीर में मानो विद्युत तरंग-सी दौड़ गयी। उसने टांगों की लचीली गतिविधि से सांस लेते समय फेफड़ों के हिलने-डुलने तक अपने को एक नयी शक्ति के साथ अनुभव किया और होंठों पर गुदगुदी-सी महसूस की।

व्रोन्स्की के निकट आ जाने पर आन्ना ने ज़ोर से उसके साथ हाथ मिलाया।

"तुम नाराज़ तो नहीं हो कि मैंने तुम्हें बुलाया है? मेरे लिये तुमसे मिलना ज़रूरी था," उसने कहा और परदे के नीचे व्रोन्स्की को दिखनेवाली होंठों की गम्भीर और कड़ी रेखा से उसका मूड फ़ौरन बदल गया।

"मैं नाराज़ होऊं! लेकिन तुम कैसे आईं, कहां चलें?"

"कहीं भी," व्रोन्स्की के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए उसने कहा, "आओ चलें, मुझे तुमसे बात करनी है।"

व्रोन्स्की समझ गया कि कोई ख़ास बात हो गयी है और यह मिलन सुखद नहीं रहेगा। आन्ना की उपस्थिति में उसकी इच्छाशक्ति जवाब दे जाती थी – आन्ना की परेशानी का कारण न जानते हुए वह अभी से यह महसूस कर रहा था कि अनचाहे ख़ुद उसे भी वही परेशानी अनुभव होने लगी है।

"क्या हुआ? क्या बात है?" व्रोन्स्की ने कुहनी से उसका हाथ दबाते और उसके चेहरे से उसके मनोभावों को पढ़ने की कोशिश करते हुए पूछा।

आन्ना अपनी हिम्मत बटोरते हुए कुछ क़दम चुपचाप चलती रही और फिर अचानक रुक गयी।

"मैंने तुमसे कल नहीं कहा," वह जल्दी-जल्दी और मुश्किल से सांस लेते हुए कहने लगी, "कि अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के साथ घर लौटते हुए मैंने उसे सब कुछ बता दिया... कह दिया कि मैं उसकी बीवी नहीं रह सकती, कि... और सब कुछ कह डाला।"

व्रोन्स्की अनजाने ही अपने सारे शरीर को उसकी ओर झुकाये हुए उसे सुन रहा था मानो ऐसे उसकी स्थिति के बोझ को कम करना चाहता हो। किन्तु उसके ऐसा कहते ही वह अचानक तन गया और उसके चेहरे पर गर्व तथा कठोरता का भाव आ गया।

"हां, हां, यह बेहतर है, हज़ार गुना बेहतर है! मैं समझ सकता हूं कि तुम्हारे लिये यह कितना मुश्किल रहा होगा।"

किन्तु आन्ना उसके शब्द नहीं सुन रही थी, वह चेहरे के भावों से उसके मन के भाव पढ़ रही थी। वह यह नहीं जान सकती थी कि व्रोन्स्की के चेहरे का भाव उसके दिमाग़ में आनेवाले पहले ख़्याल – अब द्वन्द्व-युद्ध अनिवार्य है – को व्यक्त कर रहा था। द्वन्द्व-युद्ध का ख़्याल तो भूलकर भी उसके दिमाग़ में कभी नहीं आया था और इसलिये व्रोन्स्की के चेहरे की इस क्षणिक कठोरता का उसने दूसरा ही अर्थ लगाया।

पति का पत्र पाकर वह अपने मन की गहराई में यह जान गयी थी कि सब कुछ पहले की तरह ही रहेगा, कि वह अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की अवहेलना नहीं कर पायेगी, बेटे को छोड़कर प्रेमी के साथ अपना भाग्य नहीं जोड़ सकेगी। प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां बितायी

गयी सुबह ने इस बात की और भी पुष्टि कर दी थी। लेकिन फिर भी यह मिलन उसके लिये बहुत ही महत्त्व रखता था। उसे आशा थी कि इस मिलन से उसकी स्थिति बदल जायेगी और उसका बचाव हो जायेगा। अगर यह समाचार पाकर व्रोन्स्की दृढ़ता से, बड़े उत्साह से, घड़ी-भर को भी दुविधा में पड़े बिना उससे यह कहेगा: "सब कुछ छोड़-छाड़कर मेरे साथ भाग चलो!" – तो वह बेटे को छोड़कर उसके साथ चली जायेगी। किन्तु इस ख़बर का उसपर वैसा असर नहीं हुआ, जैसी उसने आशा की थी – उसे तो मानो किसी बात से कुछ बुरा लगा था।

"मेरे लिये यह सब कहना ज़रा भी मुश्किल नहीं रहा। यह अपने आप ही हो गया," आन्ना ने झल्लाहट से कहा, "और यह लो..." उसने दस्ताने में से पति का पत्र निकालकर उसकी तरफ़ बढ़ा दिया।

"मैं समझता हूं, सब समझता हूं," उसने आन्ना को टोककर पत्र लेते और पढ़े बिना ही उसे शान्त करते हुए कहा, "मैं सिर्फ़ एक ही चीज़ चाहता था, एक ही चीज़ के लिये प्रार्थना करता था – इस स्थिति को ख़त्म कर दूं, ताकि तुम्हारे सुख-सौभाग्य को अपना जीवन समर्पित कर सकूं।"

"तुम मुझसे यह किसलिये कह रहे हो?" वह बोली। "क्या मुझे इसमें सन्देह हो सकता है? अगर मुझे सन्देह होता..."

"वे कौन आ रही हैं?" व्रोन्स्की ने अपनी ओर आती दो महिलाओं की तरफ़ संकेत करते हुए अचानक कहा। "हो सकता है कि हमें जानती हों," और वह आन्ना को अपने पीछे-पीछे ले जाते हुए जल्दी से बग़ल की पगडंडी पर बढ़ गया।

"आह, मेरी बला से!" उसने कहा। आन्ना के होंठ कांप उठे। व्रोन्स्की को लगा कि परदे के नीचे से आन्ना की आंखें अजीब तरह के गुस्से से उसे देख रही हैं। "तो में कह रही हूं कि बात यह नहीं है, मुझे इसके बारे में सन्देह नहीं हो सकता। लेकिन देखो, उसने मुझे क्या लिखा है। पढ़ो।" और वह फिर से रुक गयी।

पति के साथ आन्ना के विच्छेद की ख़बर सुनने के क्षण की भांति ही अब पत्र पढ़ते हुए व्रोन्स्की का ध्यान बरबस उस स्वाभाविक प्रभाव

की ओर चला गया, जो अपमानित पति के सम्बन्ध में उसके दिमाग़ में आया था। अब पत्र हाथ में लिये हुए उसने अनचाहे ही उस चुनौती-पत्र की, जो सम्भवतः आज या कल उसे अपने घर पर मिल जायेगा, तथा उस द्वन्द्व-युद्ध की कल्पना की, जिसके समय इसी कठोरता और गर्व के भाव से, जो इस वक़्त उसके चेहरे पर था, हवा में गोली छोड़कर वह अपमानित पति की गोली का निशाना बनेगा। इसी क्षण उसके दिमाग़ में उस बारे में विचार कौंध गया, जो कुछ ही देर पहले सेर्पुख़ोव्स्कोई ने उससे कहा था और जो ख़ुद उसने उसी सुबह को सोचा था यानी यह कि उसे इस झंझट से दूर रहना चाहिये। वह जानता था कि यह विचार वह आन्ना के सामने व्यक्त नहीं कर सकता।

पत्र पढ़ने के बाद उसने आन्ना की ओर नज़र उठाई और उसकी नज़र में दृढ़ता नहीं थी। आन्ना फ़ौरन समझ गयी कि वह ख़ुद पहले से इसके बारे में सोचता रहा है। वह जानती थी कि व्रोन्स्की उससे चाहे कुछ भी क्यों न कहे, वह सब नहीं कहेगा, जो सोचता है। वह समझ गयी कि उसकी अन्तिम आशा उसे छल गयी। यह वह नहीं था, जिसकी उसने आशा की थी।

"तुम देख रहे हो न कि वह कैसा आदमी है," आन्ना ने कांपती आवाज़ से कहा, "वह ..."

"मैं माफ़ी चाहता हूं, मगर मुझे इस बात से ख़ुशी हो रही है," व्रोन्स्की ने उसकी बात काटते हुए कहा और उसकी नज़र इस बात की मिन्नत कर रही थी कि उसे अपने शब्द स्पष्ट करने का समय दिया जाये। "मैं इसलिये ख़ुश हूं कि जैसा वह सोचता है, यह सब वैसा नहीं रह सकता, किसी हालत में नहीं रह सकता।"

"क्यों नहीं रह सकता?" अपने आंसुओं को पीते हुए आन्ना ने पूछा। वह अब स्पष्टतः उस बात को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी, जो व्रोन्स्की कहेगा। उसे अनुभव हो रहा था कि उसके भाग्य का निर्णय हो चुका है।

व्रोन्स्की यह कहना चाहता था कि द्वन्द्व-युद्ध के बाद, जो उसके मतानुसार अनिवार्य था, ऐसी स्थिति बनी नहीं रह सकती थी, मगर उसने कही दूसरी बात।

"यह स्थिति बनी नहीं रह सकती। मैं आशा करता हूं कि अब तुम उसे छोड़ दोगी। मैं आशा करता हूं," वह घबराया और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, "कि तुम मुझे हमारे जीवन के बारे में सोचने और उसे व्यवस्थित रूप देने की अनुमति दोगी। कल..." उसने कहना शुरू किया।

आन्ना ने उसे अपनी बात नहीं कहने दी।

"मगर मेरा बेटा?" वह चिल्ला उठी। "तुमने पढ़ लिया न कि उसने क्या लिखा है? उसे छोड़ना होगा, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती और ऐसा करना नहीं चाहती।"

"किन्तु भगवान के लिये यह सोचो कि क्या बेहतर है? बेटे को छोड़ देना या इसी अपमानजनक स्थिति को बनाये रखना?"

"किसके लिये अपमानजनक स्थिति?"

"सभी के लिये और सबसे अधिक तो तुम्हारे लिये।"

"तुम कहते हो अपमानजनक... ऐसा नहीं कहो। मेरे लिये इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं है," आन्ना ने कांपते स्वर में कहा। वह अब यह नहीं चाहती थी कि व्रोन्स्की सच्ची बात न कहे। उसके पास तो सिर्फ़ उसका प्यार ही रह गया था और वह उसे प्यार करना चाहती थी। "तुम इस बात को समझो कि जब से मुझे तुमसे प्यार हुआ है, उस दिन से मेरे लिये सब कुछ बदल गया है। मेरे लिये सिर्फ़ एक ही, सिर्फ़ एक ही चीज़ बाक़ी है – वह तुम्हारा प्यार है। अगर वह मेरा है, तो मैं अपने को इतनी ऊंची, इतनी दृढ़ अनुभव करती हूं कि मेरे लिये कुछ भी अपमानजनक नहीं हो सकता। मुझे अपनी स्थिति पर इसलिये गर्व है कि... इसलिये गर्व है... गर्व है..." वह यह नहीं कह पाई कि उसे किस बात का गर्व है। लज्जा और हताशा से उसका गला रुंध गया। वह रुककर सिसकने लगी।

व्रोन्स्की ने अनुभव किया कि उसका गला रुंधता जा रहा है, कि नाक में खुजली-सी महसूस हो रही है और जीवन में पहली बार उसने रोना चाहा। वह यह न बता पाता कि किस चीज़ ने उसके मन को ऐसे छू लिया था, उसे आन्ना पर तरस आ रहा था और वह महसूस कर रहा था कि उसकी कोई मदद नहीं कर सकता तथा साथ ही यह भी जानता था कि उसके दुर्भाग्य के लिये वही दोषी है, कि उसने कोई बुरी बात की है।

"क्या तलाक़ देना मुमकिन नहीं?" उसने कमज़ोर-सी आवाज़ में पूछा। आन्ना ने जवाब दिये बिना सिर हिला दिया। "क्या यह नहीं हो सकता कि तुम बेटे को साथ ले लो और उसे छोड़ दो?"

"हो सकता है, लेकिन यह सब उस पर निर्भर करता है। अब मुझे उसके पास जाना चाहिये," उसने रुखाई से कहा। उसकी यह पूर्वानुभूति कि सब कुछ पहले की तरह ही रहेगा, सही सिद्ध हुई। "मंगल के रोज़ मैं पीटर्सबर्ग में हूंगा और तब सब कुछ तय हो जायेगा।"

"हां," आन्ना बोली। "लेकिन अब इस बारे में हम और चर्चा नहीं करेंगे।"

आन्ना की बग्घी, जो उसने वापस भेज दी थी और जिसे व्रेदे के बाग़ के जंगले के पास लाने को कह दिया था, आ गयी। आन्ना ने व्रोन्स्की से विदा ली और घर चली गयी।

(२३)

सोमवार को २ जून के आयोग की सामान्य बैठक थी। कारेनिन सभा-भवन में दाख़िल हुआ, आयोग के सदस्यों और प्रधान से उसने सामान्य ढंग से हाथ मिलाया और अपने लिये तैयार करके रखे गये काग़ज़ों पर हाथ टिकाकर अपनी सीट पर बैठ गया। इन काग़ज़ों में वे उद्धरण थे, जिनकी उसे ज़रूरत हो सकती थी और उस बयान का मसविदा भी था, जो वह यहां देने वाला था। वैसे तो उसे हवालों की ज़रूरत भी नहीं थी। उसे सब कुछ याद था और जो कुछ यहां कहनेवाला था, उसको अपने दिमाग़ में दोहराने की ज़रूरत नहीं समझता था। वह जानता था कि जब वक़्त आयेगा और जब वह उपेक्षा का भाव लाने की बेहद कोशिश करनेवाले विरोधी का चेहरा अपने सामने देखेगा, तो उसका भाषण अपने आप ही उमड़ता हुआ उससे कहीं बेहतर हो जायेगा, जितना कि वह अब उसे तैयार कर सकता था। वह अनुभव कर रहा था कि उसका भाषण इतना अधिक सारपूर्ण था कि उसके हर शब्द का महत्त्व होगा। इसी बीच सामान्य विवरण सुनते हुए वह बहुत ही भोली-भाली और मासूम सूरत बनाये बैठा था। फूली नसोंवाले

उसके गोरे हाथों को, जिनकी लम्बी उंगलियां बड़ी नज़ाक़त से उसके सामने रखे काग़ज़ के दोनों सिरों को छू रही थीं, तथा थकान के भाव से एक ओर को झुके हुए सिर को देखकर कोई यह नहीं सोच सकता था कि अभी उसके मुंह से ऐसे शब्द निकलेंगे, जिनसे भयानक तूफ़ान-सा आ जायेगा, जो सदस्यों को एक-दूसरे को टोकते हुए चीख़ने-चिल्लाने को विवश कर देंगे और प्रधान को बैठक में अनुशासन बनाये रखने की मांग करनी पड़ेगी। रिपोर्ट के ख़त्म होने पर कारेनिन ने अपनी धीमी और पतली आवाज़ में घोषणा की कि ग़ैररूसी लोगों के प्रबन्ध के बारे में वह अपने कुछ विचार प्रकट करना चाहता है। सभी का ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया। कारेनिन ने खांसकर गला साफ़ किया और अपने विरोधी की ओर देखे बिना, बल्कि जैसा कि भाषण देते समय वह हमेशा करता था, सामने बैठे पहले व्यक्ति, नाटे-से विनम्र बूढ़े को चुनकर, जिसका आयोग में कभी कोई मत नहीं रहा था, अपने विचार प्रकट करने लगा। बात जब मूलभूत और बुनियादी क़ानून पर पहुंची, तो विरोधी उछलकर खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा। स्त्रेमोव, जो आयोग का सदस्य था और बुरी तरह तिलमिला उठा था, अपनी सफ़ाई पेश करने लगा। कुल मिलाकर बड़ी तूफ़ानी बैठक रही। किन्तु कारेनिन ने मैदान मार लिया और उसका सुझाव स्वीकार हो गया – तीन और आयोग बना दिये गये तथा अगले दिन पीटर्सबर्ग के एक ख़ास हलक़े में सिर्फ़ इसी बैठक की चर्चा होती रही। कारेनिन को आशातीत सफलता मिली थी।

अगले दिन यानी मंगलवार की सुबह को आंख खुलने पर कारेनिन ने ख़ुश होते हुए पिछले दिन की अपनी विजय को याद किया और मुस्कराये बिना न रह सका, यद्यपि उसने अपने को उस समय उदासीन-सा प्रकट करना चाहा, जब उसके बड़े सेक्रेटरी ने उसकी चापलूसी करने के लिये आयोग में जो कुछ हुआ था, उसके सम्बन्ध में उस तक पहुंची हुई अफ़वाहें उसे बतलायीं।

बड़े सेक्रेटरी से बातचीत करते हुए कारेनिन पूरी तरह से यह भूल गया कि आज मंगल का वही दिन था, जो उसने आन्ना के लौटने के लिये तय किया था, और जब नौकर ने उसके आने की सूचना दी, तो उसे हैरानी तथा अप्रिय आश्चर्य हुआ।

आन्ना सुबह ही पीटर्सबर्ग आई थी। आन्ना के तार के मुताबिक़ उसे लाने के लिये बग्घी भेजी गयी थी और इसलिये कारेनिन को उसके आने की जानकारी होनी चाहिये थी। किन्तु जब वह आई तो वह उसके स्वागत के लिये बाहर नहीं निकला। आन्ना को बताया गया कि वह अभी बाहर नहीं गया और अपने सेक्रेटरी के साथ काम में व्यस्त है। उसने पति को अपने आ जाने के बारे में कहलवा दिया, अपने कक्ष में चली गयी और यह आशा करते हुए कि वह उसके पास आयेगा, अपनी चीज़ों को ठीक-ठाक करने लगी। किन्तु एक घण्टा बीतने पर भी वह नहीं आया। आन्ना प्रबन्ध करने के बहाने भोजन-कक्ष में गयी और यह आशा करते हुए कि वह यहां आ जायेगा, जान-बूझकर ऊंचे-ऊंचे बोलने लगी। मगर वह नहीं आया, यद्यपि आन्ना को इस बात की आहट मिली कि वह सेक्रेटरी को विदा करने के लिये दरवाज़े तक बाहर गया था। आन्ना जानती थी कि हर दिन की तरह वह जल्द ही अपने काम पर चला जायेगा और वह इसके पहले ही उससे मिलना चाहती थी, ताकि उनके सम्बन्ध स्पष्ट हो जायें।

आन्ना ने हॉल को लांघा और दृढ़ता से उसकी ओर चल दी। जब वह उसके कमरे में दाख़िल हुई, तो कारेनिन वर्दी पहने स्पष्टतः जाने को तैयार होकर छोटी-सी मेज़ पर कोहनियां टिकाये बैठा था और थकी-थकी-सी नज़र से अपने सामने देख रहा था। कारेनिन की तुलना में आन्ना ने उसे पहले देखा और समझ गयी कि वह उसके बारे में सोच रहा है।

आन्ना को देखकर उसने उठना चाहा, इरादा बदल लिया, इसके बाद उसके चेहरे पर लाली आ गयी, जो आन्ना ने पहले कभी नहीं देखी थी, वह जल्दी से उठा और उसकी नज़र से नज़र न मिलाते हुए, बल्कि कुछ ऊंचाई पर, उसके माथे तथा बालों पर नज़र टिकाये हुए तेज़ी से उसकी तरफ़ बढ़ चला। वह आन्ना के क़रीब आया, उसका हाथ थाम लिया और उससे बैठने का अनुरोध किया।

"मैं बहुत ख़ुश हूं कि आप आ गयीं," उसने आन्ना के क़रीब बैठते हुए कहा और स्पष्टतः कुछ कहना चाहा, मगर बीच में ही रुक गया। उसने कई बार बात शुरू करनी चाही, पर नहीं की... इस मिलन की तैयारी करते हुए आन्ना ने अपने को यह समझाया था कि

उसका तिरस्कार और अपमान करेगी, फिर भी अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहे और उसे उसके लिये अफ़सोस हो रहा था। इस तरह देर तक ख़ामोशी बनी रही। "सेर्योझा स्वस्थ है न?" कारेनिन ने पूछा और जवाब का इन्तज़ार किये बिना इतना और कह दिया: "मैं आज दोपहर का खाना घर पर नहीं खाऊंगा और अब मुझे जाना चाहिये।"

"मैंने मास्को जाना चाहा था," आन्ना बोली।

"नहीं, आपने बहुत, बहुत अच्छा किया कि यहां आ गयीं," उसने कहा और फिर से चुप हो गया।

यह देखते हुए कि वह बात शुरू नहीं कर पा रहा है, आन्ना ने ख़ुद ही उसे आरम्भ किया:

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," पति की ओर देखते तथा अपने बालों पर टिकी उसकी नज़र से अपनी दृष्टि को नीचे न करते हुए उसने कहा, "मैं अपराधी नारी हूं, बुरी औरत हूं, लेकिन मैं वैसी ही हूं, जैसा कि मैंने आपको तब बताया था और यही कहने के लिये आई हूं कि मैं इसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकती।"

"मैंने आपसे इसके बारे में नहीं पूछा," उसने अचानक दृढ़ता और घृणापूर्वक उससे नज़र मिलाते हुए कहा, "मैंने ऐसा ही सोचा था।" स्पष्टतः क्रोध के प्रभाव से उसने अपनी क्षमताओं पर पुनः पूरी तरह अधिकार पा लिया था। "किन्तु जैसा कि मैंने आपसे उस समय कहा था और फिर आपको लिखा था," वह तीखी और पतली आवाज़ में कहता गया, "मैं फिर दोहराता हूं कि मेरे लिये यह जानना ज़रूरी नहीं है। मैं इसकी अवहेलना करता हूं। सभी पत्नियां आप जैसी उदार नहीं होतीं कि अपने पतियों को इतना 'सुखद' समाचार देने को इतनी उतावली हों।" उसने "सुखद" शब्द पर विशेष ज़ोर दिया। "मैं तब तक इसकी अवहेलना करूंगा, जब तक ऊंचे समाज को इसका पता नहीं चलता, जब तक मेरे नाम पर बट्टा नहीं लगता। इसलिये मैं केवल आपको यह चेतावनी देता हूं कि हमारे सम्बन्ध वैसे ही रहने चाहिये, जैसे सदा रहे हैं, और अगर आप अपने को अटपटी स्थिति में डालेंगी, तो सिर्फ़ उसी हालत में मैं अपनी मान-मर्यादा की रक्षा के लिये क़दम उठाने को मजबूर हूंगा।"

"लेकिन हमारे सम्बन्ध वैसे ही नहीं हो सकते, जैसे सदा थे," आन्ना ने भय से उसकी तरफ़ देखते हुए कातर-सी आवाज़ में कहा।

आन्ना ने जब फिर से उसके शान्त हाव-भाव देखे, उसकी तीखी, बच्चों जैसी और व्यंग्यपूर्ण आवाज़ सुनी, तो उसके प्रति घृणा ने उसका पहले वाला दया भाव नष्ट कर दिया और वह केवल भयभीत-सी होकर रह गयी। लेकिन वह हर हालत में अपनी स्थिति को स्पष्ट कर लेना चाहती थी।

"मैं आपकी पत्नी नहीं रह सकती, जब मैंने ..." उसने कहना शुरू किया।

कारेनिन क्रोध और रुखाई से हंसा।

"ऐसा मानना चाहिये कि आपने जिस तरह का जीवन चुना है, उसका आपके विचारों पर भी प्रभाव पड़ा है। मैं इतना अधिक आदर और इतनी अधिक घृणा करता हूं – आपके अतीत का आदर और वर्तमान से घृणा – कि मेरा क़तई वह आशय नहीं था, जो आपने मेरे शब्दों से समझा।"

आन्ना ने गहरी सांस ली और सिर झुका लिया।

"वैसे, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आपके समान आज़ाद होते हुए," वह ग़ुस्से में आकर कहता गया, "और पति से अपनी बेवफ़ाई के बारे में साफ़-साफ़ कहते हुए, जैसा कि मुझे लग रहा है, आप कुछ भी बुरा नहीं महसूस कर रही हैं, जबकि पति के प्रति पत्नी के कर्त्तव्य निभाना आप बुरा समझती हैं।"

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूं कि इस आदमी को मैं यहां न देखूं और यह कि आप ऐसा व्यवहार करें कि न तो ऊंचा समाज और न ही नौकर-चाकर आप पर उंगली उठा पायें ... कि आप उससे न मिलें। मुझे लगता है कि यह बहुत नहीं है। इसके बदले में आपको एक ईमानदार बीवी के कर्त्तव्य पूरे किये बिना उसके अधिकार प्राप्त होंगे। बस यही कुछ है, जो मैं आपसे कह सकता हूं। अब मेरे जाने का वक़्त हो गया। मैं दोपहर का खाना घर पर नहीं खाऊंगा।"

वह उठा और दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। आन्ना भी उठकर खड़ी हो गयी। कारेनिन ने चुपचाप सिर झुकाकर उसके लिये रास्ता छोड़ दिया।

(२४)

लेविन ने घास की टाल पर जो रात बिताई थी, वह उसके मन पर प्रभाव डाले बिना न रही – उसके लिये खेतीबारी घृणित हो गयी और उसे उसमें कोई दिलचस्पी न रही। बहुत ही बढ़िया फ़सल के बावजूद, पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था या कम से कम उसे कभी ऐसा नहीं लगा था कि इतनी अधिक असफलताओं का मुंह देखना पड़ा हो और उसके तथा किसानों के बीच इस साल जैसे शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध रहे हों। इन असफलताओं और इस शत्रुता का कारण अब उसे बिल्कुल स्पष्ट था। किसानों के निकट होने के फलस्वरूप उसे काम में जो आनन्द मिला था, उसे किसानों और उनके जीवन से जो ईर्ष्या तथा जिसे स्वयं अपनाने की इच्छा अनुभव हुई थी, जो इस रात को उसके लिये सपना न रहकर इरादा बन गयी थी और जिसे अमली शक्ल देने के बारे में उसने सोचा-विचारा था – इन सब चीज़ों ने उसके द्वारा संचालित खेतीबारी के बारे में उसके दृष्टिकोण को इतना बदल दिया कि उसे उसमें किसी भी तरह पहले जैसी दिलचस्पी न रही और वह खेत-कामगारों के प्रति अपने उस अरुचिकर सम्बन्ध को देखे बिना नहीं रह सकता था, जो इस सारे मामले की जड़ में था। पावा जैसी बढ़िया नसल की गउओं का झुण्ड, खाद डाली और लोहे के हलों से जोती गयी सारी ज़मीन, सरपत के झाड़ों से घिरे नौ एक जैसे खेत, गहरी जोती और खाद से उपजाऊ बनायी गयी लगभग एक सौ हेक्टर भूमि और बीज बोने की ड्रिलें, आदि – यह सब कुछ बहुत बढ़िया होता, अगर वह ख़ुद या अपने प्रति सहानुभूति रखनेवाले साथियों और लोगों की मदद से सारा काम कर पाता। लेकिन अब वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था (कृषि-सम्बन्धी उसकी पुस्तक पर किये जानेवाले काम ने, जिसके अनुसार खेतीबारी के कार्य का मुख्य तत्त्व खेत-मज़दूर होना चाहिये, उसे यह समझने में बहुत मदद दी) कि जिस ढंग से वह खेतीबारी का संचालन कर रहा था, उसमें उसके तथा खेत-मज़दूरों के बीच कठोर और ज़ोरदार संघर्ष चल रहा है। इस संघर्ष में एक ओर से यानी उसकी ओर से तो सब कुछ बेहतर ढंग से बदलने का स्थायी तथा तनावपूर्ण प्रयास था तथा दूसरी ओर से स्थिति को ज्यों का त्यों रखने

का। उसने देखा कि इस संघर्ष में उसके बहुत यत्न करने तथा दूसरी ओर से किसी प्रयास या इरादे के बिना सिर्फ़ यही नतीजा निकल रहा था कि खेतीबारी का काम किसी की भी पसन्द के मुताबिक़ नहीं हो रहा था और बढ़िया औज़ार, बढ़िया पशु तथा भूमि व्यर्थ ख़राब हो रहे थे। सब से बड़ी बात तो यह थी कि न केवल इस ध्येय के लिये लगाई जानेवाली शक्ति ही बेकार जा रही थी, बल्कि अब, जब उसके कार्य का अर्थ उसे स्पष्ट हो गया था, वह यह महसूस किये बिना नहीं रह सकता था कि उसका लक्ष्य भी बिल्कुल अनुचित था। वास्तव में यह संघर्ष किस बात का था? वह अपनी एक-एक कौड़ी के लिये जूझता था (उसके लिये ऐसा करना ज़रूरी था, क्योंकि अगर वह इसमें ज़रा-सी भी ढील देता, तो मज़दूरों को मज़दूरी देने के लिये भी उसके पास पैसों की कमी हो जाती), जबकि वे लोग इस बात के लिये यत्नशील थे कि चैन और मज़े से काम करें यानी जैसे उनकी आदत हो गयी थी। उसके हित में यह था कि हर मज़दूर यथाशक्ति अधिक काम करे, सो भी लापरवाही से नहीं, कि वह ओसाने की मशीन, घोड़े की जेली और मांड़ने की मशीन न तोड़े तथा जो कुछ करे, उसके बारे में सोचे-विचारे। दूसरी ओर मज़दूर यथासम्भव अधिक मज़े तथा आराम से काम करना चाहता था तथा मुख्यतः तो बेफ़िक्री और मस्ती से, सो भी सोचे-समझे बिना। इस गर्मी में लेविन ने हर क़दम पर यह देखा। उसने ज़मीन के बुरे टुकड़े चुनकर, जिनपर जंगली घास और कड़वे पौधे उगे हुए थे और जो बीज हासिल करने के उपयुक्त नहीं थे, वहां तिपतिया घास काटने के लिये लोग भेजे, किन्तु उन्होंने बेहतरीन बीजोंवाले टुकड़ों से घास काटी, अपनी सफ़ाई में यह कहा कि कारिन्दे ने ऐसा ही आदेश दिया था और उसे यह कहकर तसल्ली दी कि बहुत बढ़िया चारा होगा। मगर लेविन तो जानता था, ऐसा इसलिये हुआ कि इन टुकड़ों पर घास काटना आसान था। उसने घास को पलटकर सुखाने का यन्त्र भेजा, उसे पहली क़तारों में ही तोड़ डाला गया, क्योंकि किसान के लिये सिर के ऊपर घूमते हुए पंखों के नीचे सीट पर बैठना ऊब का काम था। उससे यह कहा गया: "कोई फ़िक्र नहीं कीजिये, औरतें इस काम को अधिक अच्छी तरह कर देंगी।" हल इसलिये बेकार थे कि मज़दूर के दिमाग़ में यह बात नहीं आई कि ऊपर उठे फाल को

नीचे कर ले और हल पर ज़ोर लगाकर उसने घोड़ों को यातना दी, ज़मीन को ख़राब किया और उससे कहा गया कि वह इसका बुरा न माने। घोड़ों को गेहूं के खेत में छोड़ दिया गया, क्योंकि एक भी मज़दूर रात को चौकीदारी का काम करने को तैयार नहीं था और मनाही करने के बावजूद मज़दूर बारी-बारी से रात को रखवाली करते थे। दिन भर काम करने के बाद वान्का को नींद आ गयी और उसने अपना अपराध मानते हुए कहा: "कुछ भी सज़ा दे सकते हैं!" सबसे अच्छे तीन बछड़े मर गये, क्योंकि उन्हें पानी पिलाने के बिना उस चरागाह में छोड़ दिया गया, जहां तिपतिया घास काटी जा चुकी थी और मज़दूर लोग किसी तरह भी यह मानने को तैयार नहीं थे कि अत्यधिक तिपतिया घास खाकर पेट फूलने से उनकी जान निकल गयी थी। उसे तसल्ली देने के लिये जवाब में यह कहा गया कि तीन दिनों में पड़ोसी के ११२ पशु मर गये थे। यह सब इसलिये नहीं होता था कि कोई लेविन या उसके फ़ार्म का अहित चाहता था। इसके विपरीत, वह जानता था कि किसान उसे प्यार करते हैं और अच्छा मालिक मानते हैं (जो सबसे ऊंची तारीफ़ थी), बल्कि इसलिये होता था कि वे मौज-मस्ती और बेफ़िक्री से काम करना चाहते थे तथा उसके हित उनके लिये न केवल पराये और उनकी समझ से बाहर थे, बल्कि उनके सर्वाधिक न्यायसंगत हितों के बुरी तरह उलट थे। लेविन बहुत पहले से ही फ़ार्म के प्रति अपने रवैये से असन्तोष अनुभव करता था। वह देख रहा था कि उसकी नाव में सूराख़ है, मगर शायद जान-बूझकर अपने को धोखा देते हुए उसे न तो ढूंढ़ता और न ही पाता था। किन्तु अब वह अपनी आंखों में और अधिक धूल नहीं झोंक सकता था। जिस खेतीबारी का वह संचालन कर रहा था, उसके लिये वह न केवल ग़ैरदिलचस्प, बल्कि घृणित हो गयी थी और इसमें अब उसका मन नहीं लग सकता था।

पचास किलोमीटर की दूरी पर कीटी श्चेर्बात्स्काया की उपस्थिति भी इसके साथ जुड़ गयी थी। वह उससे मिलना चाहता था, मगर मिल नहीं सकता था। जब वह डौली ओब्लोन्स्काया के यहां गया था, तो उसने उससे आने को कहा था, सो भी इसलिये कि वह फिर से उसकी बहन के सामने विवाह का प्रस्ताव रखे, जिसे, जैसा कि उसने ज़ाहिर किया था, अब वह स्वीकार कर लेगी। कीटी श्चेर्बात्स्काया को देखने के बाद

खुद लेविन यह समझ गया था कि वह अभी भी उसे प्यार करता है। किन्तु यह जानते हुए कि कीटी वहां है, वह ओब्लोन्स्की परिवार के यहां नहीं जा सकता था। उसने प्रस्ताव किया और कीटी ने उसे ठुकरा दिया, इस तथ्य ने उनके बीच ऐसी दीवार खड़ी कर दी थी, जिसे लांघा नहीं जा सकता था। "मैं केवल इसीलिये उससे अपनी पत्नी बनने को नहीं कह सकता कि वह उसकी पत्नी नहीं हो सकती, जिसकी होना चाहती थी," उसने अपने आपसे कहा। यह विचार उसे कीटी के प्रति कठोर और शत्रुतापूर्ण बना देता था। "मैं भर्त्सना के भाव के बिना उससे बात नहीं कर सकूंगा, क्रोध के बिना उसकी ओर देख नहीं सकूंगा और जैसा कि होना चाहिये, वह मुझसे और भी अधिक नफ़रत करने लगेगी। इसके अलावा, डौली ने मुझसे जो कुछ कहा था, उसके बाद मैं कैसे उनके यहां जा सकता हूं? क्या मैं ऐसा ज़ाहिर किये बिना रह सकता हूं कि उसने जो कुछ मुझसे कहा था, उसे जानता हूं? और मैं बड़ी उदारता के साथ उसे क्षमा करने, उस पर दया करने को जाऊं। मैं अपने को उसके सामने क्षमाकर्त्ता और अपना प्यार भेंट करने-वाले की भूमिका में प्रस्तुत करूं। डौली ने मुझसे यह क्यों कहा? कीटी से अचानक मेरी भेंट हो जाती और तब सब कुछ अपने आप ही हो जाता। लेकिन अब यह असम्भव है, असम्भव है!"

डौली ने उसे रुक्क़ा भेजा, जिसमें कीटी के लिये महिलाओं की सवारी का ज़ीन मांगा था। उसने लिखा था: "मुझे बताया गया है कि आपके पास ऐसा ज़ीन है और आशा करती हूं कि आप स्वयं ही उसे लेकर आयेंगे।"

यह तो उसे बहुत ही अखरा। एक समझदार और संवेदनशील नारी ने कैसे अपनी बहन का ऐसा अपमान किया! उसने दसियों रुक्क़े लिखे, मगर सब फाड़ डाले और उत्तर के बिना ही ज़ीन भिजवा दिया। यह लिखना अनुचित था कि वह आयेगा, क्योंकि वह जा नहीं सकता था, यह लिखना कि नहीं आ सकता, क्योंकि कोई चीज़ बाधा बनती है या कहीं बाहर जा रहा है – यह तो और भी बुरा होता। उसने जवाब के बिना और इस चेतना के साथ कि वह लज्जाजनक बात कर रहा है, ज़ीन भिजवा दिया। अगले ही दिन खेतीबारी का सारा काम, जो उसके लिये घृणित हो गया था, कारिन्दे को सौंपकर

वह दूर के ज़िले में रहनेवाले अपने मित्र स्वियाज्स्की की ओर रवाना हो गया। वहां बढ़िया दलदल थे, जिनमें ढेरों कुनाल थे, और इस मित्र ने कुछ ही समय पहले अपने यहां आने का पुराना इरादा पूरा करने को लिखा था। सूरोव्स्की ज़िले में कुनालोंवाले दलदल बहुत अर्से से लेविन को अपनी ओर खींच रहे थे, किन्तु खेतीबारी के काम की वजह से वह वहां जाने के विचार को टालता रहा था। अब वह श्चेर्बात्स्की परिवार की निकटता और मुख्यतः फ़ार्म से, सो भी शिकार के लिये दूर जाते हुए बहुत ख़ुशी महसूस कर रहा था, क्योंकि शिकार सभी तरह की मुसीबतों-परेशानियों में उसे सबसे ज़्यादा चैन देता था।

(२५)

सूरोव्स्की ज़िले में न तो रेलगाड़ी जाती थी और न ही डाक ले जानेवाली सरकारी घोड़ा-गाड़ियां। इसलिये लेविन अपनी ही बग्घी में वहां जा रहा था।

आधी मंज़िल तय करने के बाद वह घोड़ों को चारा-पानी देने के लिये एक धनी किसान के यहां रुका। स्वस्थ, गंजे सिर और गालों के पास सफ़ेद होती चौड़ी लाल दाढ़ी वाले बूढ़े ने फाटक खोला और उसे थामकर खड़ा रहा, ताकि बग्घी फाटक को लांघ जाये। कोचवान को बड़े, साफ़-सुथरे और झाड़े-बुहारे हुए नये अहाते में, जहां कुछ जले हुए हल रखे थे, सायबान के नीचे जाने का संकेत करके बूढ़े ने लेविन से मेहमानख़ाने में चलने को कहा। साफ़-सुथरी पोशाक और नंगे पैरों में गैलोश पहने जवान लड़की झुककर नयी ड्योढ़ी का फ़र्श साफ़ कर रही थी। लेविन के पीछे-पीछे भीतर भाग आनेवाली कुतिया को देखकर वह डरी और चीख़ उठी, किन्तु यह जानने पर कि वह काटती नहीं है, अपनी चीख़ पर ख़ुद ही हंस पड़ी। आस्तीन ऊपर चढ़े हाथ से लेविन को मेहमानख़ाने की ओर जाने का रास्ता बताकर उसने फिर से झुककर अपना सुन्दर मुखड़ा छिपा लिया और फ़र्श धोने लगी।

"समोवार गर्म करूं क्या?" उसने पूछा।

"हां, कृपया।"

मेहमानख़ाना बड़ा था। उसमें हालैंडी अंगीठी थी और बीच की

दीवार से उसे दो हिस्सों में बांटा गया था। देव-प्रतिमाओं के नीचे बेल-बूटोंवाली मेज़, एक बेंच और दो कुर्सियां रखी थीं। दरवाज़े के क़रीब अलमारी में बर्तन थे। शटर बन्द थे, मक्खियां बहुत कम थीं और कमरा इतना साफ़-सुथरा था कि लेविन ने लास्का को, जो सड़क पर दौड़ती और डबरों में लोटती-पोटती रही थी, दरवाज़े के पास एक कोने में बैठ जाने का इशारा किया, ताकि वह फ़र्श को गन्दा न कर दे। मेहमानख़ाने को देखने के बाद वह पिछवाड़े के अहाते में गया। गैलोश पहने हुए प्यारी-सी सूरतवाली युवती बहंगी पर ख़ाली बालटियां लटकाये हुए कुएं से पानी लाने के लिये उसके सामने से भागती हुई गुज़री।

"ज़रा फुर्ती से!" बूढ़े ने ख़ुशमिज़ाजी से उसे ऊंची आवाज़ में कहा और लेविन के पास गया। "तो हुज़ूर, आप निकोलाई इवानोविच स्वियाज़्स्की के यहां जा रहे हैं? वे भी हमारे यहां आया करते हैं," ओसारे के जंगले पर कोहनियां टिकाकर उसने बातचीत शुरू करने की इच्छा से कहा।

बूढ़ा जब स्वियाज़्स्की के साथ अपने परिचय की बात सुना रहा था, तो बीच में ही फिर से फाटक चरमराकर खुला और खेत में काम करनेवाले लोग हलों तथा हेंगों के साथ अहाते में दाख़िल हुए। हलों और हेंगों के साथ जुते हुए घोड़े मज़बूत और बड़े-बड़े थे। काम करनेवाले स्पष्टतः घर के ही लोग थे – इनमें से दो नौजवान छींट की क़मीज़ें और नुकीली टोपियां पहने थे तथा बाक़ी दो – एक बूढ़ा और दूसरा जवान – भाड़े के मज़दूर थे और गाढ़े के कुरते पहने थे। बूढ़ा ओसारे से हटकर घोड़ों के पास गया और उन्हें खोलने लगा।

"कहां हल चलाते रहे हैं?" लेविन ने पूछा।

"आलू खोदते रहे हैं। हम भी कुछ ज़मीन पट्टे पर लेते हैं। फ़ेदोत, तुम इस बधिया घोड़े को बाहर चरने के लिये नहीं छोड़ो, बल्कि नांद पर खड़ा कर दो। हम दूसरा घोड़ा जोत लेंगे।"

"बापू, मैंने हलों के जो फाल लाने को कहा था, आ गये हैं क्या?" लम्बे-तड़ंगे और हट्टे-कट्टे नौजवान ने पूछा, जो स्पष्टतः बूढ़े का बेटा था।

"स्ले ... स्लेज में हैं," बूढ़े ने उतारी हुई लगामों को लपेटते और ज़मीन पर फेंकते हुए कहा। "जब तक वे खाना खा रहे हैं, सब कुछ ठीक-ठाक कर दो।"

सुन्दर युवती पानी से भरी बालटियों वाली बहंगी को कंधे पर रखे, जिससे उसके कंधे झुक गये थे, भीतर गयी। कहीं से कुछ अन्य औरतें सामने आ गयीं – सुन्दर और जवान, अधेड़ उम्र की, बूढ़ी तथा असुन्दर, बच्चों के साथ और बच्चों के बिना।

समोवार में पानी उबलने लगा था। भाड़े के मज़दूर और घरवाले लोग घोड़ों की देखभाल करने के बाद खाना खाने चल दिये। लेविन ने बग्घी में से अपनी रसद निकालकर बूढ़े को अपने साथ चाय पीने के लिये आमन्त्रित किया।

"रहने दीजिये, मैं तो पी चुका हूं," बूढ़े ने स्पष्टतः सहर्ष उसका प्रस्ताव स्वीकार करते हुए कहा। "साथ देने के लिये पी लूंगा।"

चाय पीते वक़्त लेविन ने बूढ़े की खेतीबारी के बारे में सारी जानकारी हासिल कर ली। बूढ़े ने दस साल पहले एक ज़मींदारिन से लगभग १३० हेक्टर ज़मीन पट्टे पर ली थी। पिछले साल यह सारी ज़मीन ख़रीद ली और पड़ोस के ज़मींदार से लगभग ३३० हेक्टर ज़मीन और किराये पर ले ली। इस ज़मीन का थोड़ा-सा भाग, सबसे बुरा भाग, उसने किराये पर दे दिया और लगभग चवालीस हेक्टर ज़मीन वह अपने परिवार तथा भाड़े के दो मज़दूरों की मदद से ख़ुद जोतता-बोता था। बूढ़े ने शिकायत की कि उसका कामकाज ढीला चल रहा है। किन्तु लेविन समझ गया कि वह केवल कहने के लिये ही ऐसा कह रहा है और वास्तव में उसका फ़ार्म ख़ूब फल-फूल रहा है। अगर उसका मामला ढीला होता, तो वह एक सौ पांच रूबल प्रति हेक्टर के हिसाब से ज़मीन न ख़रीदता, तीन बेटों और एक भतीजे की शादी न कर पाता, दो बार आग लगने के बाद निर्माण न करता और सो भी पहले से बेहतर। बूढ़े के शिकवे-शिकायत के बावजूद यह साफ़ दिख रहा था कि वह अपनी ख़ुशहाली, अपने बेटों, अपने भतीजे, बहुओं, घोड़ों और गउओं तथा इस बात पर न्यायसंगत रूप से गर्व करता है कि इस सारे धंधे को ढंग से चला रहा है। बूढ़े के साथ अपनी बातचीत से उसे यह पता चला कि वह खेतीबारी के नये तरीक़ों के भी विरुद्ध नहीं था। उसने बहुत बड़ी मात्रा में आलू बोये थे और उसके आलू, जो लेविन ने खेतों के पास से गुज़रते हुए देखे थे, फूल चुके थे, जबकि

लेविन के फूलने ही शुरू हुए थे। उसने ज़मींदार से लिये हुए नये ढंग के हल से आलू खोदे थे। वह गेहूं भी बोता था। एक छोटी-सी तफ़सील ने कि वह रई की छांट घोड़ों को खिलाता था, लेविन को विशेषतः आश्चर्यचकित किया। लेविन ने इस मूल्यवान चारे को बरबाद होते देखकर अनेक बार उसे इकट्ठा करवाना चाहा, मगर हमेशा ही यह असम्भव रहा। किन्तु इस किसान ने ऐसा कर लिया और वह चारे के रूप में इसकी तारीफ़ करते थकता ही नहीं था।

"जवान औरतें करें भी तो क्या? वे छोटे-छोटे ढेरों में इसे सड़क पर पहुंचा देती हैं और वहां से घोड़ा-गाड़ी लाद ले जाती है।"

"हम, ज़मींदारों का किराये के मज़दूरों के साथ ढंग से काम नहीं चलता," बूढ़े को चाय का गिलास देते हुए लेविन ने कहा।

"धन्यवाद," बूढ़े ने गिलास लेकर कहा, मगर चीनी की कुछ कुतरी और बची हुई डली की ओर संकेत करते हुए चीनी लेने से इन्कार कर दिया। "मज़दूरों की मदद से क्या खेतीबारी का काम चल सकता है?" उसने कहा। "उसमें बरबादी ही बरबादी है। स्वियाज्स्की को ही लीजिये। हम जानते हैं कि कैसी ज़मीन है उनकी, पोस्त के बीजों की तरह काली, लेकिन उनकी फ़सलों की भी कोई बहुत तारीफ़ नहीं की जा सकती। यह सब अच्छी देखभाल न होने का नतीजा है!"

"लेकिन तुम तो मज़दूरों से काम लेते हो?"

"हमारा किसानों का मामला है। हम सब कुछ ख़ुद ही करते हैं। मज़दूर ने बुरा काम किया – भाग यहां से। ख़ुद ही अपना काम चला लेंगे।"

"बापू, फ़ीनोगेन ने तारकोल मांगा है," गैलोश पहने हुए युवा नारी ने भीतर आकर कहा।

"तो ऐसी बात है, हुज़ूर!" बूढ़े ने उठते हुए कहा, देर तक सलीब बनाता रहा, लेविन को धन्यवाद दिया और बाहर चला गया।

लेविन अपने कोचवान को बुलाने के लिये जब पिछले कमरे में गया, तो उसने परिवार के सभी मर्दों को खाने की मेज़ पर बैठे देखा। औरतें खड़ी हुई उन्हें खाना खिला रही थीं। बूढ़े का हट्टा-कट्टा जवान बेटा दलिये से अपना मुंह भरे हुए कोई हास्यपूर्ण बात सुना रहा था, सभी ठहाके लगा रहे थे तथा सबसे ज़्यादा ख़ुश तो गैलोश पहने हुए

युवा नारी थी, जो प्याले में फिर से पत्तागोभी का शोरबा डाल रही थी।

बहुत मुमकिन है कि गैलोश पहने हुए जवान औरत के प्यारे चेहरे ने सुख-समृद्धि का वह प्रभाव डालने में, जो इस किसान-परिवार में लेविन के मन पर पड़ा, निर्णायक भूमिका अदा की हो, किन्तु यह प्रभाव इतना गहरा था कि लेविन किसी तरह भी इससे मुक्ति नहीं पा सका। बूढ़े के घर से स्वियाज़्स्की के घर तक वह बार-बार इस किसान की खेतीबारी के बारे में सोचता रहा मानो दिल पर पड़ी इस छाप में कुछ तो उसके विशेष ध्यान की मांग करता था।

(२६)

स्वियाज़्स्की अपने ज़िले के कुलीनों का मुखिया था। वह लेविन से पांच साल बड़ा और एक अर्से से शादीशुदा था। उसकी जवान साली भी उसी के घर में रहती थी और वह लेविन को बहुत पसन्द थी। लेविन जानता था कि स्वियाज़्स्की और उसकी बीवी उसके साथ इस लड़की की शादी करने को बहुत उत्सुक हैं। वह पक्की तरह यह जानता था, जैसे कि शादी के लायक़ सभी जवान लोग हमेशा यह जानते होते हैं, यद्यपि इसके बारे में उसने कभी किसी से यह न कहा होता। वह यह भी जानता था कि बेशक शादी करना चाहता है, कि सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यह सुन्दर लड़की बहुत अच्छी बीवी हो सकती है और अगर उसे कीटी से प्यार न होता, तो भी उससे वैसे ही शादी न करता, जैसे कि आसमान में न उड़ता। इस बात की चेतना ने उसकी उस ख़ुशी का कुछ रंग फीका कर दिया, जो स्वियाज़्स्की के यहां जाकर वह हासिल करने की उम्मीद कर रहा था।

शिकार के लिये जाने के निमन्त्रण के साथ स्वियाज़्स्की का पत्र पाते ही लेविन को इस बात का ख़्याल आया। इसके बावजूद उसने यह तय किया कि अपने बारे में स्वियाज़्स्की के ऐसे विचार उसका आधारहीन अनुमान ही हैं और इसलिये वह जायेगा। इसके अलावा अपने दिल की गहराई में वह एक बार फिर अपने को जांचना, इस लड़की के बारे में अपनी भावनाओं को परखना चाहता था। स्वियाज़्स्की का घरेलू जीवन बहुत ही सुखद था और ख़ुद स्वियाज़्स्की, जो लेविन को जान-पहचान

के ज़ेम्सत्वो-परिषद के कार्यकर्त्ताओं में सर्वश्रेष्ठ ढंग का व्यक्ति था, लेविन के लिये हमेशा बहुत दिलचस्प रहा था।

स्वियाज्स्की लेविन को हमेशा चकित करनेवाले उन लोगों में से था, जिनका चिन्तन मौलिक न होते हुए भी बहुत तर्कसंगत होता है और उनके जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। उनके जीवन की दिशा अत्यधिक सुनिश्चित और दृढ़ होती है और जीवन उनके विचारों से सर्वथा स्वतन्त्र और लगभग हमेशा ही उनके प्रतिकूल, अपने आप ही चलता जाता है। स्वियाज्स्की बहुत ही उदार विचारों का व्यक्ति था। वह कुलीनों को घृणा की दृष्टि से देखता था और अधिकतर कुलीनों को भूदास-प्रथा के पक्षपाती मानता था, जो केवल भीरुतावश अपने विचार व्यक्त नहीं करते थे। वह रूस को तुर्की की तरह गया-बीता देश और रूस की सरकार को इतना बुरा समझता था कि सरकार की गतिविधियों पर कभी गम्भीर टीका-टिप्पणियां भी नहीं करना चाहता था। इसके साथ ही वह सरकारी कामकाज करता था, कुलीनों का आदर्श मुखिया था तथा यात्रा के समय सदैव कोकेर्ड और लाल पट्टीवाला टोप पहनता था। उसके मतानुसार ढंग की इन्सानी ज़िन्दगी सिर्फ़ विदेश में ही मुमकिन थी और सम्भावना पाते ही वह वहां चला जाता था, लेकिन साथ ही रूस में बहुत ही जटिल तथा बढ़िया ढंग की खेतीबारी का संचालन करता था, रूस में जो कुछ होता था, बड़ी दिलचस्पी से उसपर नज़र रखता था तथा सब कुछ जानता था। वह यह मानता था कि मानव विकास की दृष्टि से रूसी किसान बन्दर से मानव बनने की संक्रमण-अवस्था में है, मगर साथ ही ज़ेम्सत्वो-परिषदों के चुनावों में सबसे ज़्यादा उत्साह से किसानों के साथ हाथ मिलाता था और उनके विचारों को सुनता था। वह किसी भी तरह के शकुनों-अपशकुनों और मौत में विश्वास नहीं करता था, लेकिन पादरियों के जीवन को बेहतर बनाने, गिरजों की संख्या बढ़ाने के प्रश्न में बड़ी दिलचस्पी लेता था और उसने इस बात के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया था कि उसके गांव में गिरजा बना रहे।

औरतों के प्रश्न पर उनकी स्वतन्त्रता और विशेषत: उनके काम करने के अधिकार के मामले में अतिवादी पक्षपातियों का समर्थक था। किन्तु पत्नी के साथ ऐसे रहता था कि सभी उनके सन्तानहीन, मैत्रीपूर्ण

पारिवारिक जीवन को मुग्ध होकर देखते थे और उसने अपनी बीवी का जीवन ऐसे व्यवस्थित कर दिया था कि वह यथासम्भव बेहतर और अधिकाधिक ख़ुशी भरा समय बिताने की दम्पति की साझी इच्छा की पूर्ति के सिवा न तो कुछ करती थी और न कर ही सकती थी।

अगर लेविन में लोगों के जीवन के केवल उजले पहलू को ही देखने का गुण न होता, तो स्वियाज्स्की का चरित्र उसके लिये न तो कोई कठिनाई और न प्रश्न ही प्रस्तुत करता। वह अपने आपसे कहता – उल्लू है या कूड़ा-करकट और बात साफ़ हो जाती। लेकिन वह उसे 'उल्लू' नहीं कह सकता था, क्योंकि स्वियाज्स्की निश्चय ही न केवल बहुत बुद्धिमान, बल्कि बड़ा पढ़ा-लिखा आदमी था और अपने सुशिक्षित होने का ज़रा भी दिखावा नहीं करता था। कोई भी ऐसा विषय नहीं था, जो वह न जानता हो, मगर अपना ज्ञान तभी प्रकट करता था, जब ऐसा करने की विवशता होती। लेविन उसे 'कूड़ा-करकट' तो और भी कम कह सकता था, क्योंकि स्वियाज्स्की निस्सन्देह एक ईमानदार, दयालु और बुद्धिमान व्यक्ति था, जो ख़ुशमिज़ाजी और सजीवता से ऐसे काम करता था, जिनका उसके इर्द-गिर्द के सभी लोग बहुत ऊंचा मूल्यांकन करते थे और सम्भवतः कभी भी उसने जान-बूझकर न तो कुछ बुरा किया था और न ही कर सकता था।

लेविन ने उसे समझने की कोशिश की और नहीं समझ पाया और उसके जीवन को वह हमेशा एक जीती-जागती पहेली की तरह देखता था।

लेविन के साथ उसकी दोस्ती थी और इसलिये वह स्वियाज्स्की को कुरेदने की छूट लेता था, उसके जीवन-दृष्टिकोण की तह तक जाने की कोशिश करता था, मगर उसकी यह कोशिश कभी सिरे नहीं चढ़ती थी। जब कभी भी लेविन स्वियाज्स्की की बुद्धि के अतिथि-कक्ष के सभी के लिये खुले द्वारों से आगे झांकने का प्रयास करता, स्वियाज्स्की तनिक परेशान हो उठता, उसकी दृष्टि में डर की ज़रा झलक मिलती, मानो वह डरता हो कि लेविन उसे समझ जायेगा, और वह हंसते हुए तथा ख़ुशमिज़ाजी से उसका प्रतिवाद करता।

अब खेतीबारी के काम में निराश हो जाने के बाद लेविन के लिये स्वियाज्स्की के यहां जाना विशेषतः सुखद हो गया था। न केवल यही

कि ख़ुद अपने और बाक़ी सभी कुछ से ख़ुश इस सौभाग्यशाली दम्पति तथा उनके सुखी घर का उस पर प्रफ़ुल्लतापूर्ण प्रभाव पड़ता था, बल्कि वह अपने जीवन से अत्यधिक असन्तुष्ट होने पर अब स्वियाज्स्की के यहां उस रहस्य को जानना चाहता था, जो उसके जीवन को इतनी स्पष्टता, सुनिश्चितता और प्रफुल्लता प्रदान करता था। इतना ही नहीं, लेविन जानता था कि स्वियाज्स्की के यहां अड़ोस-पड़ोस के ज़मींदारों से भी उसकी मुलाक़ात होगी और उसके लिये अब खेतीबारी, फ़सल और खेत-मज़दूरों की मजूरी, आदि के बारे में, जिन्हें जैसा कि लेविन जानता था, किसी कारण से घटिया माना जाता था और जो अब उसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण लगते थे, बातचीत करना और उनके विचार सुनना विशेष रूप से दिलचस्प था। "हो सकता है कि भूदास-प्रथा के समय ये बातें महत्त्वपूर्ण नहीं थीं या इंगलैंड में महत्त्व न रखती हों। दोनों स्थितियों में खेतीबारी की परिस्थितियां सुनिश्चित हैं। किन्तु हमारे यहां, जब सब कुछ उलट-पुलट गया है और नया रूप धारण कर रहा है, ये परिस्थितियां कैसे तय होंगी, यह रूस की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है," लेविन सोच रहा था।

लेविन ने जैसी आशा की थी, शिकार उससे कहीं बुरा रहा। दलदल सूख गया था और कुनाल वहां थे ही नहीं। वह दिन भर वहां भटकता रहा और केवल तीन पक्षी ही मार कर लाया, लेकिन जैसा कि हमेशा शिकार के बाद होता था, उसकी भूख ख़ूब चमक उठी थी, उसका मूड बहुत बढ़िया था और बौद्धिक उत्साह बहुत तीव्र हो गया था, जो ज़ोरदार शारीरिक गतिविधि के फलस्वरूप उसे सदा अनुभव होता था। शिकार के समय, जब ऐसा प्रतीत हो सकता था कि वह किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था, उसे रह-रहकर बूढ़े तथा उसके परिवार की याद आती थी और यह प्रभाव न केवल अपनी तरफ़ ध्यान देने की, बल्कि उससे सम्बन्धित किसी चीज़ के समाधान की भी मांग करता था।

शाम को चाय के समय दो ज़मींदारों की उपस्थिति में, जो सर-परस्ती के कुछ मामलों के सिलसिले में आये थे, वह दिलचस्प बातचीत शुरू हो गयी, जिसकी लेविन ने आशा की थी।

चाय की मेज़ पर लेविन गृह-स्वामिनी के निकट बैठा था और

उसे उसके साथ तथा सामने बैठी हुई साली के साथ बातचीत करते रहना चाहिये था। गृह-स्वामिनी नाटे क़द की, गोल चेहरे और सुनहरे बालोंवाली नारी थी, वह ख़ूब मुस्कराती थी और उसके गालों पर ख़ूब गुल पड़ते थे। लेविन ने उसके माध्यम से अपने लिये उस महत्त्वपूर्ण पहेली का हल ढूंढ़ने की कोशिश की, जो उसका पति उसके लिये बना हुआ था। लेकिन वह सोचने-विचारने की पूरी स्वतन्त्रता नहीं पा रहा था, क्योंकि यातनापूर्ण अटपटापन महसूस कर रहा था। उसे इसलिये यातनापूर्ण अटपटापन महसूस हो रहा था कि उसके सामने स्वियाज्स्की की साली, जैसा कि उसे लग रहा था, ख़ास फ़्राक पहने बैठी थी, जो उसकी गोरी छाती पर वर्गाकार रूप में नीचा काटा गया था। इस चीज़ के बावजूद कि छाती बहुत गोरी थी, या विशेषतः इसलिये कि छाती बहुत गोरी थी, फ़्राक की यह वर्गाकार काट लेविन के स्वतन्त्र चिन्तन में बाधा बन रही थी। वह कल्पना कर रहा था, सम्भवतः ग़लत ही, कि फ़्राक को उसके लिये ही इस तरह काटा गया है और इसलिये उसकी तरफ़ देखना उचित नहीं समझता था तथा उधर न देखने की कोशिश करता था। किन्तु यह महसूस कर रहा था कि केवल वही इसके लिये अपराधी है कि फ़्राक को ऐसे काटा गया है। लेविन को लग रहा था कि वह किसी को धोखा दे रहा है, कि उसे कुछ स्पष्ट करना चाहिये, लेकिन यह स्पष्ट करना किसी तरह भी सम्भव नहीं और इसलिये वह लगातार शर्मा रहा था, बेचैनी और अटपटापन महसूस कर रहा था। उसकी यह झेंप स्वियाज्स्की की सुन्दर साली को भी प्रभावित कर रही थी। किन्तु प्रतीत होता था कि गृह-स्वामिनी ऐसा अनुभव नहीं करती थी और जान-बूझकर उसे बातचीत में घसीटती थी।

"आप कहते हैं," गृह-स्वामिनी ने शुरू की हुई बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कहा, "कि मेरे पति को रूसी चीज़ों में दिलचस्पी नहीं हो सकती। इसके विपरीत वह विदेश में ख़ुश रहता है, मगर कभी भी इतना ख़ुश नहीं रहता, जितना यहां। यहां वह अपने को निजी वातावरण में अनुभव करता है। ढेरों काम हैं उसके पास और उसमें सभी चीज़ों में दिलचस्पी लेने का बड़ा गुण है। ओह, आपने हमारा स्कूल नहीं देखा?"

"देखा है ... इश्कपेचे की लताओं से ढका हुआ छोटा-सा घर न?"

"हां, यह नास्तिया का काम है," उसने बहन की ओर संकेत करते हुए कहा।

"आप ख़ुद वहां पढ़ाती हैं?" लेविन ने फ्राक की वर्गाकार काट के परे देखने की कोशिश करते हुए पूछा, किन्तु वह यह अनुभव किये बिना न रह सका कि उस दिशा में वह कहीं भी क्यों न देखे, काट उसे ज़रूर दिखायी देगी।

"हां, मैं ख़ुद पढ़ाती थी और पढ़ाती हूं, लेकिन हमारे यहां एक बहुत ही बढ़िया अध्यापिका भी है। हमने व्यायाम करवाना भी शुरू कर दिया है।"

"नहीं, शुक्रिया, मैं और चाय नहीं पीना चाहता," लेविन ने कहा और यह अनुभव करते हुए कि अशिष्टता के बावजूद यह बातचीत जारी नहीं रख सकता, वह झेंप से लाल होते हुए खड़ा हो गया। "मुझे बहुत ही दिलचस्प बातचीत सुनाई दे रही है," उसने इतना और जोड़ दिया और मेज़ के दूसरे सिरे पर चला गया, जहां दो ज़मींदारों के साथ गृह-स्वामी बैठा था। स्वियाज्स्की मेज़ की बग़ल में बैठा था, कोहनी टिके हाथ से प्याले को घुमा रहा था, दूसरे हाथ से दाढ़ी को मुट्ठी में समेटता था और उसे ऐसे नाक के पास ले जाकर मानो सूंघ रहा हो, फिर से नीचे छोड़ देता था। उसकी चमकती हुई काली आंखें पकी मूंछोंवाले तथा ग़ुस्से से भुनभुनाते हुए ज़मींदार पर जमी थीं और स्पष्टतः उसे उसकी बातों में मज़ा आ रहा था। ज़मींदार किसानों के बारे में शिकायतें कर रहा था। लेविन को यह बिल्कुल स्पष्ट था कि स्वियाज्स्की के पास ऐसा जवाब मौजूद है, जो उस ज़मींदार की लम्बी-चौड़ी बातों को फ़ौरन बेमानी बना सकता है, किन्तु अपनी स्थिति के कारण यह जवाब नहीं दे सकता और मज़े ले लेकर ज़मींदार की बातें सुन रहा है।

पकी मूंछोंवाला ज़मींदार स्पष्टतः भूदास-प्रथा का ज़ोरदार समर्थक, खेतीबारी के मामले में बड़ा उत्साही और गांव का पुराना रहनेवाला था। लेविन को उसकी पोशाक – पुराने ढंग के घिसे-फटे फ़ाककोट, जिसे वह स्पष्टतः पहनने का आदी नहीं था, उसकी बुद्धिमत्तापूर्ण तथा चढ़ी भौंहोंवाली आंखों, मंजी हुई रूसी भाषा, स्पष्टतः लम्बे अनुभव

से प्राप्त बात करने के अधिकारपूर्ण ढंग तथा बड़े, सुन्दर तथा संवलाये हाथों के हिलने-डुलने के अन्दाज़ में, जिनमें से एक की अनामिका में वह शादी की पुरानी अंगूठी पहने था, उसे इसके लक्षण दिखाई दिये।

(२७)

"जो कुछ व्यवस्थित किया गया है, अगर उसे छोड़ते हुए दुख न होता... बहुत मेहनत की गयी है... तो हाथ झटक देता, बेच डालता और निकोलाई इवानोविच की तरह चल देता 'सुन्दरी हेलेन' सुनने," ज़मींदार ने कहा, जिसके बुद्धिमत्तापूर्ण बुढ़ाये चेहरे पर मधुर मुस्कान चमक रही थी।

"लेकिन नहीं छोड़ रहे हैं न," स्वियाज्स्की ने कहा, "इसका मतलब है कि कुछ कारण हैं।"

"कारण एक है कि घर में रहता हूं, जो न ख़रीदा है और न किराये पर लिया है। इसके अलावा यह उम्मीद भी है कि कभी किसान समझदार हो जायेंगे। नहीं, अब तो मानिये या न मानिये – बस, शराब और बदमाशी ही चल रही है! ज़मीन को उन्होंने बार-बार बांट लिया है, न तो गाय है, न घोड़ा। किसान भूख से मर रहा होगा, उसे मज़दूरी पर रख लीजिये, वह तुम्हारा सब कुछ तबाह और चौपट कर डालेगा और इसके अलावा न्यायाधीश के सामने भी खींच ले जायेगा।"

"आप भी तो न्यायाधीश के पास शिकायत लेकर जा सकते हैं," स्वियाज्स्की ने कहा।

"मैं शिकायत करूंगा? किसी हालत में भी नहीं! ऐसी बातें होंगी कि शिकायत करने का अफ़सोस होगा! घोड़ों के फ़ार्म में क्या हुआ – पेशगी रक़म ली और चले गये। न्यायाधीश ने क्या किया? उन्हें मुक्त कर दिया। बस, सरकारी अदालत और मुखिया के बल-बूते पर ही सब कुछ चल रहा है। वह पुराने वक़्त की तरह उसकी अच्छी तरह ख़बर लेता है। अगर यह न हो तो सब कुछ छोड़-छाड़कर कहीं दूर भाग जाओ!"

ज़मींदार स्पष्टतः स्वियाज्स्की को चिढ़ा रहा था, मगर वह न

केवल बिगड़ नहीं रहा था, बल्कि, जैसा कि ज़ाहिर था, मज़ा ले रहा था।

"ऐसा कुछ किये बिना आख़िर हम भी तो अपनी खेतीबारी चला रहे हैं," उसने मुस्कराकर कहा। "मैं, लेविन और ये भी।"

स्वियाज़्स्की ने दूसरे ज़मींदार की तरफ़ इशारा किया।

"हां, मिख़ाईल पेत्रोविच की खेतीबारी चल रही है, मगर पूछिये तो कैसे? यह क्या युक्तियुक्त खेतीबारी है?" ज़मींदार ने कहा, जो स्पष्टतः "युक्तियुक्त" शब्द का बांकपन दिखा रहा था।

"मेरी खेतीबारी बहुत सीधी-सादी है," मिख़ाईल पेत्रोविच ने कहा। "शुक्र है भगवान का। मेरी खेतीबारी सिर्फ़ इतनी ही है कि पतझर के करों के लिये पैसे तैयार रहें। किसान लोग आते हैं, कहते हैं – बापू, माई-बाप, मदद करो! ये अपने लोग, अपने पड़ोसी किसान ही हैं, तरस आता है। उनकी मज़दूरी एक-तिहाई पेशगी दे देता हूं और कहता हूं: देखो, मैंने तुम्हारी मदद की है, अब तुम भी चाहे जई की बुवाई हो, चाहे घास या फ़सल की कटाई, मेरी मदद करना। इस तरह हम हर परिवार से मिलनेवाले श्रम के बारे में बात तय कर लेते हैं। यह सच है कि उनमें भी कुछ बेईमान निकल आते हैं।"

लेविन बुज़ुर्गों के इन पुराने तरीक़ों से बहुत पहले से परिचित था, उसने स्वियाज़्स्की से नज़रें मिलायीं, मिख़ाईल पेत्रोविच को टोका और पकी मूंछोंवाले ज़मींदार को सम्बोधित किया:

"तो आपका क्या विचार है?" उसने पूछा, "खेतीबारी को कैसे चलाना चाहिये?"

"मिख़ाईल पेत्रोविच की तरह ही – या फिर बटाई अथवा पट्टे पर किसानों को ज़मीन दे दो। ऐसा किया जा सकता है, मगर ऐसा करके हम राज्य की साझी दौलत को बरबाद करते हैं। जहां भूदासों के श्रम और अच्छे प्रबन्ध से ज़मीन मुझे नौ गुनी उपज देती थी, बटाई से सिर्फ़ तीन गुनी ही देती है। भूदासों की मुक्ति ने रूस को बरबाद कर डाला है!"

स्वियाज़्स्की ने मुस्कराती आंखों से लेविन की तरफ़ देखा और तनिक दिखाई देनेवाला उपहासपूर्ण संकेत भी किया। किन्तु लेविन को ज़मींदार के शब्द हास्यास्पद नहीं लगे। स्वियाज़्स्की को समझने की

तुलना में वह इन शब्दों को अधिक अच्छी तरह समझता था। ज़मींदार ने यह साबित करने के लिये कि भूदासों की मुक्ति से रूस कैसे बरबाद हो गया है, आगे और जो कुछ कहा लेविन को वह बहुत सही, अपने लिये नया और अकाट्य प्रतीत हुआ। ज़मींदार स्पष्टतः अपना ही विचार प्रकट कर रहा था, जैसा कि बहुत कम होता है। इसके अलावा यह विचार ऐसा नहीं था, जो काहिल दिमाग़ को किसी चीज़ में व्यस्त करने की इच्छा का परिणाम हो, बल्कि ऐसा विचार, जो उसके जीवन की परिस्थितियों की देन था, जिस पर उसने गांव के अपने एकान्त जीवन में विचार किया था, जिसे सभी पहलुओं से जांचा-परखा था।

"बात यह है कि हर प्रकार की प्रगति केवल शक्ति के उपयोग से ही सम्भव होती है," वह कह रहा था और स्पष्टतः यह दिखाना चाहता था कि उसने भी कुछ पढ़ा-पढ़ाया है। "पीटर प्रथम, महारानी येकातेरीना और ज़ार अलेक्सान्द्र के सुधारों को ले लीजिये। यूरोप के इतिहास पर ही नज़र डालिये। खेतीबारी की प्रगति के बारे में तो ख़ास तौर पर यह सही है। आलुओं को ही ले लीजिये – उनकी बुवाई भी हम पर ज़बर्दस्ती लादी गयी। लकड़ी के हल से भी तो हमेशा ज़मीन नहीं जोती जाती थी। उसका भी शायद मध्य युग में ज़बर्दस्ती इस्तेमाल शुरू करवाया गया। अब हमारे ज़माने में भूदास प्रथा के समय हम ज़मींदार लोग खेतीबारी के बेहतर तरीक़ों का उपयोग करते थे। अनाज सुखाने और मांडने के यन्त्रों, खाद डालने के तरीक़ों और तरह तरह के उपकरणों का उपयोग – सभी कुछ अपनी ताक़त के बल पर करते थे। शुरू में किसानों ने उनका विरोध और बाद में हमारे उदाहरण का अनुकरण किया। अब, भूदास-प्रथा की समाप्ति से हमारी ताक़त छीन ली गयी और हमारी खेतीबारी को, जो ऊंचे स्तर पर थी, नीचे, बहुत ही पिछड़े और आदिम स्तर पर आना पड़ेगा। मैं तो ऐसा ही समझता हूं।"

"लेकिन क्यों? अगर वह युक्तियुक्त ढंग की है, तो आप उजरती श्रम से उसे चला सकते हैं," स्वियाज्स्की ने कहा।

"अधिकार का ज़ोर नहीं रहा, जनाब। किसकी मदद से चलाऊंगा मैं खेतीबारी? मैं यह जानने की अनुमति चाहता हूं।"

"तो यह है श्रम-शक्ति, खेतीबारी का मुख्य तत्त्व," लेविन ने सोचा।

"मज़दूरों की मदद से।"

"मज़दूर लोग अच्छी तरह और अच्छे औज़ारों की मदद से काम नहीं करना चाहते। हमारा मज़दूर सिर्फ़ एक ही चीज़ जानता है– नशे में धुत्त हो जाना और पीकर वह सभी कुछ ख़राब कर डालना, जो उसे दिया जाता है। घोड़ों को बेवक़्त पानी पिलाकर मार डालेगा, अच्छे साज को तोड़ देगा, टायरवाले पहिये की जगह बिना टायर का ले आयेगा और बचे पैसों की शराब पी लेगा। अनाज मांडने के यन्त्र में काबला डाल देगा, ताकि उसे बिगाड़ दे। जो कुछ उसकी इच्छा के अनुसार नहीं होता, वह उसे फूटी आंखों नहीं सुहाता। इसीलिये खेतीबारी का स्तर नीचा हो गया है। ज़मीनें बेकार पड़ी हैं, उन पर झाड़-झंखाड़ उग आये हैं या उन्हें किसानों के बीच बांट दिया गया है और जहां करोड़ों पूलों में अनाज पैदा होता था, वहां अब लाखों में होता है। देश की कुल दौलत कम हो गयी। अगर यह सभी कुछ सोच-समझकर किया जाता, तो..."

और वह भूदासों की मुक्ति की अपनी वह योजना बताने लगा, जिसके अन्तर्गत ये झंझटें न पैदा होतीं।

लेविन को इसमें दिलचस्पी नहीं अनुभव हुई, किन्तु जब उसने अपनी बात ख़त्म कर ली, तो लेविन उसकी पहली प्रस्थापना की ओर लौटा और स्वियाज्स्की को सम्बोधित तथा इस बात की कोशिश करते हुए कि वह अपना गम्भीर मत प्रकट करे, कहा:

"यह बात कि खेतीबारी का स्तर नीचा हो रहा है और यह कि खेत-मज़दूरों के प्रति हमारे रवैये को ध्यान में रखते हुए लाभदायक तथा युक्तियुक्त खेती करना सम्भव नहीं, बिल्कुल सही है।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता," स्वियाज्स्की ने गम्भीरता से आपत्ति की। "मुझे तो केवल यही प्रतीत हो रहा है कि हम खेतीबारी का संचालन करना नहीं जानते और भूदास-प्रथा के समय हम जिस तरह की खेती कर रहे थे, उसका स्तर न केवल बहुत ऊंचा, बल्कि बहुत नीचा था। हमारे यहां न खेतीबारी की मशीनें हैं, न अच्छे घोड़े हैं, न अच्छा प्रबन्ध है और न हमें हिसाब-किताब ही रखना आता है। किसी भी भूस्वामी से पूछ लो, वह तुम्हें यह नहीं बता पायेगा कि क्या लाभदायक है और क्या नहीं।"

"मतलब यह कि इतालवी ढंग का बही-खाता रखा जाये," ज़मींदार ने व्यंग्यपूर्वक कहा। "किसी भी तरह का हिसाब-किताब क्यों न रखा जाये, मगर वे सब कुछ का सत्यानास ही कर देंगे, नफ़ा नहीं होगा।"

"सत्यानास क्यों कर देंगे? तुम्हारी मांडने की घटिया-सी रूसी मशीन तोड़ सकते हैं, मगर मेरी भाप की मशीन को नहीं तोड़ेंगे। रूसी घोड़े को, क्या कहते हैं उसे? पूंछ-घसीट नसल यानी जिसे पूंछ से घसीटकर चलाना पड़ता है, ख़राब कर सकते हैं, लेकिन फ़्लैंडर्स नसल के या कम से कम घोड़ा-गाड़ी में जुतनेवाले बड़े घोड़े ले आइये, उन्हें ख़राब नहीं कर सकेंगे। बाक़ी सभी चीज़ों के बारे में भी यही बात है। हमें अपने खेतीबारी के काम के स्तर को ऊपर उठाना चाहिये।"

"ऊपर उठाने के लिये हाथ-पल्ले कुछ हो भी तो, निकोलाई इवानोविच! आपको तो कोई फ़िक्र नहीं, मगर मैं बड़े बेटे को विश्वविद्यालय और छोटों को हाई स्कूल में पढ़ाने का ख़र्च उठाता हूं – मुझसे तो फ़्लैंडर्स नसल के घोड़े न ख़रीदे गये।"

"इसके लिये बैंक हैं।"

"ताकि जो कुछ थोड़ा-बहुत अपने पास है, उसकी भी नीलामी हो? नहीं, शुक्रिया आपका!"

"मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि खेतीबारी करने का स्तर और ऊपर उठाना चाहिये और ऐसा सम्भव भी है," लेविन बोला। "यह मेरा काम है, मेरे पास इसके लिये साधन भी हैं, मगर मैं कुछ भी नहीं कर पाया। नहीं जानता कि बैंक किसके लिये लाभदायक हैं। कम से कम मैंने तो खेतीबारी के जिस भी काम में पैसा लगाया, उसी में नुक़सान हुआ: पशुओं में – नुक़सान, मशीनों में – नुक़सान।"

"यह सोलह आने सही है," पकी मूंछोंवाले ज़मींदार ने बड़ी ख़ुशी से हंसते हुए इस बात की पुष्टि की।

"और मैं अकेला ही ऐसा नहीं हूं," लेविन कहता गया, "मैं युक्तियुक्त ढंग से खेतीबारी करनेवाले सभी भू-स्वामियों का हवाला दे सकता हूं। कुछ इने-गिने अपवादों को छोड़कर सभी घाटे में खेतीबारी का काम चला रहे हैं। तो आप ही बताइये कि क्या आपकी खेती मुनाफ़े में चल रही है?" लेविन ने पूछा और उसी क्षण स्वियाज्स्की की नज़र में उसे भय की वह क्षणिक झलक दिखाई दी, जो उसने तब

देखी थी, जब उसने स्वियाज्स्की के मस्तिष्क के मेहमानख़ाने से आगे जाना चाहा था।

कहना ही होगा कि लेविन ने यह सवाल पूछकर उचित काम नहीं किया था। गृह-स्वामिनी ने तो कुछ ही देर पहले चाय पीते समय उससे यह कहा था कि इस गर्मी में उन्होंने हिसाब-किताब के एक जर्मन माहिर को मास्को से बुलाया था, जिसने पांच सौ रूबल लेकर उनके हिसाब-किताब की जांच की थी और यह पाया था कि खेतीबारी से उनको तीन हज़ार से कुछ अधिक रूबलों का नुक़सान हुआ है। उसे सही रक़म याद नहीं थी, लेकिन जर्मन लेखापाल ने तो पाई-पाई तक का हिसाब जोड़ दिया था।

स्वियाज्स्की की खेती से नफ़े की चर्चा चलने पर पकी मूंछोंवाला ज़मींदार मुस्करा दिया। वह सम्भवतः यह जानता था कि उसके पड़ोसी और कुलीनों के मुखिया को क्या नफ़ा हो सकता है।

"सम्भव है, लाभ न होता हो," स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया। "यह केवल यही सिद्ध करता है कि या तो मैं बुरा प्रबन्धक हूं या लगान की वृद्धि के लिये पूंजी लगा रहा हूं।"

"ओह, लगान!" लेविन बुरी तरह चिल्ला उठा। "हो सकता है कि यूरोप में लगान हो, जहां ज़मीन उसपर लगाये गये श्रम से बेहतर हो गयी है, लेकिन हमारे यहां तो मेहनत करने से ज़मीन ख़राब होती है यानी जुताई-बुवाई से उसका उपजाऊपन कम किया जा रहा है। इसका मतलब हुआ कि लगान नहीं है।"

"लगान कैसे नहीं है? यह तो अर्थशास्त्र का एक नियम है।"

"तो हम नियम के बाहर हैं। लगान हमारे लिये कुछ भी स्पष्ट नहीं करता, बल्कि, इसके विपरीत, उलझा देता है। आप मुझे यह बतायें कि लगान का सिद्धान्त कैसे..."

"दही पीना पसन्द करेंगे? माशा, हमारे लिये यहां दही या झड़बेरियां भेज दो," उसने पत्नी को सम्बोधित किया। "इस साल झड़बेरियां काफ़ी देर तक मिल रही हैं।"

और स्वियाज्स्की बहुत ही अच्छे मूड में उठा तथा सम्भवतः यह मानते हुए कि बातचीत वहीं ख़त्म हो गयी है, जहां लेविन को लगा कि वह शुरू ही हो रही है, यहां से हट गया।

अपने साथ बहस करनेवाले व्यक्ति के चले जाने पर लेविन ने यह सिद्ध करते हुए ज़मींदार के साथ बातचीत जारी रखी कि सारी मुश्किल इसी बात से पैदा होती है कि हम अपने मज़दूरों के विशेष लक्षणों और आदतों को नहीं जानना चाहते। लेकिन ज़मींदार उन सभी लोगों की तरह, जो अपने मौलिक ढंग से एकान्त में सोचने-विचारने के आदी होते हैं, दूसरों के विचारों को कठिनाई से ग्रहण करता था और अपने विचारों पर अड़ा रहता था। वह यही रट लगाये रहा कि रूसी किसान जानवर है, उसे जानवरों की सी हरकत करना पसन्द है और उसका यह जानवरपन दूर करने के लिये क़ानूनी ताक़त की ज़रूरत है, जो नहीं रही, डंडे की ज़रूरत है, लेकिन हम ऐसे उदार हो गये कि हमने अचानक वकीलों और जेलख़ानों को हज़ारों सालों से चले आ रहे डंडे की जगह दे दी है। इन जेलों में सड़ते किसानों को बढ़िया शोरबा खिलाया जाता है और उनके लिये कई घन फुट हवा का प्रबन्ध किया जाता है।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं," लेविन ने फिर से विवाद के प्रश्न की ओर लौटने की कोशिश करते हुए कहा, "कि खेत-मज़दूरों के प्रति ऐसा रवैया नहीं अपनाया जा सकता, जिसके अनुसार काम उत्पादनशील हो सके?"

"रूसी किसानों के मामले में ऐसा कभी नहीं हो सकेगा! क़ानूनी ताक़त नहीं है," ज़मींदार ने जवाब दिया।

"नई परिस्थितियां कैसे पैदा की जा सकती हैं?" स्वियाज़्स्की ने दही खाने और सिगरेट पीने के बाद फिर से विवाद करनेवालों के पास आकर कहा। "श्रम-शक्ति के बारे में सभी तरह के सम्भव रवैये स्पष्ट हो चुके हैं और उनका अध्ययन किया जा चुका है," उसने कहा। "बर्बरता का अवशेष – पारस्परिक अवलम्ब वाला आदिम कम्यून अपने आप ही ख़त्म होता जा रहा है, भूदास-प्रथा को समाप्त किया जा चुका है, केवल स्वतन्त्र श्रम बाक़ी रह गया है, उसके रूप सुनिश्चित और बने-बनाये हैं तथा उन्हें स्वीकार करना चाहिये। खेत-मज़दूर, रोज़नदार और फ़ार्मर – आप इस घेरे से बाहर नहीं जा सकते।"

"लेकिन यूरोप इन रूपों से सन्तुष्ट नहीं है।"

"सन्तुष्ट नहीं है और नये रूपों की खोज कर रहा है। सम्भवतः वह खोज भी लेगा।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूं," लेविन ने जवाब दिया। "हम भी उनकी खोज क्यों न करें?"

"इसलिये कि यह तो रेलवे के निर्माण की विधियों का फिर से आविष्कार करने के समान बात होगी। वे विधियां सोच ली गयी हैं, हमारे सामने तैयार हैं।"

"लेकिन अगर वे हमारे अनुकूल नहीं बैठतीं, अगर वे बेतुकी हैं, तो?" लेविन ने प्रश्न किया।

और उसे स्वियाज्स्की की आंखों में फिर से डर की झलक मिली।

"हां, यह तो हम डींग हांकना चाहते हैं कि यूरोप जो कुछ ढूंढ़ रहा है, हमने उसे खोज लिया है! मैं यह सब कुछ जानता हूं, लेकिन, माफ़ी चाहता हूं, आप वह सब जानते हैं, जो श्रम-संगठन के सिलसिले में यूरोप में किया गया है?"

"नहीं, बहुत कम।"

"यूरोप के सबसे सुलझे हुए दिमाग़ अब इस सवाल से उलझ रहे हैं। शूल्त्से-डेलिच की प्रवृत्ति... फिर श्रम के प्रश्न पर यह ढेर सारा साहित्य, सबसे अधिक उदारवादी लासाल की धारा का... मिलहाज़ेन प्रणाली – यह तो ठोस रूप भी ले चुकी है, जैसा कि आप सम्भवतः जानते होंगे।"

"मुझे इसका कुछ आभास है, मगर बहुत ही धुंधला-सा।"

"नहीं, यह तो आप केवल ऐसे ही कह रहे हैं। आप यह सब मुझसे कुछ कम नहीं जानते हैं। ज़ाहिर है कि मैं समाजशास्त्र का प्रोफ़ेसर नहीं हूं, लेकिन मुझे इसमें दिलचस्पी महसूस हुई और अगर आपको भी सचमुच इसमें रुचि अनुभव होती है, तो आप भी इसका अध्ययन करें।"

"लेकिन वे लोग किस नतीजे पर पहुंचे हैं?"

"क्षमा चाहता हूं..."

ज़मींदार उठकर खड़े हो गये और अपने मस्तिष्क के मेहमानख़ाने के पीछे झांकने की लेविन की बुरी आदत को फिर से बीच में ही रोककर स्वियाज्स्की अपने मेहमानों को छोड़ने चला गया।

इस शाम को लेविन को महिलाओं के साथ असह्य ऊब अनुभव हुई। जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था, उसे यह विचार बहुत परेशान कर रहा था कि खेतीबारी के काम के बारे में वह जो असन्तोष अनुभव करता था, वह केवल उसी तक सीमित नहीं था, बल्कि सारे रूस में व्याप्त एक सामान्य रुख़ था और कोई ऐसी व्यवस्था करना, जिसके मुताबिक़ खेत-मज़दूर वैसे ही काम करेंगे जैसे कि वे उस किसान के यहां काम करते हैं, जहां लेविन रास्ते में ठहरा था, सपना नहीं, अपितु एक कार्यभार है, जिसका हल ढूंढ़ना ज़रूरी है। लेविन को लगा कि यह कार्यभार पूरा किया जा सकता है और उसे इसकी कोशिश करनी चाहिये।

उसने महिलाओं को शुभरात्रि की कामना की और यह वादा किया कि अगला पूरा दिन भी उन्हीं के यहां बितायेगा, ताकि घोड़े पर सवार होकर उनके साथ सरकारी जंगल में हुए एक दिलचस्प भूस्खलन को देखने जा सके। सोने से पहले वह गृह-स्वामी के कक्ष में मज़दूरों के प्रश्न से सम्बन्धित वे पुस्तकें लेने गया, जिनका स्वियाज़्स्की ने उसे पढ़ने का सुझाव दिया था। स्वियाज़्स्की का अध्ययन-कक्ष एक बहुत बड़ा कमरा था, जिसमें सभी ओर पुस्तकों से भरी अलमारियां रखी थीं और दो मेज़ें थीं। लिखने की एक बहुत बड़ी मेज़ तो कमरे के बीचोंबीच रखी थी और दूसरी गोल मेज़ पर विभिन्न भाषाओं में सितारे की शक्ल में लैम्प के चारों ओर पत्र-पत्रिकाओं के नवीनतम अंक सजे हुए थे। लिखने की मेज़ के क़रीब सुनहरे लेबल लगे दराज़ों वाला एक स्टैंड था, जहां सभी तरह की फाइलें रखी थीं।

स्वियाज़्स्की ने किताबें निकालीं और झूलनेवाली आराम कुर्सी में बैठ गया।

"क्या देख रहे हैं आप?" उसने लेविन से पूछा, जो गोल मेज़ के क़रीब रुककर पत्रिकाओं को उलट-पलट रहा था।

"अरे हां, इसमें एक बहुत दिलचस्प लेख है," स्वियाज़्स्की ने उस पत्रिका के बारे में कहा, जो लेविन हाथ में लिये था। "प्रतीत होता है," उसने रंग में आते हुए अपनी बात जारी रखी, "कि पोलैंड

के विभाजन के लिये मुख्यतः फ़्रेडरिक ज़िम्मेदार नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है ..."

और उसने अपनी विशिष्ट स्पष्टता के साथ संक्षिप्त रूप से इन नयी, बहुत महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प खोजों की चर्चा की। इसके बावजूद कि लेविन के दिल-दिमाग़ पर खेतीबारी के सुप्रबन्ध का प्रश्न छाया हुआ था, वह अपने मेज़बान की बातें सुनते हुए खुद से यह सवाल पूछ रहा था: "इसके मन में क्या चीज़ है? आखिर किसलिये, किसलिये उसे पोलैंड के विभाजन में रुचि है?" स्वियाज्स्की की बात ख़त्म होने पर लेविन ने बरबस ही यह पूछा: "तो क्या हुआ?" लेकिन हुआ कुछ भी नहीं था। केवल इतनी बात ही दिलचस्प थी – "ऐसा प्रतीत होता है।" लेकिन स्वियाज्स्की ने यह स्पष्ट नहीं किया और यह स्पष्ट करने की ज़रूरत भी नहीं समझी कि उसके लिये यह क्यों दिलचस्प था।

"मुझे उस चिड़चिड़े-से ज़मींदार में बड़ी रुचि अनुभव हुई," लेविन ने गहरी सांस लेकर कहा। "वह समझदार है और बहुत कुछ सच कह रहा था।"

"ओह, रहने दीजिये! वह ऐसे सभी लोगों की तरह दिल से भूदास-प्रथा का पक्का समर्थक है।"

"आप जिनके मुखिया हैं ..."

"हां, लेकिन मैं इनकी दूसरी दिशा में अगुवाई करता हूं," स्वियाज्स्की ने हंसते हुए कहा।

"मेरी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी की चीज़ यह है," लेविन ने कहा। "उसकी यह बात सही है कि हमारा कृषि-कार्य यानी हमारा युक्तियुक्त कृषि-संचालन सफल नहीं हो रहा, केवल सूदखोरी के ढंग की खेतीबारी, जैसी वह चुप्पे क़िस्म का ज़मींदार करता है, अथवा बहुत ही सीधे ढंग की खेती सिरे चढ़ती है। इसके लिये कौन दोषी है?"

"ज़ाहिर है कि हम खुद ही। इसके अलावा यह भी सही नहीं है कि हमारा काम नहीं चल रहा है। वासील्चिकोव के यहां तो चल रहा है।"

"घोड़ों का फ़ार्म ..."

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आपको हैरानी किस बात

से हो रही है। किसानों के भौतिक और नैतिक विकास का स्तर इतना नीचा है कि उन्हें सम्भवतः उन सभी चीज़ों का विरोध करना चाहिये, जो उनके लिये परायी हैं। यूरोप में युक्तियुक्त खेतीबारी इसलिये चल रही है कि किसान पढ़े-लिखे हैं। तो नतीजा यह निकलता है कि हमारे यहां किसानों को तालीम देनी चाहिये – बस, बात ख़त्म।"

"लेकिन किसानों को तालीम दी कैसे जाये?"

"किसानों को तालीम देने के लिये तीन चीज़ों की ज़रूरत है – स्कूल, स्कूल और स्कूल।"

"मगर आपने तो ख़ुद ही कहा है कि किसानों के भौतिक विकास का स्तर नीचा है। स्कूलों से भला कैसे मदद मिलेगी?"

"सुनिये, आप मुझे बीमार को दी जानेवाली सलाहोंवाले लतीफ़े की याद दिला रहे हैं। रोगी से कहा जाता है: 'आपको क़ब्ज़-कुशा दवा की आज़माइश करनी चाहिये।' 'कर चुका, मामला और बिगड़ गया।' 'जोंकें लगवाइये।' 'लगवा चुका – मामला और भी बिगड़ गया।' 'तो फिर भगवान की माला जपिये।' 'जप चुका – मामला और भी ज़्यादा बिगड़ गया।' हम दोनों का भी ऐसा ही हाल है। मैं कहता हूं अर्थशास्त्र – आप कहते हैं – मामला और बिगड़ जायेगा। मैं कहता हूं समाजवाद – आप कहते हैं – और भी बुरा। तालीम – वह और भी ज़्यादा बुरी रहेगी।"

"फिर भी स्कूल क्या मदद करेंगे?"

"किसानों में नयी ज़रूरतें पैदा कर दे देंगे।"

"यह बात कभी भी मेरी समझ में नहीं आई," लेविन ने गर्म होते हुए आपत्ति की। "किसानों को अपनी माली हालत बेहतर बनाने में स्कूल कैसे मदद करेंगे? आप कहते हैं कि स्कूल और तालीम उनमें नयी ज़रूरतें पैदा कर देंगे। यह तो और भी बुरा होगा, क्योंकि वे उन्हें पूरा करने में असमर्थ होंगे। जमा, बाक़ी और धार्मिक प्रश्नोत्तरी की जानकारी उन्हें अपनी माली हालत बेहतर बनाने में कैसे मदद देगी, यह मेरी समझ में कभी नहीं आया। तीन दिन पहले, शाम के वक़्त गोद के बच्चे के साथ एक देहाती औरत से मेरी मुलाक़ात हुई। मैंने उससे पूछा कि वह कहां जा रही है। उसने जवाब दिया – 'जादू-टोने करनेवाली बुढ़िया के पास से जा रही हूं, मेरे बेटे को ऐंठन और

रोने के दौरे पड़ते हैं, सो उसका इलाज करवाना है।' मैंने पूछा कि वह बुढ़िया इसका कैसे इलाज करती है। 'बच्चे को मुर्ग़ी के दरबे में बिठाकर कोई टोना करती है।'"

"लीजिये, आपने तो ख़ुद ही सब कुछ कह दिया! इसलिये कि वह बच्चे का इलाज करवाने को मुर्ग़ी के दरबे में न ले जाये, यह ज़रूरी है कि..." स्वियाज्स्की ने प्रफुल्ल मुस्कान के साथ कहा।

"ओह नहीं!" लेविन ने झल्लाते हुए कहा। "मेरे लिये यह इलाज किसानों का स्कूलों से इलाज करने के बराबर है। किसान ग़रीब और अनपढ़ हैं – यह तो हम वैसे ही अच्छी तरह देख रहे हैं, जैसे देहाती औरत बच्चे को बीमार देखती है, क्योंकि वह रोता-चिल्लाता है। लेकिन स्कूल ग़रीबी और निरक्षरता की मुसीबत को दूर करने में कैसे मदद दे सकते हैं, यह वैसे ही समझ में नहीं आता, जैसे यह कि मुर्ग़ी के दरबे में ले जाने से बच्चे की बीमारी कैसे दूर हो सकती है। जिस वजह से वह ग़रीब है, उस वजह को ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिये।"

"कम से कम इस मामले में तो आप स्पेंसर से, जिसे इतना अधिक नापसन्द करते हैं, सहमत हो गये हैं। वह भी यही कहता है कि शिक्षा जीवन की बड़ी ख़ुशहाली और आराम-सुविधा का, उसके शब्दों में, अक्सर नहाने-धोने का, परिणाम हो सकती है, मगर पढ़ने-लिखने की क्षमता का नहीं..."

"तो मैं बहुत ख़ुश हूं या, इसके विपरीत बहुत नाख़ुश हूं कि स्पेंसर के साथ सहमत हो गया। लेकिन यह बात तो मैं बहुत पहले से जानता हूं। स्कूलों से कुछ फ़ायदा नहीं होगा, बल्कि फ़ायदा होगा ऐसी आर्थिक व्यवस्था से, जिसके अन्तर्गत लोगों की माली हालत बेहतर होगी, उनके पास फ़ुरसत का ज़्यादा वक़्त होगा और तब – तब स्कूल भी हो जायेंगे।"

"फिर भी अब सारे यूरोप में स्कूल अनिवार्य हैं।"

"और आप ख़ुद तो कैसे स्पेंसर के साथ इस मामले में सहमत हैं?" लेविन ने पूछा।

किन्तु स्वियाज्स्की की आंखों में भय का भाव झलक उठा और उसने मुस्कराते हुए कहा :

"अरे, वह बच्चे के इलाज वाली बात बहुत बढ़िया थी! आपने अपने कानों से सुनी?"

लेविन ने महसूस किया कि इस व्यक्ति के जीवन और विचारों के बीच वह कभी सम्बन्ध-सूत्र नहीं खोज पायेगा। स्पष्टतः उसके लिये इस बात का कोई महत्त्व नहीं था कि उसका तर्क-वितर्क उसे किस नतीजे पर पहुंचाता है। उसे तो केवल तर्क-वितर्क की प्रक्रिया से ही मतलब था। उसका तर्क-वितर्क जब उसे अन्ध-गली में ले जाता था, तो उसे अच्छा नहीं लगता था। उसे यह पसन्द नहीं था और वह इससे बचता था तथा बातचीत को किसी सुखद और मधुर दिशा में मोड़ ले जाता था।

उस किसान द्वारा, जिसके यहां लेविन रास्ते में ठहरा था, मन पर छोड़ गये प्रभाव सहित, जो मानो आज के सभी प्रभावों और विचारों का आधार बना, आज की सारी छापों ने लेविन को बहुत बेचैन कर दिया। यह प्यारा स्वियाज़्स्की, जो केवल सामाजिक उपयोग के लिये अपने विचार संचित करता था और सम्भवतः अपने जीवन में लेविन के लिये रहस्य बने रहे किन्हीं दूसरे सिद्धान्तों से निर्देशित होता था, और फिर भी भीड़ का अंग होते हुए ऐसे विचारों से जन-मत को संचालित करता है, जिनमें खुद विश्वास नहीं रखता; वह झल्लाया हुआ ज़मींदार, जो जीवन की यातनाओं से निचोड़े गये अपने तर्क-वितर्क के मामले में बिल्कुल सही है, किन्तु एक पूरे वर्ग, सो भी रूस के सबसे अच्छे वर्ग के प्रति अपने क्रोध की दृष्टि से सही नहीं है; अपने कार्यकलापों से असन्तोष और इन सारी समस्याओं का कोई हल पा जाने की अस्पष्ट आशा – यह सभी कुछ आन्तरिक बेचैनी और समाधान की प्रत्याशा की निकटता में घुल-मिल गया।

अपने कमरे में अकेला रह जाने और स्प्रिंगदार गद्दे पर लेट जाने के बाद, जो हाथ या पांव को ज़रा हिलाने-डुलाने पर अचानक उछल पड़ता था, लेविन देर तक नहीं सो पाया। स्वियाज़्स्की ने बेशक बहुत कुछ कहा था, मगर उसकी एक भी बात में लेविन को दिलचस्पी महसूस नहीं हुई। हां, ज़मींदार की दलीलें ध्यान देने के योग्य थीं। लेविन को बरबस ही उसके सब शब्द याद हो आये और अपनी कल्पना में वह उसको दिये गये अपने जवाबों को सही करने लगा।

"हां, मुझे उससे कहना चाहिये था – आपका कहना है कि हमारा खेतीबारी का धंधा इसलिये सफल नहीं हो रहा है कि किसान को किसी भी तरह का सुधार फूटी आंखों नहीं सुहाता और यह कि ऐसे सुधारों को ज़बर्दस्ती लागू करना चाहिये। लेकिन अगर इन सुधारों के बिना खेतीबारी बिल्कुल ही न चलती हो, तब तो आपकी बात सही हो सकती थी। मगर वह चल रही है और केवल वहीं सफल हो रही है, जहां खेत-मज़दूर अपनी आदतों के मुताबिक़ काम करता है, जैसा कि आधे रास्तेवाले बूढ़े के यहां। खेतीबारी के सम्बन्ध में हमारा-तुम्हारा साझा असन्तोष यह सिद्ध करता है कि या तो हम या फिर खेत-मज़दूर इसके लिये दोषी हैं। हम श्रम-शक्ति की प्रकृति की ओर कोई ध्यान दिये बिना बहुत अर्से से अपने, यूरोपीय ढंग से ज़ोर लगा रहे हैं। आइये, श्रम-शक्ति को आदर्श श्रम-शक्ति न मानकर उसकी सहज प्रवृत्तियों के साथ रूसी दहक़ान मान लें और इसके मुताबिक़ अपनी खेतीबारी को शक्ल दें। आप कल्पना करें," मुझे उससे कहना चाहिये था, "कि आपके यहां खेतीबारी का धंधा वैसे ही चलता है, जैसे उस बूढ़े के यहां, कि आपने काम की सफलता में मज़दूरों की दिलचस्पी पैदा करने का साधन और सुधारों के मामले में बीच का वह रास्ता भी ढूंढ़ लिया है, जिसे वे स्वीकार करते हैं, तो आप भूमि का उपजाऊपन कम किये बिना पहले की तुलना में दुगुनी, तिगुनी फ़सल पायेंगे। उसे आधा-आधा बांट लीजिये, आधी फ़सल मज़दूरों को दे दीजिये और जो हिस्सा आपके पास रह जायेगा, वह पहले से ज़्यादा होगा और मज़दूरों को भी ज़्यादा उपज मिलेगी। ऐसा करने के लिये खेतीबारी के ढंग के स्तर को नीचे लाना चाहिये और उसकी सफलता में मज़दूरों की रुचि पैदा करनी चाहिये। ऐसा कैसे किया जाये – यह तफ़सीलों की बात है, किन्तु निश्चय ही ऐसा करना सम्भव है।"

इस विचार से लेविन बहुत उत्तेजित हो उठा। इस विचार को अमली शक्ल देने की तफ़सीलों पर चिन्तन करते हुए उसे आधी रात तक नींद नहीं आई। उसका अगले दिन यहां से जाने का कोई ख़्याल नहीं था, लेकिन अब उसने यह तय कर लिया कि तड़के ही घर को चल देगा। इसके अलावा फ़्राक पर नीची काट वाली यह साली भी उसके दिल में शर्म और कोई बुरी हरकत करने के लिये पश्चाताप का

सा भाव पैदा करती थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसे ज़रा भी देर किये बिना जाना चाहिये था, ख़रीफ़ के गेहूं की बुवाई के पहले किसानों के सामने अपनी योजना रखनी चाहिये थी, ताकि वे नये आधारों पर बुवाई करें। उसने खेतीबारी के अपने पहले ढंग को पूरी तरह से बदल डालने का निर्णय कर लिया था।

(२६)

लेविन की योजना को व्यावहारिक रूप देने में कई कठिनाइयां थीं। किन्तु उसने यथाशक्ति संघर्ष किया और यद्यपि जो चाहता था, वह प्राप्त नहीं कर सका, तथापि जितनी सफलता उसे मिली, उससे अपने को धोखा दिये बिना वह ऐसा विश्वास कर सकता था कि यह कार्य मेहनत करने के लायक़ है। एक सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि खेतीबारी का काम पहले से ही चल रहा था, कि सब कुछ रोककर फिर से सारा काम शुरू करना सम्भव नहीं था और चालू मशीन को सुधारने की ज़रूरत थी।

घर लौटकर उसी शाम को जब उसने कारिन्दे को अपनी योजनायें बतायीं, तो वह स्पष्ट सन्तोष के साथ लेविन के विचारों के उस भाग से सहमत हो गया, जो यह ज़ाहिर करता था कि अब तक जितना कुछ किया गया है वह सब बेतुका और घाटे का काम है। कारिन्दे ने कहा कि वह बहुत पहले से ऐसा कह रहा है, कि उसकी बात पर कोई कान नहीं देना चाहता था। जहां तक लेविन के इस सुझाव का सम्बन्ध था कि वह खेतीबारी के सारे काम में मज़दूरों के साथ हिस्सेदार के रूप में भाग ले, तो कारिन्दे ने इस सिलसिले में केवल बड़ी उदासीनता दिखाई तथा कोई निश्चित राय ज़ाहिर नहीं की, बल्कि उसी समय अगले दिन रई के बाक़ी पूले ले जाने और दोहरी जुताई के लिये लोगों को भेजने की चर्चा करने लगा। चुनांचे लेविन ने महसूस किया कि इस वक़्त उसे उसकी योजना के बारे में सोचने की फ़ुरसत नहीं है।

किसानों के साथ इस बात की चर्चा करने और नयी शर्तों पर उन्हें खेती के लिये ज़मीन देने का सुझाव प्रस्तुत करने पर उसे इसी मुख्य कठिनाई से दो-चार होना पड़ा कि वे चालू काम में बहुत अधिक

व्यस्त थे और उन्हें इस सुझाव के नफ़े-नुक़सान के बारे में सोचने का तनिक अवकाश नहीं था।

भोला-भाला किसान इवान तो मानो लेविन के सुझाव को पूरी तरह समझ गया कि वह पशु-पालन से होनेवाले नफ़े में अपने परिवार सहित भाग पा सकेगा और उसने इसका पूरा समर्थन किया। किन्तु जब लेविन उसे भावी लाभों के बारे में समझाने लगा, तो इवान के चेहरे पर घबराहट झलक उठी और उसने अफ़सोस ज़ाहिर किया कि उसकी पूरी बात नहीं सुन सकता। वह कोई ऐसा काम ढूंढ़ लेता था, जिसे टालना मुमकिन नहीं होता था – पांचे से घास को स्टाल से बाहर फेंकने लगता या नांद में पानी भरने अथवा गोबर साफ़ करने लगता।

किसानों का यह दृढ़ विश्वास दूसरी कठिनाई था कि उन्हें अधिक से अधिक लूटने-निचोड़ने के अतिरिक्त ज़मींदार का और कोई उद्देश्य हो ही नहीं सकता। उन्हें इस बात का पक्का यक़ीन था कि उसका असली उद्देश्य (वह उनसे चाहे कुछ भी क्यों न कहे) हमेशा वह होगा, जो वह उनसे नहीं कहेगा। वे ख़ुद अपने विचार प्रकट करते हुए बहुत कुछ कहते थे, लेकिन कभी वह नहीं बताते थे, जो उनका असली उद्देश्य होता था। इसके अलावा (लेविन अनुभव करता था कि चिड़चिड़ा ज़मींदार सही था) किसान किसी भी तरह के समझौते के लिये पहली और अनिवार्य शर्त यह पेश करते थे कि उन्हें खेतीबारी के किसी भी तरह के नये तरीक़ों और नये उपकरणों-यन्त्रों के उपयोग के लिये विवश न किया जाये। वे इस बात से सहमत थे कि लोहे के हल से ज़्यादा अच्छी जुताई होती है, कि द्रुत-जुताई-यन्त्र अधिक सफलतापूर्वक काम करता है, किन्तु इस बात के हज़ारों बहाने ढूंढ़ निकालते थे कि वे उनका उपयोग क्यों नहीं कर सकते। यद्यपि लेविन को यह विश्वास हो चुका था कि खेतीबारी के ढंग का स्तर नीचा करना होगा, तथापि उसे उन सुधारों से इन्कार करते हुए अफ़सोस होता था, जिनका लाभ इतना स्पष्ट था। किन्तु इन कठिनाइयों के बावजूद उसने अपने मन की बात पूरी की और पतझर आते न आते मामला ढंग से चल पड़ा या कम से कम उसे ऐसा प्रतीत हुआ।

शुरू में लेविन ने सारा फ़ार्म, जैसे वह था, वैसे ही किसानों,

खेत-मज़दूरों और कारिन्दे को नयी साझी शर्तों पर देना चाहा। किन्तु शीघ्र ही उसे यह विश्वास हो गया कि ऐसा सम्भव नहीं और उसने उसे विभागों में बांटने का निर्णय किया। डेयरी, बाग़, सब्ज़ियों का बगीचा, चरागाह और खेती की ज़मीनें – इन सबको कई भागों में बांट देना और हर भाग की एक अलग मद होनी चाहिये थी। भोले-भाले पशु-पालक इवान ने, जो, जैसा कि लेविन को प्रतीत होता था, सबसे ज़्यादा अच्छी तरह उसकी योजना को समझ गया था, मुख्यतः अपने ही परिवार के लोगों को मिलाकर पशु-पालन का संगठन बना लिया और इस धंधे का हिस्सेदार बन गया। दूर की ज़मीन, जो आठ साल से बंजर पड़ी रही थी, समझदार बढ़ई फ़्योदोर रेज़ुनोव की मदद से छः किसान-परिवारों ने नये साझे आधारों पर खेती करने के लिये ले ली और किसान शुरायेव ने इन्हीं शर्तों पर सब्ज़ियों के सभी बगीचे ले लिये। बाक़ी सब कुछ पुराने ढंग से ही रहा, लेकिन ये तीन विभाग नयी प्रणाली के आरम्भ के द्योतक थे और लेविन इसमें पूरी दिलचस्पी लेता था।

यह सही है कि पशु-पालन का काम अभी तक पहले से कुछ बेहतर नहीं चल रहा था और इवान गउओं के लिये गर्म गोशाला तथा ताज़ा क्रीम से मक्खन बनाने का कड़ा विरोध करता था। उसका कहना था कि ठण्डी जगह पर गाय के लिये कम चारे की ज़रूरत पड़ती है और खट्टी क्रीम से ज़्यादा अच्छा मक्खन बनता है। वह पहले की तरह ही वेतन मांगता और इस बात में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं लेता था कि उसे जो पैसे दिये जाते थे, वे वेतन नहीं, बल्कि भावी नफ़े के आधार पर पेशगी होते थे।

यह सही है कि फ़्योदोर रेज़ुनोव के दल ने लोहे के हलों से ज़मीन को दो बार नहीं जोता, जैसा कि तय किया गया था, और इसके लिये उन्होंने वक़्त कम होने का बहाना पेश किया। यह सही है कि इस दल के किसान बेशक नये आधारों पर खेती करने को राज़ी हुए थे, फिर भी वे इस ज़मीन को साझी न कहकर पट्टे पर ली गयी कहते और इस दल के किसानों तथा ख़ुद रेज़ुनोव ने अनेक बार लेविन से कहा: "आप ज़मीन का लगान ले लेते, तो आपको भी चैन रहता और हम अपने को ज़्यादा आज़ाद महसूस करते।" इसके अलावा ये किसान

तरह-तरह के बहाने बनाकर इस ज़मीन पर पशुशाला और खत्ती बनाने का काम, जो उनके साथ तय किया गया था, टाल देते और इसे जाड़े तक लटकाते चले गये।

यह सही है कि शुरायेव ने सब्ज़ियों के जो बगीचे लिये थे, उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में किसानों को किराये पर देना चाहा। उसने स्पष्टतः उन शर्तों को, जिन पर ज़मीन दी गयी थी, बिल्कुल ग़लत, लगता था कि जान-बुझकर ग़लत ढंग से समझा था।

यह सही है कि किसानों से बातचीत करते और उन्हें धंधे के सभी लाभ समझाते हुए लेविन अक्सर यह महसूस करता था कि किसान उसकी आवाज़ के उतार-चढ़ाव को ही सुन रहे हैं और यक़ीनी तौर पर यह जानते हैं कि वह चाहे कुछ भी क्यों न कहे, वे उसके झांसे में आनेवाले नहीं हैं। सबसे ज़्यादा समझदार किसान रेज़ुनोव से बात करते हुए वह विशेषतः ऐसा अनुभव करता था। उसे रेज़ुनोव की आंखों में वह चमक दिखाई देती, जो लेविन पर व्यंग्य-सा करती होती और साथ ही यह दृढ़ विश्वास प्रकट करती कि अगर कोई धोखे के इस जाल में फंसेगा, तो वह रेज़ुनोव नहीं होगा।

इन सब चीज़ों के बावजूद लेविन को लग रहा था कि काम आगे बढ़ रहा है और कड़ाई से हिसाब-किताब रखते हुए तथा अपनी बात पर डटे रहकर वह उन्हें इस नये प्रबन्ध के भावी लाभ स्पष्ट कर देगा और तब काम अपने आप ही चल निकलेगा।

इन कामों और उसके पास बच रहे खेतीबारी के काम और साथ ही अध्ययन-कक्ष में अपनी पुस्तक पर किये जानेवाले कार्य ने लेविन को गर्मी भर इतना व्यस्त रखा कि वह शिकार के लिये लगभग गया ही नहीं। अगस्त के अन्त में ओब्लोन्स्की परिवार का एक नौकर ज़ीन वापस लाया और उसी से लेविन को यह पता चला कि वे लोग मास्को वापस चले गये हैं। उसने अनुभव किया कि डौली के पत्र का उत्तर न देकर, अपनी इस अशिष्टता से, जिसको वह शर्म से लाल हुए बिना याद नहीं कर सकता था, उसने अपना मामला पूरी तरह चौपट कर लिया है और वह अब कभी उनके यहां नहीं जायेगा। स्वियाज्स्की परिवार के साथ भी उसने ऐसा ही व्यवहार किया था, उनसे विदा लिये बिना ही वहां से चला आया था। लेकिन उनके यहां भी वह कभी नहीं

जायेगा। उसे अब इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। अपने फ़ार्म को नये ढंग से व्यवस्थित करने के काम में उसे इतनी अधिक दिलचस्पी महसूस हो रही थी, जितनी कभी, किसी चीज़ में नहीं हुई थी। उसने स्वियाज्स्की द्वारा दी गयी किताबों को, और उसके पास जो किताबें नहीं थीं, उन्हें मंगवाकर पढ़ा, राजनीतिक अर्थशास्त्र की और समाजवादी किताबों को पढ़ा तथा, जैसी कि आशा थी, उसे उनमें कुछ भी ऐसा नहीं मिला, जो उसके काम से सम्बन्ध रखता हो। राजनीतिक अर्थशास्त्र की किताबों में, उदाहरणार्थ मिल्ल की किताबों में, जिन्हें उसने बड़े जोश के साथ यह आशा करते हुए सबसे पहले पढ़ा कि किसी भी क्षण अपने सामने प्रस्तुत समस्याओं का समाधान पा जायेगा, उसे यूरोपीय खेतीबारी की स्थिति से उद्भूत नियम ही मिले। लेकिन यह बात किसी भी तरह उसकी समझ में नहीं आई कि ये नियम, जो रूस पर लागू नहीं होते थे, सबके लिये सामान्य क्यों हैं। समाजवादी पुस्तकों में भी उसे ऐसा ही नज़र आया। वे या तो सुन्दर कल्पनायें थीं, जिन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता था और जिनकी ओर वह विद्यार्थी-जीवन में आकृष्ट हुआ था, या फिर यूरोप में विद्यमान स्थिति को, जो रूसी खेतीबारी की स्थिति से बिल्कुल भिन्न थी, सुधारने अथवा उसमें पैबन्द लगाने का प्रयत्न करती थीं। राजनीतिक अर्थशास्त्र यह कहता था कि जिन नियमों के अनुसार यूरोप का धन बढ़ा है और बढ़ रहा है, उन नियमों का सार व्यापक और सन्देहहीन है। समाजवादी शिक्षा यह कहती थी कि इन नियमों के अनुसार विकास विनाश की ओर ले जाता है। दोनों में से कोई भी तो न केवल इस बात का उत्तर, बल्कि यह संकेत तक नहीं देता था कि वह, लेविन, और रूस के सभी किसान तथा भूस्वामी अपने करोड़ों हाथों और हेक्टरों का क्या करें, ताकि वे देश की सामान्य समृद्धि के लिये अधिकतम उत्पादनशील बन सकें।

अब जब उसने यह काम करने का बीड़ा उठा ही लिया था, तो उसने इस विषय से सम्बन्धित सारी सामग्री को बहुत मन लगाकर पढ़ा और पतझर में विदेश जाकर वहां इस सिलसिले में और बहुत कुछ पढ़ने का इरादा बनाया, ताकि इस मामले में उसके साथ वह न हो, जो अक्सर दूसरे मामलों में हुआ था। कई बार ऐसा हुआ था कि

अपने साथ बात करनेवाले के विचारों को वह समझने और अपने विचार प्रकट ही करने लगता था कि अचानक उससे कहा जाता था: "और काउफ़मान, और जोन्स, और द्यूबुआ, और मिचेली? आपने इनको नहीं पढ़ा है। पढ़िये – इन्होंने इस विषय का अच्छी तरह विवेचन किया है।"

लेविन को अब यह बिल्कुल स्पष्ट था कि काउफ़मान और मिचेली उसे कुछ भी नहीं बता सकते। उसे क्या चाहिये, वह यह जानता था। वह देख रहा था कि रूस में बढ़िया ज़मीनें हैं, बढ़िया श्रमिक हैं और कुछ हालतों में, जैसे कि आधे रास्तेवाले किसान के यहां, ज़मीन और श्रमिक बहुत अधिक पैदावार देते हैं, किन्तु अधिकतर स्थितियों में, जब यूरोपीय ढंग से पूंजी लगायी जाती है, कम पैदावार होती है, और ऐसा केवल इसलिये होता है कि मज़दूर लोग अपने स्वाभाविक ढंग से काम करना चाहते हैं और अच्छा काम करते हैं, कि उनका विरोध संयोगवश नहीं, बल्कि स्थायी है और उसकी जड़ें किसानों के चरित्र में निहित हैं। वह सोच रहा था कि रूसी लोग, जिनके भाग्य में ख़ाली पड़ी हुई विस्तृत भूमि को सजग रूप से जोतना-बोना बदा था, उस समय तक उन ज़रूरी तरीक़ों से चिपके रहे, जब तक कि यह काम पूरा नहीं हो गया और खेतीबारी के ये तरीक़े इतने बुरे नहीं हैं, जितने कि आम तौर पर समझे जाते हैं। वह सैद्धान्तिक रूप से अपनी पुस्तक और अमली तौर पर अपनी कृषि-व्यवस्था से यह सिद्ध करना चाहता था।

(३०)

सितम्बर के अन्त में दूर की ज़मीन पर, जो किसानों के दल को साझी खेती के लिये दी गयी थी, पशुशाला बनाने के लिये लकड़ी पहुंच गयी और मक्खन बेचकर नफ़ा बांट दिया गया। फ़ार्म पर व्यवहारिक रूप से बहुत बढ़िया काम चल रहा था या कम से कम लेविन को ऐसा लग रहा था। इस सारे काम को सैद्धान्तिक रूप से स्पष्ट तथा अपनी रचना को समाप्त करने के लिये, जो लेविन की कल्पना की उड़ानों के अनुसार राजनीतिक अर्थशास्त्र में न केवल क्रान्ति ही

करेगी, बल्कि इस विज्ञान को पूरी तरह नष्ट करके एक नये – ज़मीन के प्रति किसानों के रवैये के – विज्ञान की नींव डालेगी, विदेश जाकर इस दिशा में किये गये सारे कार्य का अध्ययन तथा इस बात का विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त करना ज़रूरी था कि वहां जो कुछ किया गया है, वह ऐसा नहीं है, जिसकी ज़रूरत है। लेविन केवल गेहूं के बेचे जाने की राह देख रहा था, ताकि पैसे मिल जायें और तब वह विदेश चला जायेगा। किन्तु बारिश शुरू हो गयी, जिसने खेत में रह गयी फ़सल और आलुओं को नहीं बटोरने दिया, सभी काम-काज ठप्प कर दिये और गेहूं का बेचा जाना भी असम्भव बना दिया। रास्तों पर अगम्य कीचड़ था, दो चक्कियां पानी की बाढ़ में बह गयीं और मौसम अधिकाधिक ख़राब होता जा रहा था।

३० सितम्बर को सुबह सूरज निकल आया और अच्छे मौसम की उम्मीद करते हुए लेविन पूरे मन से विदेश जाने की तैयारी करने लगा। उसने गेहूं को बोरियों में भर देने का आदेश दिया, कारिन्दे को पैसे लाने के लिये व्यापारी के पास भेजा और ख़ुद घोड़ा-गाड़ी में बैठकर विदेश जाने के पहले फ़ार्म-सम्बन्धी अन्तिम हिदायतें देने चला गया।

सभी काम-काज निपटाकर और जल-धाराओं से तर होकर, जो कभी उसके चमड़े के कोट से गर्दन पर बह आती थीं और कभी ऊंचे बूटों में, किन्तु बहुत ख़ुश और भावनाओं से उमगता हुआ लेविन शाम को घर लौटा। शाम को मौसम और भी ज़्यादा ख़राब हो गया, पूरी तरह भीगी और कानों तथा सिर को झटकती हुई घोड़ी पर मोटी तथा सख़्त बर्फ़ की बौछार ऐसे चोट करती थी कि वह टेढ़ी होकर चल रही थी। किन्तु हुड के नीचे लेविन मज़े में था और वह ख़ुशी से अपने इर्द-गिर्द कभी पहियों की लीकों पर भागी जाती जल-धाराओं, कभी पातहीन शाखाओं पर लटकती पानी की बूंदों, कभी पुल के तख़्तों पर अभी तक न पिघली सख़्त बर्फ़ के सफ़ेद धब्बों और कभी निपत्ते एल्म वृक्ष के गिर्द गिरे हुए रसीले और अभी तक चिकने पत्तों की मोटी तह की ओर देखता। इर्द-गिर्द की प्रकृति के उदासी में डूबे होने के बावजूद वह अपने को विशेषतः उमंग में अनुभव कर रहा था। दूर के गांव में किसानों से हुई बातचीत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे

अपने सम्बन्धों के अभ्यस्त होने लगे हैं। बूढ़े रखवाले ने, जिसके यहां लेविन अपने कपड़े सुखाने के लिये गया, स्पष्टत: लेविन की योजना का समर्थन किया और अपनी ही इच्छा से पशु ख़रीदने के एक साझे कार्य में भाग लेने को कहा।

"मुझे बस, दृढ़ता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना चाहिये और मैं अपने उद्देश्य में सफल हो जाऊंगा," लेविन सोच रहा था, "और काम तथा यत्न करने में कोई तुक है। यह मेरा निजी मामला नहीं, बल्कि यहां सामान्य कल्याण का सवाल है। खेतीबारी का सारा काम और मुख्यत: सारी जनता की स्थिति में आमूल परिवर्तन होना चाहिये। ग़रीबी की जगह – सामान्य समृद्धि, ख़ुशहाली; शत्रुता की जगह – सहमति और हितों का ऐक्य। थोड़े में, रक्तहीन क्रान्ति, किन्तु महानतम क्रान्ति, शुरू में हमारे छोटे-से ज़िले, फिर गुबेर्निया, फिर रूस और सारी दुनिया में। कारण कि न्यायपूर्ण विचार फलप्रद हुए बिना नहीं रह सकता। हां, यह वह लक्ष्य है, जिसके लिये काम करने में कोई तुक है। यह कि मैं, कोस्त्या लेविन, वही व्यक्ति इसको पूरा कर रहा हूं, जो काली टाई लगाकर बॉल में गया था और कीटी श्चेर्बात्स्काया ने जिसका विवाह-प्रस्ताव ठुकरा दिया था तथा जो स्वयं अपनी दृष्टि में ऐसा दयनीय और तुच्छ बन गया था – यह सब कुछ भी सिद्ध नहीं करता। मुझे विश्वास है कि अपने बारे में याद करते हुए फ़्रैंकलिन ने भी ख़ुद को ऐसा ही तुच्छ अनुभव किया होगा और उसे भी अपने पर ऐसे ही भरोसा नहीं हुआ होगा। किन्तु इससे कुछ नहीं सिद्ध होता। ज़रूर उसकी भी कोई अपनी अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना रही होगी, जिसे वह अपनी योजनायें बताता होगा।"

ऐसे विचारों में डूबा हुआ लेविन अंधेरा होने पर घर लौटा।

व्यापारी के पास गया हुआ कारिन्दा गेहूं के मूल्य का एक भाग लेकर लौट आया था। बूढ़े रखवाले के साथ मामला तय कर लिया गया और कारिन्दे को रास्ते में यह पता चला कि सभी जगह फ़सलें खेतों में खड़ी रह गयीं और इसलिये दूसरों की तुलना में खेतों में पड़े हुए अपने १६० पूले कोई महत्त्व नहीं रखते थे।

शाम का भोजन करने के बाद लेविन हर दिन की तरह किताब लेकर आरामकुर्सी में बैठ गया और उसे पढ़ते हुए पुस्तक के सम्बन्ध

में अपनी कुछ ही समय बाद की विदेश-यात्रा के बारे में भी सोचता रहा। अब उसे अपने काम का सारा महत्त्व विशेष स्पष्टता से दिखाई दे रहा था और उसके विचारों को अभिव्यक्त करनेवाले पूरे के पूरे पैरे उसके दिमाग़ में अपने आप बनते जा रहे थे। "मुझे इन्हें लिख लेना चाहिये," उसने सोचा। "इनसे संक्षिप्त भूमिका बनानी चाहिये, जिसे मैं पहले अनावश्यक समझता था।" वह लिखने की मेज़ पर जाने के लिये उठकर खड़ा हो गया और उसके पैरों के पास लेटी हुई लास्का भी अंगड़ाई लेकर खड़ी हो गयी तथा उसने लेविन की ओर ऐसे देखा मानो पूछ रही हो कि किधर जाऊं। किन्तु उसे लिखने का मौक़ा नहीं मिला, क्योंकि दल-मुखिया आ गये और लेविन उनके पास बैठक में चला गया।

मुखियों को हिदायतें देने यानी अगले दिन के सभी कामों का प्रबन्ध करने और उन सभी किसानों से मिलने के बाद, जो काम-काज के सिलसिले में उसके पास आये थे, लेविन अपने अध्ययन-कक्ष में जाकर काम करने लगा। लास्का मेज़ के नीचे लेट गयी और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना मोज़ा बुनते हुए अपनी जगह पर बैठ गयी।

कुछ समय तक लिखने के बाद लेविन को अचानक असाधारण सजीवता के साथ कीटी, उसके इन्कार और अन्तिम भेंट की याद हो आई। वह उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

"बेकार ऊबते रहने में क्या रखा है?" अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने उससे कहा। "किसलिये घर में बैठे हैं? जब सारी तैयारी कर ही ली है, तो जाइये खनिज-जल के किसी स्वस्थ्य-नगर में।"

"मैं परसों जा रहा हूं, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना। इसके पहले काम-काज समाप्त करना चाहिये।"

"क्या काम-काज समाप्त करना है आपको! योंही क्या कुछ कम किया है आपने किसानों के भले के लिये! वे तो यह कहते हैं – आपके मालिक को इसके लिये ज़ार से कुछ लाभ प्राप्त हो जायेगा। और अजीब बात है कि आप किसानों के लिये परेशान हो रहे हैं।"

"मैं उनके लिये नहीं, अपने लिये ऐसा करता हूं।"

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना खेतीबारी के सम्बन्ध में लेविन की योजनाओं की सभी तफ़सीलें जानती थी। लेविन सभी बारीकियों के साथ अक्सर

उसके सामने अपने विचार रखता था, बहुत बार उससे बहस करता था और उसके स्पष्टीकरणों से सहमत नहीं होता था। किन्तु इस समय लेविन ने जो कुछ कहा, उसने उसका बिल्कुल दूसरा ही मतलब समझा।

"बात साफ़ है कि अपनी आत्मा के बारे में तो आदमी को सबसे ज़्यादा सोचना ही चाहिये," उसने उसांस छोड़ते हुए कहा। "पारफ़ेन देनीसिच को ही ले लीजिये। वह तो पढ़ना-लिखना भी नहीं जानता, लेकिन उसके जैसी मौत तो भगवान सभी को दें," उसने कुछ ही समय पहले मरनेवाले एक नौकर के बारे में कहा। "पवित्र जल पिलाया और ढंग से अन्तिम संस्कार किया।"

"मैं यह बात नहीं कर रहा हूं," लेविन बोला। "मैं यह कह रहा हूं कि मैं अपने लाभ के लिये यह सब करता हूं। किसान अगर बेहतर काम करते हैं, तो मुझे ज़्यादा फ़ायदा होता है।"

"आप चाहे कुछ भी क्यों न करते रहें, अगर किसान काहिल है, तो कुछ भी नहीं करेगा-धरेगा। अगर उसका कोई धर्म-ईमान है, तो काम करेगा, नहीं तो किसी के किये कुछ भी नहीं होगा।"

"आप ख़ुद ही यह कहती हैं कि इवान पशुओं की ज़्यादा अच्छी तरह से देखभाल करने लगा है।"

"मैं तो यही कहना चाहती हूं," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने स्पष्टतः संयोगवश नहीं, बल्कि विचार-शृंखला का कड़ा अनुकरण करते हुए उत्तर दिया, "आपको शादी करनी चाहिये। यही असली बात है!"

लेविन ख़ुद जिस चीज़ के बारे में अभी कुछ देर पहले सोचता रहा था, अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना द्वारा उसी की याद दिलाये जाने पर उसे रंज हुआ और उसके दिल को ठेस लगी। लेविन ने नाक-भौंह सिकोड़ ली, फिर से अपना काम करने बैठ गया और इस काम के महत्त्व के बारे में उसने जो कुछ सोचा था, उसे मन ही मन दोहराया। कभी-कभार ही उसे ख़ामोशी में अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की सिलाइयों की आवाज़ सुनाई देती और जो वह याद नहीं करना चाहता था, उसी को याद करके फिर से उसके माथे पर बल पड़ गये।

नौ बजे घोड़ा-गाड़ी की घंटियों की टनटनाहट और कीचड़ में पहियों की दबी-घुटी आवाज़ सुनाई दी।

"लीजिये, आपके यहां मेहमान आ गये, अब ऊब महसूस नहीं

होगी," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने उठते और दरवाज़े की ओर जाते हुए कहा। किन्तु लेविन उससे आगे निकल गया। उसका काम अब आगे नहीं बढ़ रहा था और वह किसी भी मेहमान के आने पर ख़ुश था।

(३१)

भागते हुए आधी सीढ़ियां उतर जाने पर लेविन को बाहरी बैठक में खांसी की जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी। किन्तु अपने पैरों की आवाज़ के कारण उसे वह साफ़ तौर पर सुनाई नहीं दी और उसे यह आशा थी कि उससे भूल हुई है। कुछ क्षण बाद उसे लम्बी और हड़ीली आकृति दिखाई दी और ऐसा प्रतीत हुआ कि अब अपने को धोखा देना मुमकिन नहीं था, फिर भी उसे आशा बनी रही कि वह भूल कर रहा और फ़र का कोट उतारने तथा खांसने वाला यह लम्बा व्यक्ति उसका भाई निकोलाई नहीं है।

लेविन अपने भाई को प्यार करता था, मगर उसकी संगत हमेशा एक यातना होती थी। इस समय, जब लेविन अपने दिमाग़ में आये विचारों और अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना द्वारा उसी बात के याद दिलाये जाने के प्रभाव में अस्पष्ट तथा उलझी-उलझायी मानसिक स्थिति में था, भाई के साथ होनेवाली भेंट विशेषतः बोझिल प्रतीत हो रही थी। किसी प्रफुल्ल, स्वस्थ और पराये-से मेहमान की जगह, जो, जैसी कि उसने आशा की थी, उसकी इस मानसिक अस्पष्टता की स्थिति से किसी दूसरी तरफ़ उसका ध्यान मोड़ सकेगा, उसे अपने भाई से मिलना होगा, जो उसकी रग-रग को पहचानता है, जो उसकी आत्मा की गहराई में छिपे भावों को भी अच्छी तरह जानता है और जो उसे उन्हें प्रकट करने को विवश कर देगा। वह ऐसा नहीं चाहता था।

मन में ऐसी बुरी भावना आने के लिये स्वयं अपने पर झल्लाता लेविन भगता हुआ ड्योढ़ी में गया। भाई को निकट से देखते ही व्यक्तिगत निराशा का यह भाव फ़ौरन ग़ायब हो गया और दया के भाव ने उसकी जगह ले ली। अपने दुबलेपन और रोग के कारण भाई निकोलाई बेशक पहले भी भयानक लगता था, मगर अब तो वह और हाड़-

हड़ीला और रोग-ग्रस्त दिख रहा था। वह तो त्वचा से ढका हुआ हड्डियों का ढांचा मात्र था।

अपनी लम्बी, दुबली-पतली गर्दन को झटकते और उस पर से मफ़लर उतारते तथा अजीब, दयनीय ढंग से मुस्कराते हुए वह ड्योढ़ी में खड़ा था। उसकी यह शान्त और नम्र मुस्कान देखकर लेविन को लगा कि उसका गला रुंध रहा है।

"लो, मैं तुम्हारे पास आ गया," निकोलाई ने भाई के चेहरे को एकटक देखते हुए घुटी-सी आवाज़ में कहा। "मैं बहुत समय से ऐसा करना चाहता था, मगर मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह रहा था। अब तो मैं बहुत अच्छा हो गया हूं," अपनी बड़ी-बड़ी और दुबली-दुबली हथेलियों से दाढ़ी को साफ़ करते हुए उसने कहा।

"हां, हां!" लेविन ने जवाब दिया। और भाई को चूमते समय जब उसने अपने होंठों से उसके शरीर के खुरदरेपन को अनुभव किया तथा उसकी बड़ी और अजीब ढंग से चमकती आंखों को निकट से देखा, तो उसे और भी अधिक भय की अनुभूति हुई।

लेविन ने कुछ हफ़्ते पहले भाई को लिखा था कि उनके घर में सम्पत्ति का जो अविभाजित भाग रह गया था, उसे बेच देने के फलस्वरूप अब निकोलाई कोई दो हज़ार रूबल पा सकता है।

निकोलाई ने कहा कि अब वह यह रक़म लेने और मुख्यतः तो अपने घोंसले में कुछ समय बिताने और अपनी धरती को छूने के लिये, ताकि पुराने ज़माने के सूरमाओं की तरह निकट भविष्य में किये जाने-वाले अपने कार्यकलापों के लिये शक्ति बटोर सके, यहां आया है। भाई की पीठ के और झुक जाने तथा उसके लम्बे क़द को ध्यान में रखते हुए अत्यधिक दुबलेपन के बावजूद उसकी गतिविधियों में सदा की सी चुस्ती और फुर्तीलापन था। लेविन उसे अपने अध्ययन-कक्ष में ले गया।

भाई ने बड़ी सावधानी से कपड़े बदले, जैसा कि वह पहले नहीं करता था, अपने सीधे, विरले बालों को संवारा और मुस्कराते हुए ऊपर चला गया।

भाई बहुत ही स्नेहपूर्ण और प्रसन्नता की मुद्रा में था, जैसा कि लेविन उसे अक्सर बचपन में देखा करता था। उसने भाई सेर्गेई इवानो-

विच कोज़्निशेव का भी किसी प्रकार की कटुता के बिना उल्लेख किया। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से मुलाक़ात होने पर उसने उसके साथ हंसी-मज़ाक़ किया और पुराने नौकरों के बारे में पूछ-ताछ की। पारफ़ेन देनीसिच की मौत की ख़बर का उसपर बुरा असर पड़ा। उसके चेहरे पर भय झलक उठा, मगर वह जल्द ही सम्भल गया।

"वह तो ख़ासा बूढ़ा हो चुका था," उसने कहा और बातचीत का विषय बदल दिया। "तुम्हारे यहां एक-दो महीने रहने के बाद मास्को चला जाऊंगा। जानते हो, मुझे म्याग्कोव ने नौकरी दिलवाने का वचन दिया है और मैं सरकारी नौकरी करने लगूंगा। अब मैं अपनी ज़िन्दगी बिल्कुल दूसरे ही ढंग से चलाऊंगा," वह कहता गया। "जानते हो, मैंने उस औरत से पिंड छुड़ा लिया।"

"मारीया निकोलायेव्ना से? मगर क्यों, किसलिये?"

"ओह, वह बहुत ही बुरी औरत थी। बहुत-सी परेशानियां पैदा कीं उसने मेरे लिये।" लेकिन ये परेशानियां क्या थीं, उसने यह नहीं बताया। वह यह तो नहीं कह सकता था कि उसने इसलिये मारीया निकोलायेव्ना को भगा दिया था कि चाय हल्की बनाती थी और मुख्यतः इसलिये कि एक रोगी की तरह उसकी देखभाल करती थी। "फिर मैं तो वैसे ही अपनी ज़िन्दगी को बिल्कुल बदल डालना चाहता हूं। ज़ाहिर है कि बाक़ी सभी लोगों की तरह मैंने भी बेवक़ूफ़ियां की हैं, लेकिन सम्पत्ति – यह तो सबसे तुच्छ चीज़ है और मुझे उसके लिये कोई अफ़सोस नहीं। बस, सेहत होनी चाहिये और भगवान की कृपा से मेरी सेहत अच्छी हो गयी है।"

लेविन सुन रहा था और यह सोच रहा था कि क्या कहे, मगर उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। शायद निकोलाई ने भी यह महसूस कर लिया। वह लेविन से उसके काम-काज के बारे में पूछ-ताछ करने लगा। लेविन को अपने बारे में बातचीत करके ख़ुशी हो रही थी, क्योंकि वह ढोंग किये बिना अपनी बात कह सकता था। उसने भाई को अपनी योजनाओं और कार्रवाइयों के बारे में बताया।

निकोलाई सुनता रहा, मगर सम्भवतः उसे इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इन दोनों व्यक्तियों के बीच इतना कुछ एक जैसा और इतनी

निकटता थी कि उनकी मामूली-सी गतिविधि, उनकी आवाज़ का अन्दाज़ ही उन्हें शब्दों की तुलना में कहीं कुछ ज़्यादा बता देता था।

इस समय इन दोनों के दिमाग़ों में एक ही विचार था – निकोलाई की बीमारी और उसकी निकट आती हुई मौत। यही विचार बाक़ी सब कुछ पर हावी था। लेकिन दोनों में से किसी को भी इसकी चर्चा करने की हिम्मत नहीं हो रही थी और इसलिये वे उस विचार को व्यक्त किये बिना, जो उनके दिल-दिमाग़ पर छाया था, जो कुछ भी कह रहे थे, सब झूठ था। लेविन को कभी इस बात की इतनी ख़ुशी नहीं हुई थी कि रात हो गयी थी और सोने का वक़्त हो गया था। कभी किसी अजनबी के साथ, किसी भी औपचारिक भेंट के समय वह इतना अस्वाभाविक और कृत्रिम नहीं रहा था, जितना आज। इस कृत्रिमता की चेतना और इसका पश्चाताप उसे और भी अधिक कृत्रिम बना देता था। उसका मन हो रहा था कि वह मौत के मुंह में जाते हुए अपने प्यारे भाई के लिये आंसू बहाये, मगर उसे इस बातचीत को सुनना और उसमें हिस्सा लेना पड़ रहा था कि वह कैसे अपनी ज़िन्दगी बितायेगा।

घर में चूंकि सीलन थी और केवल एक ही कमरा गर्माया गया था, इसलिये लेविन ने एक परदे के पीछे अपने ही कमरे में भाई के सोने की व्यवस्था की।

भाई बिस्तर पर चला गया और सोया या नहीं, लेकिन रोगी की तरह करवटें बदलता और खांसता रहा तथा जब खांसी का दौरा उसे बेहाल कर देता, तो कुछ बड़बड़ाता। कभी-कभी गहरी सांस लेने पर वह "हे मेरे भगवान" कहता। कभी-कभी जब बलग़म न निकलने से उसका दम घुटने लगता, तो वह झल्लाकर "ओह, शैतान!" कह उठता। लेविन उसे सुनता हुआ देर तक नहीं सो पाया। लेविन के दिमाग़ में तरह-तरह के ख़्याल आ रहे थे, मगर ये सभी ख़्याल एक ही चीज़ यानी मौत पर आकर ख़त्म होते थे।

मौत ही हर चीज़ का अनिवार्य अन्त है, यह बात पहली बार एक अदम्य शक्ति के रूप में उसके सामने आई। और यह मौत, जो ऊंघानींदी में आदत के मुताबिक़ सोचे-विचारे बिना कभी भगवान और कभी शैतान को याद करनेवाले उसके प्यारे भाई के भीतर बैठी

थी, अब उतनी दूर नहीं थी, जितनी उसे पहले प्रतीत होती थी। यह मौत उसके अपने भीतर भी थी – वह ऐसा अनुभव कर रहा था। अगर आज नहीं, तो कल, कल नहीं तो परसों या तीस साल बाद – क्या यह एक ही बात नहीं है? यह अनिवार्य मृत्यु क्या है, उसे न केवल यह मालूम ही नहीं था, न केवल उसने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था, बल्कि न तो ऐसा कर सकता था और न उसे ऐसा करने की जुर्रत ही हो सकती थी।

"मैं काम कर रहा हूं, मैं कुछ करना चाहता हूं, लेकिन मैं यह भूल ही गया कि सब कुछ समाप्त हो जायेगा, कि मौत जैसी कोई चीज़ भी है।"

वह झुका हुआ और घुटनों के गिर्द हाथ बांधे अंधेरे में पलंग पर बैठा था और विचारों के तनाव के कारण सांस रोके सोच रहा था। लेकिन वह अपने दिमाग़ पर जितना अधिक ज़ोर डालता था, उसे उतना ही अधिक यह स्पष्ट होता जाता था कि निस्सन्देह ऐसा ही है, कि वास्तव में उसने जीवन की एक छोटी-सी स्थिति की ओर ध्यान नहीं दिया, उसे भूल गया कि मौत आयेगी और सब कुछ ख़त्म हो जायेगा, कि कुछ भी शुरू करना बेकार था, कि इस मामले में आदमी का कोई बस नहीं चलता। हां, यह भयानक बात है, मगर है ऐसे ही।

"मैं अभी ज़िन्दा हूं। अब क्या किया जाये, क्या किया जाये?" उसने हताशा से कहा। उसने मोमबत्ती जलाई, सावधानी से उठाया और आईने में अपने चेहरे तथा बालों को देखने लगा। हां, कनपटियों पर सफ़ेद बाल थे। उसने मुंह खोला। पीछे के दांत ख़राब होने लगे थे। उसने उभरी मांस-पेशियोंवाले हाथों को उघाड़ा। हां, बहुत ताक़त थी। किन्तु निकोलाई का भी, जो अब बचे-बचाये फेफड़ों से सांस ले रहा है, बहुत स्वस्थ शरीर था। अचानक उसे यह याद हो आया कि बचपन में कैसे वे एकसाथ बिस्तर पर सोने जाते थे, कि कैसे फ़्योदोर बोग्दानिच के दरवाज़े से बाहर जाने का इन्तज़ार करते थे और कैसे इसके फ़ौरन बाद एक दूसरे पर तकिये फेंकते हुए ठहाके मारकर हंसने लगते थे, अदम्य रूप से ऐसे ठठाकर हंसते थे कि फ़्योदोर बोग्दानिच का डर भी उनके जीवन के सुख की लबालब भरी और उफनती चेतना

को नहीं रोक पाता था। "और अब यह टेढ़ी हुई खोखली छाती... और मैं, जो यह नहीं जानता कि मेरे साथ क्या और क्यों होगा..."

"खू! खू! ओह, शैतान! तुम वहां क्या कर रहे हो, सोते क्यों नहीं?" भाई ने कहा।

"मालूम नहीं, नींद नहीं आ रही।"

"और मुझे अच्छी नींद आई, मुझे तो अब पसीना भी नहीं आ रहा। देखो, मेरी क़मीज़ छूकर देखो। नहीं है न पसीना?"

लेविन ने क़मीज़ छूकर देखी, परदे के पीछे लौटा, मोमबत्ती बुझा दी, मगर फिर भी देर तक नहीं सो पाया। उसे केवल थोड़ी ही देर पहले कुछ हद तक यह स्पष्ट हुआ था कि कैसे जीना चाहिये और एक नयी – मौत की समस्या सामने आ गयी, जिसका समाधान नहीं था।

"हां, वह मरनेवाला है, हां, वह वसन्त तक मर जायेगा। उसकी कैसे मदद करूं? क्या कह सकता हूं मैं उसे? क्या जानता हूं मैं इसके बारे में? मैं तो यह भूल ही गया था कि ऐसी भी कोई चीज़ है।"

(३२)

लेविन ने बहुत पहले से ही इस बात की तरफ़ ध्यान दिया था कि जो लोग ज़रूरत से ज़्यादा नम्रता और विनयशीलता के कारण मुसीबत होते हैं, वही बहुत जल्द अपनी अत्यधिक अनुचित आग्रहशीलता और छिद्रान्वेषण के कारण असह्य हो जाते हैं। वह अनुभव कर रहा था कि भाइ के साथ भी ऐसा ही होगा। सचमुच भाई की नम्रता कुछ ही समय तक रही। अगली सुबह से वह चिड़चिड़ा हो गया और लेविन के सबसे अधिक दुखते घावों पर नमक छिड़कने लगा।

लेविन अपने को दोषी अनुभव करता था, मगर स्थिति को सम्भाल नहीं सकता था। वह महसूस करता था कि अगर वे दोनों ढोंग न करें और जिसे ईमानदारी से बात करना कहते हैं, अगर वैसे बात करें यानी वही कहें, जो सोचते और अनुभव करते हैं, तो वे एक-दूसरे से नज़रें मिला सकते हैं। तब कोन्स्तान्तीन सिर्फ़ यही कहता: "तुम मरनेवाले हो, तुम मरनेवाले हो, तुम मरनेवाले हो!" और

निकोलाई ने सिर्फ़ यही जवाब दिया होता: "जानता हूं कि मरनेवाला हूं, लेकिन डरता हूं, डरता हूं!" अगर वे ईमानदारी से बात करते, तो इसके सिवा और कुछ न कहते। लेकिन ऐसे तो जीना मुमकिन नहीं और इसलिये कोन्स्तान्तीन ने वह करने की कोशिश की, जिसके लिये वह जीवन भर प्रयत्नशील रहा था और नहीं कर पाया था तथा जो, जैसा कि उसने देखा था, बहुत-से लोग बड़ी अच्छी तरह से कर पाते थे और जिसके बिना जीना असम्भव था – मतलब यह कि उसने वह न कहने की कोशिश की, जो सोचता था और उसे लगातार ऐसा अनुभव होता था कि यह बनावटी लगता है, कि भाई इस बनावट को अच्छी तरह पहचान रहा है और इस कारण खीझ रहा है।

तीसरे दिन निकोलाई ने लेविन को फिर से अपनी योजना बताने को कहा और न केवल उसकी आलोचना करने, बल्कि जान-बूझकर उसे कम्युनिज़्म से गड़बड़ाने लगा।

"तुमने केवल पराया विचार ले लिया है, लेकिन उसे बिगाड़ दिया है और तुम उसे वहां लागू करना चाहते हो, जहां वह लागू नहीं होता।"

"लेकिन मैं तुमसे कह रहा हूं कि इनमें कुछ भी तो समान नहीं है। वे निजी सम्पत्ति, पूंजी और उत्तराधिकार की न्यायशीलता से इन्कार करते हैं, मगर मैं इस मुख्य स्टिमुलस से इन्कार नहीं करता हूं (लेविन को यह अच्छा नहीं लगता था कि वह ऐसे शब्दों का उपयोग करता था, किन्तु जब से वह अपने काम में गहरी रुचि लेने लगा था, अनजाने ही अधिकाधिक ग़ैररूसी शब्दों का इस्तेमाल करता था), केवल श्रम को नियमित करना चाहता हूं।"

"यही, यही तो बात है। तुमने पराया विचार ले लिया, उससे वह सब काट डाला, जो उसकी जान है और अब यक़ीन दिलाना चाहते हो कि यह कुछ नया है," निकोलाई ने ग़ुस्से से टाई-बंधी अपनी गर्दन को झटकते हुए कहा।

"लेकिन मेरे विचार और उसके बीच कुछ भी सामान्य नहीं है..."

"उसमें," ग़ुस्से से आंखें चमकाते और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए निकोलाई कह रहा था, "उसमें कम से कम, कैसे कहा जाये, ज्यामितिक सुन्दरता – स्पष्टता और सन्देहहीनता का सौन्दर्य है। सम्भव

है कि वह कपोल-कल्पना हो। लेकिन चलो, मान लें कि सारे अतीत को tabula rasa* कर दिया जाता है – सम्पति नहीं, परिवार नहीं और श्रम व्यवस्थित हो जाता है। लेकिन तुम्हारे यहां तो कुछ भी नहीं ..."

"तुम दोनों चीज़ों को गड़बड़ा क्यों रहे हो? मैं कभी कम्युनिस्ट नहीं था।"

"और मैं था तथा यह समझता हूं कि अभी उसका वक़्त नहीं आया, लेकिन उसमें सूझ-बूझ है और उसका वैसे ही भविष्य है, जैसे पहली शताब्दियों में ईसाई धर्म का था।"

"मैं केवल इतना ही मानता हूं कि श्रम-शक्ति को प्राकृतिक विज्ञान की दृष्टि से जांचना-परखना चाहिये, यानी उसके लक्षणों का अध्ययन और निरूपण करना चाहिये तथा ..."

"ऐसा करना तो बिल्कुल बेकार है। यह श्रम-शक्ति अपने विकास की अवस्था के अनुसार अपनी गतिविधि का कोई निश्चित रूप ढूंढ़ लेती है। सभी जगह दास थे, उसके बाद metayers**, और हमारे यहां भी बटाई की व्यवस्था है, पट्टेदारी है, खेत-मज़दूर हैं – तुम और क्या खोज रहे हो?"

इन शब्दों को सुनकर लेविन अचानक गर्म हो उठा, क्योंकि अपने दिल की गहराई में उसे लग रहा था कि यह सच है – यह सच है कि वह कम्युनिज़्म और सुनिश्चित रूपों के बीच सन्तुलन पैदा करना चाहता था और ऐसा करना शायद ही सम्भव था।

"मैं अपने और मज़दूर के लिये उत्पादक ढंग से काम करने के साधन ढूंढ़ रहा हूं। मैं सुव्यवस्था करना चाहता हूं ..." उसने गर्म होते हुए जवाब दिया।

"कोई सुव्यवस्था नहीं करना चाहते तुम। जैसे तुम जीवन भर करते रहे हो, तुम अब भी मौलिकता चाहते हो, यह दिखाना चाहते हो कि तुम किसानों का योंही शोषण नहीं कर रहे हो, बल्कि यह कि तुम्हारे पास विचार भी हैं।"

"तुम ऐसा सोचते हो – तो मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो!" लेविन

---

* साफ़ तख़्ता यानी अतीत को मिटा डालना। (लैटिन)

** पट्टेदार। (अंग्रेज़ी)

ने यह महसूस करते हुए कि उसके बायें गाल की मांस-पेशी लगातार फड़क रही है, कहा।

"तुम्हारी कोई आस्था नहीं थी और नहीं है, बल्कि तुम केवल अपने अहं को तृप्त करना चाहते हो।"

"अच्छी बात है और तुम मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।"

"छोड़ देता हूं! पहले से ही मुझे ऐसा कर देना चाहिये था। जाओ तुम भाड़ में! बहुत पछता रहा हूं कि मैं यहां आया!"

बाद में लेविन ने अपने भाई को शान्त करने की चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न की, निकोलाई ने कुछ भी सुनना नहीं चाहा, यही कहता रहा कि उसे चले जाना चाहिये। कोन्स्तान्तीन ने अनुभव किया कि भाई के लिये ज़िन्दगी बोझ बन गयी है।

निकोलाई ने जाने की जब पूरी तैयारी कर ली, तो कोन्स्तान्तीन फिर से बनावटी ढंग से अनुरोध करने लगा कि अगर उसने किसी तरह उसके दिल को ठेस पहुंचायी हो, तो वह उसे क्षमा कर दे।

"ओह, अपने दिल का बड़प्पन दिखाना चाहते हो!" निकोलाई ने कहा और मुस्कराया। "अगर तुम अपने को सही साबित करना चाहते हो, तो मैं तुम्हें ऐसा करने की ख़ुशी दे सकता हूं। तुम सही हो, लेकिन मैं तो फिर भी चला ही जाऊंगा!"

रवाना होने के पहले निकोलाई ने उसे चूमा और अजीब गम्भीरता से भाई की ओर देखकर अचानक कहा:

"फिर भी मेरे बारे में बुरा नहीं सोचना, कोस्त्या!" और उसकी आवाज़ कांप गयी।

सिर्फ़ यही शब्द सच्चे दिल कहे गये थे। लेविन समझ गया कि इन शब्दों से उसका यह अभिप्राय था: "तुम देख रहे हो और जानते हो कि मेरी हालत बहुत ख़राब है और सम्भव है कि फिर कभी हमारी मुलाक़ात हो ही न पाये।" लेविन यह समझ गया अरर उसकी आंखें छलछला आईं। उसने फिर से भाई को चूमा, लेकिन कुछ कह नहीं पाया।

भाई के जाने के दो दिन बाद लेविन भी विदेश रवाना हो गया। रेलवे स्टेशन पर कीटी के चचेरे भाई, श्चेर्बात्स्की से लेविन की मुलाक़ात हो गयी और उसने उसे अपनी उदासी से बहुत हैरान किया।

"तुम्हें क्या हुआ है?" श्चेर्बात्स्की ने उससे पूछा।

"कुछ नहीं हुआ, वैसे दुनिया में ख़ुश होने को कुछ ख़ास तो है भी नहीं।"

"कुछ ख़ास है भी नहीं? म्युलुस-व्युलुस जाने के बजाय तुम मेरे साथ पेरिस चलो तो। वहां देखना, कैसा मज़ा रहता है!"

"नहीं, मेरे लिये सब ख़त्म हो चुका है। मेरा मरने का वक़्त आ गया है।"

"यह भी ख़ूब रही!" श्चेर्बात्स्की ने हंसते हुए कहा। "मैंने तो शुरू करने की ही तैयारी की है।"

"हां, कुछ समय पहले तक मैं भी ऐसा ही सोचता था, लेकिन अब यह जानता हूं कि जल्द ही मर जाऊंगा।"

लेविन वही कह रहा था, जो पिछले कुछ समय से वास्तव में सोच रहा था। उसे हर चीज़ में केवल मौत दिखती थी या यही लगता था कि वह उसके निकट पहुंच रहा है। लेकिन उसने जो योजना बनायी थी, वह उसे अधिकाधिक अपनी ओर खींच रही थी। मौत आने तक उसे किसी तरह तो ज़िन्दगी काटनी थी। उसके लिये हर चीज़ पर अन्धेरा छा गया था, लेकिन इसी अन्धेरे के फलस्वरूप वह यह महसूस करता था कि इस अन्धेरे में उसे राह दिखानेवाली चीज़ सिर्फ़ उसका काम है और इसलिये अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरकर उसने इसी का दामन थाम लिया था और इसके साथ चिपका हुआ था।